कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची | 26 अक्टूबर, 2025, रविवार, वर्ष 11, अंक 08, कार्तिक, शुक्ल पक्ष, पंचमी, संवत 2082, पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

FLORENCE
GROUP OF INSTITUTIONS
(A Unit of : Haji Abdur Razzaque Educational Society)
ADMISSION OPEN

COLLEGE OF NURSING
2 YEARS M.Sc. Nursing
2 YEARS Post Basic B. Sc. Nursing
4 YEARS B.Sc. Nursing
3 YEARS GNM (General Nursing And Midwifery)
2 YEARS ANM (Auxiliary Nurshing And Midwifery)

COLLEGE OF PARA MEDICAL SCIENCE
4 YEARS BMLT
2 YEARS DMLT
2 YEARS OT ASSISTANT
2 YEARS ECG
2 YEARS OPHTHALMIC ASST.
2 YEARS CRITICAL CARE (ICU)
2 YEARS RADIO-IMAGING
2 YEARS ANESTHESIA TECH.
1 YEARS DRESSERS

COLLEGE OF PHARMACY
2 YEARS D-PHARM
4 YEARS B-PHARM

Separate Hostel For Boys & Girls
9031231082, 7903999411, 6205145470
E-mail: fsnirba@gmail.com
Website: www.florenceinstirba.com

नहाय-खाय के साथ छठ महापर्व शुरू

■ व्रतियों ने पूजा-अर्चना कर कद्दू-भात खाकर शुरू किया उपवास

■ खरना आज, शाम को खीर और रोटी का प्रसाद ग्रहण करेंगे व्रती

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। लोक आस्था का महापर्व छठ नहाय-खाय के साथ शनिवार को शुरू हो गया। व्रती 27 अक्टूबर की शाम को डूबते सूर्य को और 28 अक्टूबर की सुबह उगते सूर्य को साफ-सुथरे और सुरक्षित घाटों पर अर्घ्य अर्पित करेंगे। उसके साथ ही चार दिवसीय इस महापर्व का समापन होगा। बिहार और पूर्वी उत्तरप्रदेश से शुरू होकर पूरी दुनिया में नेम-निष्ठा के साथ मनाये जानेवाले इस लोकपर्व को 'महापर्व' की संज्ञा भी दी गयी है। इसे सनातन धर्म का सबसे कठिन व्रत भी कहा जाता है। झारखंड समेत पूरी दुनिया में इस व्रत की तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। झारखंड की राजधानी रांची में छठ घाटों के साथ 155 छठ पूजा समितियां भी तैयार हैं। इसके अलावा हजारों घरों, सोसाइटी और अन्य स्थानों पर बनाये गये कृत्रिम तालाब भी छठ व्रतियों की अगवानी के लिए तैयार हैं।

नहाय-खाय है वृत का पहला दिन : चार दिवसीय छठ के पहले दिन नहाय खाय होता है। व्रतियों ने स्नान कर पूजा की और फिर लकड़ी के चूल्हे पर बना अरवा चावल का भात, चने की दाल और कद्दू (लौकी) की सब्जी खाकर व्रत की शुरुआत की।

खरना रविवार को : रविवार को खरना है। दिन भर के उपवास के बाद अंधेरा होने पर व्रती खीर और गेहूं के आटे की रोटी का प्रसाद ग्रहण करेंगे।

सोमवार को पहला अर्घ्य, मंगलवार को पारण : छठ महापर्व का पहला अर्घ्य सोमवार को डूबते सूर्य को दिया जायेगा। इसके बाद मंगलवार को उगते सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर व्रत का समापन होगा। इसके बाद व्रती 36 घंटे का उपवास खत्म करेंगे।

छठ सामग्री से भरे बाजार : छठ को लेकर पूजन सामग्री की खरीदारी बड़े पैमाने पर होती है। ऐसे में बाजार सज कर पूरी तरह तैयार हैं। इस पूजा में पवित्रता का पूरा ध्यान रखा जाता है। सूप-दउरा से लेकर फल और दूसरे सामानों की खरीदारी खूब हो रही है। दुकानदारों का कहना है कि इस बार छठ व्रती सामग्री की मांग पहले से अधिक है।

बाजारों से लेकर छठ घाटों पर प्रशासन चौकस : प्रशासन की ओर से भीड़भाड़ वाले इलाकों में यातायात, सफाई और सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो। शहर की गलियों और बाजारों में इस समय छठ महापर्व की आस्था, उत्साह और उल्लास का अनूठा संगम स्पष्ट रूप से झलक रहा है। छठ घाटों पर भी सुरक्षा के व्यापक बंदोबस्त किये गये हैं।

आज हल्की बारिश के आसार : इधर मौसम विभाग ने बताया है कि रविवार को झारखंड में कहीं-कहीं मेघ गर्जन और वज्रपात के साथ हल्की बारिश हो सकती है। 27 अक्टूबर को राज्य के दक्षिणी भागों के पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सिमडेगा तथा सरायकेला-खरसावां जिले में कहीं-कहीं मेघ गर्जन के साथ हल्की वर्षा की संभावना है।

छठ पूजा जीवन में शुद्धता, श्रद्धा, संयम, समर्पण और संकल्प का अद्भुत संदेश देता है : हेमंत

सीएम हेमंत सोरेन ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर लिखा, आज नहाय-खाय के पावन अनुष्ठान के साथ लोक आस्था और सूर्य उपासना के महापर्व छठ पूजा का शुभारंभ हो रहा है। यह महापर्व हमारे जीवन में शुद्धता, श्रद्धा, संयम, समर्पण, संकल्प, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक एकता का अद्भुत संदेश देता है। छठी मइया एवं भगवान भास्कर से यही प्रार्थना है कि सभी व्रतियों और परिवारजनों को उत्तम स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि का आशीर्वाद दें। यह पर्व हमारे राज्य और देश में खुशहाली, सद्भाव और नयी ऊर्जा का संचार करे। जय छठी मइया!! जय भगवान भास्कर!!

छठी मइया सबको दें भरपूर आशीर्वाद: मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को देशवासियों को छठ महापर्व की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह पर्व भारतीय संस्कृति में आस्था, उपासना और प्रकृति प्रेम का अनूठा संगम है, जिसकी पवित्रता और नियम-निष्ठा अतुलनीय है। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा नहाय-खाय के पावन अनुष्ठान के साथ आज से चार दिवसीय महापर्व छठ का शुभारंभ हो रहा है। बिहार सहित देशभर के श्रद्धालुओं को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। सभी व्रतियों को मेरा नमन और वंदन। उन्होंने कहा कि छठ पूजा सूर्य देवता की उपासना का पर्व है और यह विशेष रूप से बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। पीएम मोदी ने इस अवसर पर प्रसिद्ध लोकगायिका शारदा सिन्हा का एक लोकप्रिय छठ गीत साझा किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि शारदा सिन्हा और बिहार के कई लोक कलाकारों ने अपने गीतों के माध्यम से छठ के उत्सव को और भक्ति से भर दिया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि छठ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज में पारिवारिक और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक है। छठ के घाटों पर जो दृश्य दिखाई देता है, उसमें पारिवारिक और सामाजिक एकता की अद्भुत प्रेरणा होती है। पीएम मोदी ने कहा कि छठ की प्राचीन परंपरा का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव रहा है और आज यह विश्वभर में बसे भारतीयों द्वारा श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। आज छठ को संस्कृति के महाउत्सव के रूप में पूरी दुनिया में मनाया जाता है। अंत में प्रधानमंत्री मोदी ने देशवासियों के लिए मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा मेरी कामना है कि छठी मइया सबको अपना भरपूर आशीर्वाद दें।

चर्चित अभिनेता सतीश शाह का निधन

मुंबई। लोकप्रिय अभिनेता सतीश शाह का निधन हो गया है। शनिवार दोपहर किडनी फेल होने के चलते उन्हें हिंदुजा अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां उन्होंने आखिरी सांस ली। सतीश शाह बीते कुछ समय से मीडिया से दूरी बनाये हुए थे। वह काफी समय से ना तो किसी सार्वजनिक समारोह में नजर आये थे और ना ही किसी फिल्म में। साल 2014 में उनकी आखिरी फिल्म 'हमशक्ल' रिलीज हुई थी। फिल्ममेकर ने इंस्टाग्राम पर निधन की खबर साझा करते हुए लिखा, दुख और सदमे के साथ आपको यह सूचित करना पड़ रहा है कि हमारे प्रिय मित्र और शानदार अभिनेता सतीश शाह का कुछ घंटे पहले किडनी फेल होने के कारण निधन हो गया। उन्हें तुरंत हिंदुजा अस्पताल ले जाया गया था, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली। यह हमारे उद्योग के लिए एक बड़ी क्षति है।

एलआइसी पर अडाणी समूह में 33 हजार करोड़ के निवेश का आरोप

अमेरिकी मीडिया की रिपोर्ट को जीवन बीमा निगम ने गलत बताया

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआइसी) पर अडाणी समूह में 3.9 अरब डॉलर यानी करीब 33 हजार करोड़ रुपये निवेश करने का बड़ा आरोप लगा है। कांग्रेस ने अमेरिकी मीडिया रिपोर्ट के हवाले से कहा कि बीमा कंपनी ने अडाणी ग्रुप को फायदा पहुंचाने के लिए मई 2025 में यह निवेश किया। पार्टी का कहना है कि ग्राहकों की मेहनत की कमाई का गलत इस्तेमाल किया गया। कांग्रेस ने संसद की लोक लेखा समिति से इसकी जांच की मांग की है। वहीं टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने सोशल मीडिया पर 'द वॉशिंगटन पोस्ट' की रिपोर्ट पोस्ट की है, जिसके अनुसार गौतम अडाणी जब इस साल की शुरुआत में भारी कर्ज में डूबे थे और अमेरिका में घूसखोरी के आरोपों का सामना कर रहे थे, तब एलआइसी ने अडाणी समूह में निवेश किया।

कांग्रेस ने भी लगाया आरोप:

इस मामले पर कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि यह घोटाला बहुत बड़ा है। इसमें कई बातें शामिल हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि हवाई अड्डे, बंदरगाह जैसी जरूरी चीजें सिर्फ अडाणी ग्रुप को फायदा पहुंचाने के लिए बेची गयीं। इसमें धांधली हुई। इसके अलावा भारत की कूटनीति का इस्तेमाल करके पड़ोसी देशों में अडाणी को ठेके दिलवाये गये। बकौल रमेश, अडाणी ग्रुप ने शेल कंपनियों के जरिये महंगा कोयला आयात किया। यह मनी लांड्रिंग का नेटवर्क था।

एलआइसी ने रिपोर्ट को गलत बताया

इस बीच भारतीय जीवन बीमा निगम ने 'वॉशिंगटन पोस्ट' की रिपोर्ट को नकार दिया है। कंपनी ने साफ किया है कि उसके सारे निवेश पूरी इमानदारी और सावधानीपूर्वक जांच के साथ ही किये जाते हैं। एलआइसी ने कहा कि रिपोर्ट में बताये गये किसी भी ऐसे दस्तावेज या प्लान को एलआइसी ने कभी तैयार नहीं किया, जो एलआइसी के अडाणी ग्रुप में निवेश की योजना को बताती हो। कंपनी ने कहा कि यह रिपोर्ट एलआइसी की मजबूत और साफ-सुथरी फैसला लेने की प्रक्रिया को नुकसान पहुंचाने, कंपनी की अच्छी छवि को खराब करने और भारत के मजबूत वित्तीय क्षेत्र की बुनियाद को खराब करने के मकसद से जारी की गयी है।

आजाद सिपाही
रांची, रविवार, 26 अक्टूबर, 2025
www.azadsipahi.in

महागठबंधन के डिप्टी सीएम फेस को लेकर उठने लगा सवाल

ढाई प्रतिशत वाले को डिप्टी सीएम, 18 प्रतिशत वाले को आश्वासन

कह रहा मुस्लिम समाजः क्या हमारी भूमिका सिर्फ वोट देने तक सीमित रह गयी है। क्या हिस्सेदारी सिर्फ कागजों पर रहेगी या असली हिस्सेदारी भी मिलेगी

बिहार की राजनीति में जातिगत समीकरण हमेशा से ही चुनावी रणनीति का केंद्र रहा है और 2025 विधानसभा चुनावों के संदर्भ में महागठबंधन (राजद, कांग्रेस और वाम दलों का गठबंधन) का हालिया फैसला इसी की मिसाल है। महागठबंधन ने हाल ही में तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित किया है, जबकि विकासशील इंसान पार्टी (वीआइपी) के मुकेश सहनी को डिप्टी सीएम का चेहरा बनाया गया है। यह घोषणा 23 अक्टूबर को पटना में कांग्रेस नेता अशोक गहलोत की मौजूदगी में हुई, लेकिन इस फैसले ने बिहार की 17-18% मुस्लिम आबादी को नजरअंदाज और नाराज कर दिया है। कहा जा रहा है कि जब ढाई फीसदी आबादी वाले को मंच से डिप्टी सीएम का चेहरा घोषित किया जा सकता है, तो 18 फीसदी वाले तबके को पीछे क्यों रखा जा रहा है। सवाल तो वाजिब है कि इतने बड़े वोट बैंक को डिप्टी सीएम का वादा क्यों नहीं किया गया। इसके जवाब में राजनीति के जानकार तीन बड़ी दलीलें दे रहे हैं। इनमें पहला है कि जब वोट मिल रहा है, तो फिर मुसलमानों की चिंता क्यों की जाये। दूसरी दलील मुस्लिम समुदाय से किसे चेहरा बनाया जाये, यह दुविधा है और तीसरी दलील है कि महागठबंधन को 'मुस्लिम-तुष्टिकरण' का आरोप लगने का डर है, यनी ध्रुवीकरण के खतरे का डर। दूसरे शब्दों में कहें, तो 18 फीसदी को सत्ता में भागीदारी देने के एवज में 82 फीसदी के बिखर जाने के खतरे का डर। महागठबंधन का फैसला मुस्लिमों में असंतोष पैदा कर चुका है। एआइएमआइएम के नेता इसे 'वोट बैंक' मानने का आरोप लगा रहे हैं। सोशल मीडिया पर ट्रेंड चल रहे हैं। अगर महागठबंधन ने दो डिप्टी सीएम का एलान किया होता (जैसे राजस्थान मॉडल), तो एक मुस्लिम को शामिल कर संतुलन बनाया जा सकता था, लेकिन अभी यह चूक लग रही है, जो सीमांचल और मगध जैसे मुस्लिम-बहुल इलाकों में वोट खिसकाव का कारण बन सकती है। वास्तव में यह फैसला जातिगत गणित की मजबूरी और सांप्रदायिक जोखिम से उपजा है, न कि मुस्लिमों की उपेक्षा से। लेकिन राजनीति में वोट बैंक को नजरअंदाज करना महंगा पड़ सकता है। 2020 में भी ऐसा ही हुआ था। क्या है महागठबंधन की अंदरूनी रणनीति और मुस्लिमों के प्रति उसका नजरिया, बता रहे हैं आजाद सिपाही के संपादक राकेश सिंह।

राकेश सिंह
संपादक

किसी मुस्लिम चेहरे को आगे क्यों नहीं किया महागठबंधन ने

बिहार में महागठबंधन ने तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री और मुकेश सहनी को उप मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित तो कर दिया है, लेकिन इसके साथ ही बिहार ही नहीं देश में भी एक नयी बहस छिड़ गयी है। महागठबंधन को लेकर सवाल उठाये जा रहे हैं कि राज्य में किसी मुस्लिम चेहरे को आगे क्यों नहीं किया गया। महागठबंधन ने राज्य की आबादी में करीब 14 फीसदी हिस्सेदारी वाली बिरादरी के तेजस्वी यादव को सीएम फेस, 22 उपजातियों को मिला कर 2.6 फीसदी हिस्सेदारी वाले मुकेश सहनी को डिप्टी सीएम का उम्मीदवार तो बनाया, लेकिन 17.78 फीसदी की हिस्सेदारी वाली मुस्लिम आबादी से डिप्टी सीएम का नाम क्यों नहीं। इस मुद्दे को जब एआइएमआइएम ने उठाया, तो महागठबंधन ने चुनाव बाद दलित-मुसलमान को डिप्टी सीएम बनाने के प्रस्ताव पर विचार करने का आश्वासन दिया। लेकिन नाम की घोषणा नहीं हुई। अब यहां मुस्लिम बिरादरी में चर्चा का विषय यह है कि 17.78 प्रतिशत हमारी आबादी है, तो हमारे लिए डिप्टी सीएम का चेहरा क्यों नहीं? क्या हमारी भूमिका सिर्फ वोट देने तक सीमित रह गयी है? क्या हिस्सेदारी सिर्फ कागजों पर रहेगी या असली हिस्सेदारी भी मिलेगी। सवाल तो भागीदारी और हिस्सेदारी की है। 'जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी' वाला फार्मूला कहां गया। मुसलमान बिरादरी का तर्क है कि जब वह दशकों से भाजपा विरोधी पार्टियों को वोट देता आ रहा है, तो महागठबंधन की ओर कोई मुसलमान मुख्यमंत्री ना सही, कम से कम डिप्टी सीएम का चेहरा क्यों नहीं घोषित हुआ। अब महागठबंधन द्वारा दो प्रमुख पदों की घोषणा करने के बाद देश भर में अपनी हिस्सेदारी को लेकर मुस्लिम बिरादरी आक्रोशित भी है। महागठबंधन के इस फैसले ने उसकी दुखती रग पर हाथ रख दिया गया है। वैसे बिहार में आखिरी मुस्लिम मुख्यमंत्री अब्दुल गफूर हुए थे। जिन्होंने 2 जुलाई 1973 से 11 अप्रैल 1975 तक बिहार के 13वें मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया था।

हेलीकॉप्टर में बैठना और डिप्टी सीएम की कुर्सी पर बैठने में फर्क होता है

हालांकि पिछले दिन तेजस्वी यादव ने एक तस्वीर शेयर करके मुस्लिम मतदाताओं को संदेश देने की कोशिश की। इस तस्वीर में तेजस्वी यादव के साथ हेलीकॉप्टर में मुकेश सहनी और राजद एमएलसी कारी सोहैब मौजूद थे। लेकिन हेलीकॉप्टर में बैठना और डिप्टी सीएम की कुर्सी पर बैठने में फर्क होता है। बात एनडीए की तो समझ में आती है। भाजपा को मुसलमानों का वोट नहीं मिलता। नीतीश को थोड़ा बहुत मिल भी जाता है। लेकिन राजद, कांग्रेस को तो मुसलमान दिल खोल कर

वोट देते हैं, चाहे प्रत्याशी कोई भी हो। फिर भी महागठबंधन द्वारा मुसलमान बिरादरी से डिप्टी सीएम फेस का न होना सवाल तो खड़े करता है। सिर्फ यह कह देना कि सरकार बनेगी, तो पिछड़ा वर्ग या अल्पसंख्यक वर्ग से एक और डिप्टी सीएम बनेगा, उससे तो बात नहीं बनेगी। यह चर्चा मुस्लिम बिरादरी में है। लेकिन उनके पास चारा भी क्या है। ऐसा महागठबंधन भी सोचता होगा। मुसलमान भाजपा को थोड़े वोट करने जायेगा। वह तो राजद या कांग्रेस या उसके सहयोगी दलों को भी वोट करेगा। वैसे महागठबंधन पर इसका असर नहीं के बराबर पड़ेगा, क्योंकि उसका वोट बैंक फिक्स है। मुस्लिम बिरादरी उनका वोट बैंक मात्र ही है।

महागठबंधन के लिए मुस्लिम बिरादरी बंधुआ वोट बैंक बनकर रह गया : चिराग पासवान

चिराग ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 2005 में मेरे नेता और पिता स्वर्गीय रामविलास पासवान ने 'मुस्लिम मुख्यमंत्री' बनाने के लिए अपनी पार्टी तक कुर्बान कर दी थी। तब भी आपने उनका साथ नहीं दिया। राजद 2005 में भी मुस्लिम मुख्यमंत्री के लिए तैयार नहीं था, आज 2025 में भी न मुस्लिम मुख्यमंत्री देने को तैयार है, न उपमुख्यमंत्री। अगर आप बंधुआ वोट बैंक बनकर रहेंगे, तो सम्मान और भागीदारी कैसे मिलेगी?

एआइएमआइएम ने उठाये तेजस्वी पर सवाल

महागठबंधन की तरफ से तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री और मुकेश सहनी को उप मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाये जाने पर यूपी के एआइएमआइएम के प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली ने भी निशाना साधा है। उन्होंने एक्स पोस्ट में लिखा, बिहार इलेक्शन तक के लिए अब्दुल को तेजस्वी ने बड़ा सम्मान दिया। उड़न खटोला में बैठाया, पर डिप्टी मुख्यमंत्री तो नहीं देंगे। शौकत अली ने इससे पहले भी मुस्लिम चेहरे को सामने नहीं करने पर सवाल उठाये। उन्होंने गुरुवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 2 प्रतिशत वाला उपमुख्यमंत्री, 13 प्रतिशत वाला मुख्यमंत्री और 18 प्रतिशत वाला दरी बिछावन मंत्री। उन्होंने आगे कहा कि अगर हम लोग कुछ बोलेंगे, तो हमें भाजपा का भय दिखाया जायेगा। शौकत अली के बयान पर कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने पलटवार करते हुए कहा कि मैं उनके बारे में क्या कहूं। यह उनकी सोच है। उनकी इसी सोच की वजह से वो 18 के 18 रह जायेंगे।

महागठबंधन ने भी टिकट देने में कंजूसी दिखायी

भाजपा-मोदी हराओ के नाम पर एकजुट होने वाले बिहार के मुसलमान इस चुनाव में हाशिये पर हैं। एनडीए ने इस बिरादरी पर भरोसा करने में झिझक तो दिखायी ही, विपक्षी महागठबंधन ने भी टिकट देने में कंजूसी दिखायी। नतीजा यह हुआ कि इस चुनाव में दोनों गठबंधनों की ओर से इस बिरादरी के उतारे गये उम्मीदवारों की संख्या 35 ही है, जो बीते चुनाव की तुलना में 18 कम है। बीते चुनाव में विपक्षी महागठबंधन ने 33 मुस्लिम उम्मीदवार उतारे थे। इस बार यह संख्या 30 (राजद 18, कांग्रेस 10 और भाकपा माले दो) है। पिछले चुनाव के मुकाबले कांग्रेस ने दो और माले ने एक उम्मीदवार कम उतारा है। तब एनडीए ने 20 मुस्लिम उम्मीदवार उतारे थे। इस बार यह संख्या महज पांच है। जदयू ने चार और लोजपा (आर) ने एक मुस्लिम उम्मीदवार उतारे हैं। तब एनडीए में रही वीआइपी ने दो मुस्लिमों को टिकट दिया था। इस बार वह महागठबंधन में शामिल है, लेकिन इस बार पार्टी में बिरादरी का प्रतिनिधित्व भाजपा, माकपा, भाकपा की तरह शून्य है।

एकतरफा ध्रुवीकरण बना कारण

एनडीए ने विपक्ष के प्रति एकतरफा ध्रुवीकरण के कारण इस बिरादरी से दूरी बनायी। बीते चुनाव में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) के मुद्दा बनने के कारण एनडीए का एक भी मुस्लिम उम्मीदवार चुनाव नहीं जीत पाया। इस बार मुस्लिम आबादी एसआइआर और वक्फ अधिनियम में संशोधन के कारण नाराज है। लोजपा, जदयू को आशंका थी कि इसके कारण इस बिरादरी के उनके उम्मीदवार चुनाव नहीं जीत सकेंगे, इसलिए दोनों दलों ने प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व ही दिया।

लगातार घटा प्रतिनिधित्व

बिहार की सत्ता से राजद की विदाई के साथ ही विधानसभा में मुसलमानों के प्रतिनिधित्व में कमी आयी। 2000 में इस बिरादरी के 24 विधायक थे। अक्तूबर-नवंबर 2005 में हुए चुनाव में यह संख्या घट कर 16 रह गयी। साल 2010 में 19 मुसलमान विधायक थे। 2015 के चुनाव में जदयू-राजद के साथ आने से स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ और यह संख्या 24 पर पहुंची, मगर बीते चुनाव में फिर लुढ़क कर 19 पर आ गयी।

महागठबंधन को सता रहा ओवैसी का डर

बीते चुनाव में विपक्षी महागठबंधन खास कर राजद को मुस्लिम बाहुल्य सीमांचल में असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआइएमआइएम ने बड़ा झटका देते हुए 5 सीटें जीत ली थी। इस बार ओवैसी ने 23 मुस्लिम उम्मीदवार खड़े किये हैं। इसके अलावा चूंकि मुस्लिम आबादी के भाजपा के विरोध में गोलबंद होने का सीधा लाभ विपक्ष को मिलता है, ऐसे में विपक्षी महागठबंधन ने भी टिकट में कटौती की।

मुसलमान बिरादरी को अब लालटेन का किरासन तेल नहीं बनना है : प्रशांत किशोर

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव का प्रचार अभियान तेज हो गया है। अमित शाह, नीतीश कुमार, तेजस्वी यादव, प्रशांत किशोर समेत सभी दलों के नेता वोटरों के बीच पसीना बहा रहे हैं। प्रशांत किशोर ने मुस्लिम वोटरों का मत हासिल करने के लिए लालू-मोदी कार्ड खेला है। कहा है कि नरेंद्र मोदी के डर से मुसलमान लालू यादव के लालटेन का किरासन तेल नहीं बनें। शनिवार को प्रशांत किशोर जन सुराज के उम्मीदवारों के प्रचार में पूर्वी चंपारण गये थे। इसी दौरान पीके ने कहा कि मोदी जी के डर से मुसलमान भाई लालू यादव को वोट दे देते हैं। लेकिन उन्हें अब लालू के लालटेन का किरासन तेल नहीं बनना है।

उनके पास जन सुराज का विकल्प मौजूद है। 30-35 साल से वोटर बंधुआ बन गये हैं। लालू के डर से मोदी, नीतीश को और मोदी के डर से लालू यादव को वोट दे देते हैं। एक बार गलत आदमी जीत गया तो कभी जीवन में भला नहीं होगा।

तेजस्वी पर पप्पू यादव ने कस दिया तंज

पटना (आजाद सिपाही)। पप्पू यादव ने कहा कि मैं बिहार का बेटा हूं, सेवक हूं और बेटा और सेवक ही रहूंगा। मुझे नायक बनने की कोई इच्छा नहीं है। पप्पू यादव का यह बयान शनिवार को पटना में राजद कार्यालय के बाहर लगे एक पोस्टर के जवाब में आया है, जिसमें तेजस्वी यादव की तस्वीर के साथ 'बिहार का नायक' लिखा था।

मैं एक लेकिन सम्राट चौधरी की टीम में चार नचनिया : खेसारी

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश की सियासत में जुबानी जंग तेज हो गयी है। अब भोजपुरी एक्टर-सिंगर और छपरा सीट से राष्ट्रीय जनता दल के प्रत्याशी खेसारी लाल यादव ने उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के बयान पर पलटवार किया है। दरअसल, सम्राट चौधरी ने खेसारी लाल यादव को 'नाचने वाला' कहकर तंज कसा था। सम्राट चौधरी के उसी नचनियां वाले बयान पर खेसारी लाल यादव ने कहा कि 'पहले सम्राट चौधरी अपने घर में झांककर देखें और बतायें कि उन्होंने अपनी पार्टी में चार नचनियां को टिकट क्यों दिया है?' खेसारी लाल यादव ने कहा, 'सम्राट भैया मेरे बड़े भाई जैसे हैं, मुझे उनका आशीर्वाद चाहिए। उनका जो संस्कार है, उस हिसाब से वह मुझे बोल रहे हैं। लेकिन मेरी परवरिश और संस्कार ऐसे नहीं हैं

कि मैं उनके बारे में कुछ गलत कहूं।' खेसारी लाल यादव ने बिहार के विकास को अपनी प्राथमिकता बताते हुए कहा कि प्रदेश के किसी भी क्षेत्र में अब तक वास्तविक विकास नहीं हुआ है, इसलिए सब कुछ शुरूआत से करना होगा।

तेजस्वी यादव जननायक नहीं, वह पिता के बल पर

मर जाऊंगा, लेकिन राजद में वापस नहीं जाऊंगा : तेजप्रताप

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना। तेजप्रताप यादव ने एक बार फिर भाई तेजस्वी यादव पर बड़ा हमला बोला है। पटना में उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए कहा, 'जननायक कर्पूरी जी हैं। लोहिया जी हैं। तेजस्वी जी जननायक नहीं हैं। वो हमारे पिता के बूते हैं। जब वो अपने बूते आयेंगे तब हम उन्हें जननायक कहेंगे।' तेजप्रताप ने आगे कहा, 'हम लगातार महुआ का दौरा कर रहे हैं। जबरदस्त रिस्पॉन्स मिल रहा है। वहां इंजीनियरिंग कॉलेज बनायेंगे। महुआ में क्रिकेट स्टेडियम बनवायेंगे और इंडिया पाकिस्तान का मैच करवायेंगे।'

मुझे नहीं पता लालटेन का अंत होगा की नहीं : नरेंद्र मोदी की सभा में मोबाइल की रोशनी जलाकर लालटेन युग पर सवाल पूछने पर उन्होंने कहा, एलइडी लाइट तो हमारी गाड़ी में भी लगी

है। हम लालटेन में हैं नहीं। लालटेन युग का अंत होगा या नहीं, इस सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि किसका क्या अंत होगा वो तो वही लोग बतायेंगे। मैं राजद में नहीं हूं तो मैं कैसे बताऊं कि किसका अंत होगा। मैं उस पार्टी में नहीं हूं। ना कभी जाऊंगा। इससे पहले एक चैनल को दिये इंटरव्यू में उन्होंने कहा था। 'मैं आरजेडी में वापस लौटने से बेहतर मौत पसंद करूंगा। मैं सत्ता का भूखा नहीं हूं।

मेरे लिए सिद्धांत और आत्मसम्मान सबसे महत्वपूर्ण हैं। मैं लोगों के लिए काम करता हूं और लोग मुझसे प्यार करते हैं, मुझ पर भरोसा करते हैं। मैं विधायक का चुनाव लड़ रहा हूं। मेरी अपनी पार्टी है। मेरा पूरा फोकस जनता पर है। अपनी पार्टी के उम्मीदवारों को जिताने पर है।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	31.0 °C	20.4 °C
सूर्यास्त (आज)	:	17.15 बजे
सूर्योदय (कल)	:	05.50 बजे

आजाद सिपाही
रांची, रविवार, 26 अक्टूबर, 2025
www.azadsipahi.in

विकास, विश्वास और बदलाव का संकल्प ले रहा है घाटशिला : बाबूलाल मरांडी

■ भाजपा ने ही आदिवासियों और झारखंडवासियों को मान-सम्मान दिया

■ छठ में भी घाटशिला में जमे हैं बीजेपी के स्टार प्रचारक, बाबूलाल सोरेन के लिए मांग रहे वोट

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। घाटशिला के दामपाड़ा में शनिवार को बूथ स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजित किया गया। जिसमें 36 बूथों के कार्यकर्ता उपस्थित थे। जिसमें मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशध्यक्ष बाबूलाल मरांडी , पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन, पार्टी के प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन, पूर्व प्रदेशध्यक्ष दिनेशानंद गोस्वामी उपस्थित थे।

बाबूलाल मरांडी ने कार्यकर्ताओं से बाबूलाल सोरेन की जीत के पूरी ताकत लगाने की अपील की। उन्होंने कहा कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह दिख रहा है। यह एनडीए की जीत के प्रति अटूट विश्वास को दिखा रहा है। घाटशिला आज एक स्वर में विकास, विश्वास और बदलाव का संकल्प ले रहा है। उन्होंने कहा कि झारखंड और देश के भविष्य की चिंता सिर्फ बीजेपी कर रही है। बीजेपी ने ही आदिवासियों और झारखंडवासियों को मान-सम्मान दिया। बीजेपी के शासन में आदिवासियों का जितना विकास हुआ उतना किसी दूसरी सरकार के शासनकाल में नहीं हुआ। बाबूलाल मरांडी ने झामुमो सरकार पर तीखा प्रहार करते हुए कहा आज झारखंड भ्रष्टाचार, अपराध और लूट की राजधानी बन चुका है। सरकार जनता की नहीं, माफिया और दलालों की है। अब समय आ गया है कि झारखंड की जनता इस सरकार को जवाब दे। उन्होंने कहा कि झारखंड राज्य का निर्माण भारतीय जनता पार्टी की देन है। अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में ही 15 नवंबर 2000 को अलग झारखंड राज्य बना था। भाजपा ने न सिर्फ झारखंड बनाया, बल्कि संथाली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिया, आदिवासी मंत्रालय बनाया और बिरसा मुंडा की जयंती को राष्ट्रीय आदिवासी गौरव दिवस के रूप में घोषित किया।

इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष चंडी चरण साव, प्रभारी अभय सिंह, पूर्व विधायक कोचे मुंडा, कमलेश राम, परितोष सोरेन, जिला परिषद सदस्य देवयानी मुर्मू, मंडल अध्यक्ष संजय समेत काफी संख्या में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सरकार को जनता की चिंता नहीं : चंपाई सोरेन

सम्मेलन को संबोधित करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने कहा विकास की रफ्तार थम सी गयी है। उन्होंने कहा सरकार को जनता की चिंता नहीं है। रोजगार,खदान और योजनाओं के काम रुके पड़े हैं। गांव-गांव में सड़क, पानी, रोजगार जैसे बुनियादी मुद्दों पर कोई प्रगति नहीं हो रही। भ्रष्टाचार और ठहराव ने पूरे सिस्टम को जकड़ लिया है। भाजपा का उद्देश्य प्रदेश में एक बार फिर स्थिर और जवाबदेह शासन लाना है, ताकि लोगों को योजनाओं का सीधा लाभ मिल सके। आज झारखंड में अपराध, लूट और भ्रष्टाचार चरम पर है। बालू घोटाले से लेकर सरकारी दफ्तरों तक हर जगह रिश्वत का बोलबाला है। जनता को तय करना है कि झारखंड को लुटेरों और भ्रष्टाचारियों के हाथों में रखना है या विकास और सुरक्षा के रास्ते पर आगे बढ़ाना है। उन्होंने उपस्थित लोगों से आह्वान किया कि आगामी 11 नवंबर को होने वाले उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन को क्रम संख्या एक पर बटन दबाकर भारी से भारी मतों से विजय बनाना है।

धोखा देने वालों को जनता माफ नहीं करती : संजीव सरदार

पिछली बार की तरह भाजपा की हार निश्चित

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। घाटशिला विधानसभा उपचुनाव में झामुमो ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। शनिवार को झामुमो के स्टार प्रचारक पोटका विधानसभा के विधायक संजीव सरदार ने चुनावी प्रचार अभियान में सबसे पहले मां दुआरसीनी मंदिर में मत्था टेका। उन्होंने मां से क्षेत्र की सुख-समृद्धि और समाज की एकता के लिए आशीर्वाद मांगा। इसके बाद विधायक संजीव सरदार ने झाटीझरना और कालचिंति पंचायत के भवराडीह, बालियांम, बटडीह, सिंदरीआम, सोनलादंगा, बसाडेरा समेत अन्य गांवों का दौरा किया, जहां उन्होंने स्थानीय समाज के बुद्धिजीवियों, ग्राम प्रधानों, मांझी बाबा, नायके बाबा और ग्रामीणों से संवाद स्थापित किया। बैठक के दौरान क्षेत्र की सामाजिक समस्याओं और उनके समाधान को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। विधायक संजीव सरदार ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली अबुआ सरकार द्वारा चलायी जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी लोगों को दी। बैठक में उपस्थित ग्रामीणों और बुद्धिजीवियों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि आगामी घाटशिला उपचुनाव में झामुमो प्रत्याशी सोमेश चंद्र सोरेन को भारी मतों से विजयी बनाकर विधानसभा भेजा जायेगा। उन्होंने कहा कि धोखा देने वालों को जनता माफ नहीं करती, पिछली बार की तरह भाजपा की हार निश्चित है।

पूर्व तट रेलवे

निविदा सूचना सं. ST-LT-OUT-SOURCING-KUR-506, दिनांक : 17.10.2025

कार्य का नाम : 2 (दो) वर्षों की समयावधि के लिए खोरधा रोड मण्डल में संकेत एवं दूरसंचार गतिविधियों को मजबूत करने के लिए जनशक्ति की बहि :स्रोतन (Outsourcing)।

निविदा मूल्य : ₹ 19,49,99,474.07, **EMD :** ₹ 11,25,000/-, निविदा दस्तावेज की लागत : ₹ 11,800/-

बिड प्रारंभ होने की तिथि : दिनांक 27.10.2025

निविदा बंद होने की तिथि व समय : 10.11.2025 को 1100 बजे।

ऐसी ई-निविदा के तहत डाक/कूरियर/फैक्स या व्यक्तिगत रूप से भेजा गया कोई भी मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जायेगा, भले ही यह फर्म (Firm) के लेटर हेड एवं नियत समय पर प्राप्त किया गया हो। ऐसे सभी मैनुअल प्रस्ताव को अवैध माना जायेगा तथा उसके बारे में किसी विचार के बिना तत्काल निरस्त कर दिया जायेगा।

उपरोक्त ई-निविदा के ई-निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण जानकारी वेबसाइट : www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे।

दृष्टव्य : प्रत्याशित निविदाकारों को यह सलाह दी जाती है कि इस ई-निविदा के लिए जारी कोई भी परिवर्तन/शुद्धिपत्र की ओर ध्यान देने के लिए वे निविदा बंद होने की कम से कम 15 दिन पहले वेबसाइट का पुन: अवलोकन करें।

वरिष्ठ मण्डल संकेत एवं दूरसंचार अभियन्ता, खोरधा रोड

PR-718/Q/25-26

पूर्व मध्य रेल

ई–निविदा सूचना

खुली निविदा बैच संख्या– 11/2025

दिनांक: 23/10/2025

आईआरईपीएस– www.ireps.gov.in के वेब पोर्टल "पार्टिसिपेशन इन थ्रू" सामग्री की आपूर्ति के लिए ई–निविदा सूचना निम्नलिखित सामग्री की आपूर्ति हेतु प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते हैं। निविदा बंद करने का समय 14:00 बजे है।

क्रम सं० : 01. **निविदा सं० :** 39255779, **सामग्री का संक्षिप्त विवरण :** 2000 केवीए और 2 एमवि, 33/11केवी, 03 फेज 50hz ओनन कूल्ड कॉपर वौंड ट्रांसफॉर्मर, **मात्रा :** 02 Nos., **निविदा जारी करने की तिथि एवं समय :** 23 अक्टूबर 2025 11:28 बजे, **निविदा बंद होने की तिथि एवं समय :** 17 नवम्बर 2025 14:00 बजे

प्रतिभागियों को अपना प्रस्ताव समापन तिथि और समय से पहले आईआरईपीएस– www.ireps.gov.in के वेब पोर्टल के माध्यम से केवल ऑन–लाइन जमा करना होगा। उपरोक्त पोर्टल पर निविदा सूचना में प्रेषिती के संबंध में अन्य विवरण और भंडार का विस्तृत विवरण निविदा दस्तावेज में उपलब्ध है।

व. मंडल सामग्री प्रबंधक
पूर्व मध्य रेल, धनबाद

पीआर/1200/डीएचएन/सामग्री/टी/25–26/32

झामुमो की महिला शक्ति गांव-गांव तक पहुंच रही

गालूडीह जोनल क्षेत्र के बाघुड़िया पंचायत और पहाड़पुर में किया जनसंपर्क

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। घाटशिला विधानसभा उपचुनाव को लेकर झामुमो का जनसंपर्क अभियान लगातार गति पकड़ता जा रहा है। आज गालूडीह जोनल क्षेत्र के बाघुड़िया पंचायत अंतर्गत पहाड़पुर गांव में महिला मोर्चा की नेत्रियों ने प्रचार की बागडोर अपने हाथों में संभाली। महिला नेत्रियों ने घर-घर जाकर ग्रामीणों से मुलाकात की और दिवंगत विधायक सह पूर्व स्कूली शिक्षा मंत्री स्व. रामदास सोरेन द्वारा किये गये जनहित कार्यों की चर्चा की। साथ ही उन्होंने अबुआ सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं जैसे कि मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना, दीदी बाड़ी योजना और मनरेगा के तहत विकास कार्यों की जानकारी भी लोगों तक पहुंचाई। जनसंपर्क के दौरान ग्रामीणों ने महिला नेत्रियों के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने क्षेत्र में नयी ऊर्जा का संचार किया है। ग्रामीणों ने इस अवसर पर झामुमो प्रत्याशी सोमेश सोरेन के पक्ष में एकजुट होकर समर्थन और आशीर्वाद देने का संकल्प भी लिया। गांव की महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने यह संदेश दिया कि अब चुनावी रणभूमि में मातृशक्ति भी पूरी मजबूती से मोर्चा संभाले हुए है। जनभावनाओं को घर-घर पहुंचाने की यह मुहिम अब और भी व्यापक होती जा रही है।

उम्मीदवारों और अभिकर्ताओं को दी गयी चुनाव प्रक्रिया की जानकारी

घाटशिला उपचुनाव

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। पूर्वी सिंहभूम जिला के घाटशिला अनुमंडल सभागार में 45-घाटशिला विधानसभा उपचुनाव के सभी उम्मीदवारों और उनके निर्वाचन अभिकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर चुनाव प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान आदर्श आचार संहिता, सी-विजिल मोबाइल अनुप्रयोग, व्यय लेखा संधारण, प्रचार सामग्री के पूर्व प्रमाणीकरण, प्रपत्र 17-सी तथा बूथ स्तर अभिकर्ता की नियुक्ति से जुड़ी विस्तृत जानकारी साझा की गयी। अधिकारियों ने आदर्श आचार संहिता के प्रावधानों और चुनाव प्रचार के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियों के साथ-साथ उल्लंघन की स्थिति में की जाने वाली कार्रवाई के बारे में विस्तार से बताया। साथ ही सी-विजिल मोबाइल अनुप्रयोग के माध्यम से आचार संहिता उल्लंघन की शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया, उसके समाधान की समय-सीमा और निगरानी तंत्र पर भी जानकारी दी गयी।

व्यय से जुड़े सत्र में चुनाव व्यय की अधिकतम सीमा, लेखा संधारण की विधि, व्यय लेखा प्रस्तुत करने की प्रक्रिया और व्यय पर्यवेक्षक की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। मीडिया प्रमाणीकरण और निगरानी समिति ने विज्ञापन स्वीकृति की प्रक्रिया, भुगतान समाचार (पेड न्यूज) की पहचान और उसे रोकने के उपायों पर भी विस्तार से चर्चा की।

अधिकारियों ने मतदान के दिन प्रयुक्त प्रपत्र 17-सी के महत्व, मतगणना में उसकी भूमिका और रिकॉर्ड संधारण की प्रक्रिया से संबंधित जानकारी दी। साथ ही प्रत्येक उम्मीदवार के बूथ स्तर अभिकर्ता की भूमिका, अधिकार, कर्तव्य और मतदान केंद्र पर आचरण से जुड़ी बातों पर भी चर्चा की गयी।

इस अवसर पर सामान्य पर्यवेक्षक राखी विश्वास, पुलिस पर्यवेक्षक गजराव भूपल, व्यय पर्यवेक्षक दिलीप कुमार राठौर, जिला निर्वाचन पदाधिकारी कर्ण सत्यार्थी, वरीय पुलिस अधीक्षक पीयूष पांडेय सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

बड़ाखुर्शी में झामुमो का जनसंपर्क अभियान तेज

महुआ माजी और सविता महतो ने संभाला मोर्चा

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। घाटशिला विधानसभा उपचुनाव को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) का जनसंपर्क अभियान दिन-प्रतिदिन गति पकड़ रहा है। बड़ाखुर्शी पंचायत के बड़ाखुर्शी गांव में झामुमो प्रत्याशी सोमेश चंद्र सोरेन के समर्थन में व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया।

राज्यसभा सांसद महुआ माजी और इचागढ़ की विधायक सविता महतो ने ग्रामीणों से सीधे संवाद स्थापित कर पार्टी की जनकल्याणकारी नीतियों और दिवंगत विधायक स्व. रामदास सोरेन के अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर पूर्व प्रखंड अध्यक्ष वकील हेंब्रम, सचिव रतन महतो, पूर्व जोनल अध्यक्ष मंटू महतो, सचिव बादल किस्कू, वरिष्ठ नेता नीलकांत महतो, रेणुवाला महतो, समीर महतो सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्थानीय लोगों ने झामुमो प्रत्याशी सोमेश सोरेन के प्रति एकजुट समर्थन जताते हुए आगामी चुनाव में भारी मतों से विजय सुनिश्चित करने का भरोसा दिलाया।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष चतुर्दिक हर्ष तथा उल्लास का वातावरण रहेगा, संयम, धैर्य से काम आसान होंगे।

वृष नये व्यवसाय का आरंभ हो सकता है, परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होगा।

मिथुन आत्मविश्वास की वृद्धि, नये कार्ययोजनाओं के प्रति रूचि बढ़ेगी।

कर्क काम की गति बढ़ेगी, सुख-संसाधनों की वृद्धि, व्यापारिक विस्तार की योजना।

सिंह कामकाज का विस्तार, आप उन्नति के मार्ग की ओर प्रशस्त होंगे, संकल्पित कार्य पूरा होगा।

कन्या आमदनी के नये स्रोत बनेंगे, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, धन-ऐश्वर्य की वृद्धि।

तुला कुछ संघर्षों के बाद नौकरी-सरकारी कार्यों में आशातीत सफलता मिलेगी।

वृश्चिक समसामयिक प्रयास सफल, विद्या-बुद्धि-प्रतिभा का विकास होगा, महत्वपूर्ण कार्य पूरे होंगे।

धनु आय के नये स्रोत बनेंगे, प्रभावशाली व्यक्तित्व का विकास, षड्यंत्र विफल रहेगा।

मकर बहुत दिनों से चली आ रही इच्छाओं की पूर्ति होगी, व्यवसाय में सफलता।

कुंभ रुके हुए कार्य में तेजी, उत्साह-उमंग भरा रहेगा, भ्रमण के साधन बनेंगे,नये लोगों से संपर्क।

मीन किसी नये कार्य आरंभ करने से पूर्व परिवार में विचार-विमर्श करें, कठिनाइयों पर विजय।

कांग्रेस के 'वोट चोर गद्दी छोड़' अभियान में 25 लाख लोगों ने हस्ताक्षर किये

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर चलाया गया वोट चोर गद्दी छोड़ो हस्ताक्षर अभियान शनिवार को अपने अंतिम चरण में ऐतिहासिक सफलता के साथ संपन्न हुआ। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में राज्य के सभी जिलों से निर्धारित लक्ष्य 25 लाख के लगभग हस्ताक्षर फॉर्म प्राप्त हुए, रविवार को कुछ बाकी जिलों से हस्ताक्षर फॉर्म प्राप्त किये जायेंगे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने इस जन सहभागिता के लिए सभी कांग्रेसजनों, पदाधिकारियों, संगठन के प्रकोष्ठों और समर्थकों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह अभियान लोकतंत्र और मताधिकार की रक्षा का प्रतीक है। झारखंड के कांग्रेसजनों ने जिस एकजुटता और समर्पण की मिसाल पेश की है, उसने जनता के विश्वास को और मजबूत किया है। यह हमारी सामूहिक चेतना का प्रमाण है कि लोकतंत्र पर कोई भी आंच नहीं आने देंगे।

झारखंड में गांव-गांव, पंचायत-पंचायत तक चला अभियान : वोट चोरी के खिलाफ जन जागरण के तहत झारखंड में 15 सितंबर से 25 अक्टूबर 2025 तक प्रत्येक जिले और पंचायत स्तर पर अभियान चलाया गया। इस दौरान जनता को बताया गया कि किस प्रकार चुनाव आयोग की भूमिका संदिग्ध रही है और किसके इशारे पर मतदाता सूचियों में हेराफेरी की जा रही है। कमलेश ने कहा कि भारत का लोकतंत्र वोट की शक्ति पर टिका है, और आज यही नींव खतरे में है। दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्गों को चुन-चुनकर मताधिकार से वंचित किया जा रहा है। वोट चोरी आम जनता की आवाज और अधिकार की चोरी है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि पहले महादेवपुरा और अब कर्नाटक के आलंद में हुए खुलासों से देश की जनता निष्पक्ष चुनावी प्रक्रिया को लेकर सशंकित है। मुख्य चुनाव आयुक्त की अगुवाई में वोट चोरी हो रहा है, और जब कांग्रेस जवाब मांगती है तो भाजपा नेता छटपटाहट में बचकाने बयान देकर सच्चाई छिपाने की कोशिश करते हैं। फार्म जमा करने में कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव, मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की, विधायक बंधु तिर्की, निशात आलम, भूषण बाड़ा, जिला अध्यक्ष सतीश केडिया, चंदेश्वर गोप, बरकत खान, यहिया सिद्दीकी, श्रीमती दीपिका बेसरा, सोमनाथ मुंडा, प्रकाश रजक, कामेश्वर यादव, महिला कांग्रेस अध्यक्ष गुंजन सिंह, और प्रिंस सिंह समेत सैकड़ों कार्यकताओं ने फॉर्म जमा कराने में सक्रिय भागीदारी निभायी। इसकी जानकारी झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी केचेयरमैन मीडिया विभाग सतीश पौल मुजनी ने दी।

महिलाओं का योगदान रहेगा निर्णायक : सूरजमनी

झामुमो महिला नेत्रियों की रणनीतिक बैठक में सूरजमनी सोरेन ने बेटा सोमेश सोरेन को जनता को सौंपा

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। शनिवार को फुलडूंगरी स्थित जेएन पैलेस में झामुमो की महिला नेत्रियों की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक में राज्य की प्रमुख महिला नेताओं –दिवंगत विधायक स्व. रामदास सोरेन की धर्मपत्नी सूरजमनी सोरेन, पश्चिमी सिंहभूम की सांसद जोबा मांझी, राज्यसभा सांसद महुआ माजी, ईचागढ़ विधायक सबिता महतो, जिला परिषद अध्यक्षा बारी मुर्मू, पूर्व जिला परिषद तुलसी बाला मुर्मू, घाटशिला प्रखंड प्रमुख सुशीला टुडू और महिला मोर्चा अध्यक्ष छाया रानी साहू सहित कई वरिष्ठ महिला पदाधिकारी उपस्थित रहीं।

बैठक में आगामी घाटशिला विधानसभा उपचुनाव में महिलाओं की सक्रिय भूमिका और संगठनात्मक मजबूती पर विस्तृत चर्चा की गयी।

राज्यसभा सांसद महुआ माजी ने कहा कि इस विधानसभा में महिला मतदाताओं की संख्या निर्णायक है। खासकर पहली बार मतदान करने वाली युवतियों तक सरकार की योजनाओं का प्रचार महिला कार्यकर्ताओं को व्यापक रूप से करना चाहिए।

पश्चिमी सिंहभूम की सांसद जोबा मांझी ने अपने वक्तव्य में दिवंगत विधायक स्व. रामदास सोरेन को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्व. रामदास दा जैसे सरल और जनसेवी नेता का जाना पार्टी और प्रदेश दोनों के लिए बड़ी क्षति है। उनका जनता से लगाव अतुलनीय था।

इचागढ़ विधायक सबिता महतो ने कहा कि झामुमो ने इस बार एक पढ़े-लिखे इंजीनियर को प्रत्याशी बनाया है। जनता को अब यह तय करना है कि वे विकास और जनसेवा के प्रतीक को आगे भेजना चाहते हैं या नहीं। कार्यक्रम के दौरान भावुक लम्हा तब आया जब सूरजमनी सोरेन ने कहा मैंने अपने पति को इस विधानसभा के लिए जीते और जीते-जी इस क्षेत्र के लिए समर्पित देखा। अब उनके जाने के बाद मैं अपने बेटे सोमेश को आप सबके आशीर्वाद के लिए सौंपती हूं। वह आपका बेटा, आपका भाई बनकर हर सुख-दुख में साथ रहेगा।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
Subscribe NOW

आजाद सिपाही
रांची, रविवार, 26 अक्टूबर, 2025
www.azadsipahi.in
04

नहाय-खाय कर भक्ति में लीन हुए छठ व्रती, खरना आज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। लोक आस्था का छठ महापर्व शनिवार को नहाय खाय के साथ शुरू हो गया। सुबह स्नान-ध्यान कर व्रतियों ने नेम-निष्ठा से व्रत का संकल्प लिया। शुद्ध और सात्विक मन से अरवा चावल का भात, कद्दू की सब्जी और चने का दाल पकाया। छठी मइया और भूवन भास्कर को भोग लगा प्रसाद रूप में परिवार और इष्ट मित्रों संग ग्रहण किया। अब कार्तिक शुक्ल पक्ष पंचमी रविवार को खरना की विधि की जायेगी। व्रती सुबह स्नान-ध्यान कर भूवन भास्कर और छठी मईया की आराधना करेंगे। दिनभर निर्जला उपवास रहकर, शाम के समय ईट या मिट्टी से बने चूल्हे पर गन्ने का रस या गुड़ चावल का खीर पकायेंगे। पूरी भी बनाया जायेगा। बाद में उसे सूर्य देव और छठी मइया को भोग लगा स्वयं ग्रहण करेंगे। इसी के साथ उनका 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू हो जायेगा। बाद में व्रती द्वारा पकाये गये खीर-पूरी प्रसाद रूप में परिवार और इष्ट मित्रों के बीच बांटा जायेगा।

महत्वपूर्ण है खरना प्रसाद : महापावन छठ व्रत का खरना प्रसाद अति महत्वपूर्ण होता है। छठ व्रति इसे पूरी नेम-निष्ठा के साथ श्रद्धापूर्वक खीर-पूरी पकाती हैं। माना जाता है कि खरना का प्रसाद पाने वालों को रोग-शोक नहीं सताता। जीवन में खुशहाली बनी रहती है। इसी भाव से सांझ ढलते श्रद्धालु व्रतियों के यहां प्रसाद पाने को खिंचे चले आते हैं।

शाम का अर्घ्य 27 को : छठ घाटों पर लगेगा भक्तों का मेला

कार्तिक शुक्ल पक्ष पंचमी सोमवार को अस्ताचलगामी भूवन भास्कर को अर्घ्य अर्पित किया जायेगा। दोपहर बाद से व्रती परिवार और इष्ट मित्रों संग छठी मइया के गीत गुणगुनाते छठ घाट जायेंगे। घाटों पर भक्तों का मेला लगेगा। बड़ी संख्या में व्रती और श्रद्धालु श्रद्धा और समर्पण से डूबते सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर मनोवांक्षित फल की कामना करेंगे। विभिन्न छठ पूजा समितियों की ओर से घाटों पर समुचित व्यवस्था की जायेगी। समिति के सदस्य और पदाधिकारी व्रतियों और श्रद्धालुओं को हरसंभव सहयोग देने को मुस्तैद रहेंगे।

सुबह का अर्घ्य 28 को : कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी मंगलवार को उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करने के साथ चार दिनी सूयोर्पासना का महापावन पर्व छठ संपन्न हो जायेगा। व्रती और श्रद्धालु अहले सुबह पूजन सामग्री के साथ पुनः घाटों पर एकत्रित हो, उगते भूवन भास्कर को अर्घ्य अर्पित करेंगे। कई व्रती घाट पर ही भगवान सत्यनारायण कथा का श्रवण कर व्रत का पारणा करेंगे।

गुलजार हुआ छठ बाजार, आज की जायेगी जम कर खरीदारी

राजधानी का छठ पूजा का बाजार गुलजार हो गया है। नहाय खाय के दिन शनिवार को सुबह से देर रात तक खरीदारों का तांता लगा रहा। सूप, दउरा और माटी के दीया-बाती सहित फल-फूल, पूजन सामग्री की खूब बिक्री हुई। जरूरत और नेग के हिसाब से लोगों ने एक-एक समान सहेजा। विभिन्न प्रमुख अस्थायी छठ बाजार सहित कचहरी रोड, रातू रोड, महावीर चौक, बूटी मोड़, कोकर बाजार, डोरंडा, सेक्टर-दो, गोंदा टाउन आदि में लगा छठ बाजार आकर्षण का केंद्र बना रहा। रविवार को खरना के दिन बाजार अपने पूरे शबाब पर रहेगा। जमकर खरीदारी होगी। यूं तो दिवाली के पहले से ही छठ महापर्व की तैयारी शुरू हो जाती है। लोग जरूरत के हिसाब से खरीदारी करने लगते हैं, लेकिन पहला अर्घ्य के एक दिन पूर्व तो कमी-बेसी सभी समान की खरीदारी कर ली जाती है, ताकि किसी भी समान की कमी शेष न रह जाये।

करोड़ों का कारोबार

पर्व त्योहार सिर्फ श्रद्धा, विश्वास और धर्म-संस्कृति का ही परिचायक नहीं है, बल्कि इससे एक अच्छा बाजार भी तैयार होता है। यही कारण है कि हर साल छठ पूजा के मौके पर करोड़ो का कारोबार होता है। इस बार भी छोटे-बड़े व्यावसायी अच्छी आमदनी के उम्मीद में हैं। दुकानदारों के अनुसार महापावन छठ पर्व के मौके पर तीन करोड़ रुपये की पूजन सामग्री, चार करोड़ का फल-फूल और पीतल के बर्तन की बिक्री होती है। दो करोड़ से ज्यादा चुनरी, कपड़ा, दूध आदि की खपत होती है।

दिखा महंगाई का असर भी

आस्था पर महंगाई भारी पड़ने के बाद भी बाजार में महंगाई का असर दिखा। लोग महंगे सामानों की खरीदारी मात्र नेग के लिए करते नजर आये। जो फल या सामग्री महंगे भाव का था, उसे कम मात्रा में खरीदते नजर आये। लाहकोठी, रातू रोड सड़क किनारे लगे छठ बाजार में खरीदारी कर रही हेसल निवासी राधिका कुमारी और उनकी दोस्त रेनू ने बताया कि महंगाई के कारण कई समान मात्र नियम के लिए ही खरीद रही हूं।

राज्यपाल और नेता प्रतिपक्ष ने छठ महापर्व की दी शुभकामनाएं

रांची (आजाद सिपाही)। राज्यपाल संतोष गंगवार और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने महापर्व छठ पूजा के प्रथम अनुष्ठान नहाय-खाय की समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी है। राज्यपाल ने लोक आस्था और सूर्य उपासना के महापर्व छठ पूजा के प्रथम अनुष्ठान नहाय-खाय की समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। राज्यपाल ने सोशल मीडिया

एक्स पर शनिवार को लिखा है कि भगवान भास्कर एवं छठी मैया सभी छठव्रतियों और भक्तों की मनोकामना पूर्ण करें, ऐसी प्रार्थना है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष

बाबूलाल मरांडी ने लोक आस्था एवं सूर्य उपासना के महापर्व छठ पूजा के प्रथम अनुष्ठान नहाय खाय की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं दी है। जय छठी मईया।

रांची जिला छठ पूजा समिति ने 751 छठ व्रतियों में बांटी पूजा सामग्री

रांची (आजाद सिपाही)। रांची जिला छठ पूजा समिति हर साल की भांति इस साल भी 751 से अधिक व्रतियों के बीच निःशुल्क साड़ी, शॉल, सूप, सेब, ईख फल सहित पूर्ण पूजन सामग्री का वितरण किशोर गंज स्थित एलपी पब्लिक स्कूल में किया गया। रांची जिला छठ पूजा समिति के अध्यक्ष सूरज भान सिंह ने कहा समिति पिछले 08 सालों से इसी तरह छठ व्रतियों के बीच अपनी सेवा देती आ रही है। समिति सभी छठ घाटों का निरीक्षण भी कर रही है और नगर निगम के सहयोग से सभी छठ घाटों की सफाई, लाइट की व्यवस्था, डस्ट, तालाबों की सफाई सहित विभिन्न कार्यों में लगकर लगातार काम कर रही है। समिति जिला प्रशासन से आग्रह करती है कि छठ घाटों में जहां ज्यादा भीड़ होती है वहां पर पुलिस प्रशासन

की पूर्व की भांति तैनाती करे जिससे असामाजिक लोगों पर कारवाई हो सके। समिति के सदस्य भी वॉलेंटियर के रूप में छठ घाटों में अपनी उपस्थिति दर्ज करेंगे। सूरज भान सिंह का कहना है लोगों की सेवा ही उनका लक्ष्य है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से समिति के संरक्षक संजीव विजयवर्गीय, रमेश सिंह, शशांक राज, ऐश्वर्य सेठ, सुमित सिंह, प्रिंस आजमानी, ऋषिनाथ सहदेव, बद्री नारायण सिंह, सुजीत सिंह,निशांत यादव, अमित सारस्वत, मनीष सिंह, श्याम किशोर सिंह, नंद किशोर सिंह चंदेल, सुनील साहू सहित कई गणमान्य उपस्थित थे।

रांची के कलाकार ऋषभ सिंह का छठ गीत रिलीज

रांची (आजाद सिपाही)। छठ महापर्व के शुभ अवसर पर रांची के उभरते कलाकार ऋषभ सिंह का छठ गीत माई भुखल बाड़ी रिलीज हुआ। इस गीत को यूट्यूब समेत कई सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सराहना मिल रही है । ऋषभ ने बताया यह गीत उन सारी माताओं को समर्पित है जो अपने संतान के लंबे उम्र और उज्वल भविष्य के लिए ये तीन दिवसीय कठिन व्रत को करती है। ऋषभ ने इस गीत अपने टीम के साथ मिल कर बहुत ही सुंदर रूप से प्रस्तुत किया है।

विनेक्स क्लब काली पूजा समिति ने निकाली मां काली की विसर्जन यात्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। बरियातू स्थित विनेक्स क्लब काली पूजा समिति की ओर से मां काली की भव्य विसर्जन शोभायात्रा निकाली गयी। यह यात्रा समिति के अध्यक्ष राणा रणधीर महेंद्रू के नेतृत्व में निकली, जिसमें बरियातू क्षेत्र की मातृशक्ति सहित बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूजा कार्यक्रम का समापन पूरी श्रद्धा और भावनाओं के साथ हुआ। भव्य आयोजन के दौरान समाज के सभी वर्गों ने मिलकर मां काली को नम आंखों से विदाई दी। समिति की ओर से आयोजन को सफल और सुव्यवस्थित रूप से संपन्न कराने के लिए सभी

पदाधिकारियों और सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर संजय मिनोचा, राणा रणधीर महेन्द्र, शार्दूल बहादुर, मोनू यादव, विवेक रंजन, रौनक सिंह, प्रमोद कुमार, अनिर्बन सिन्हा, उषा चौधरी, संम्पा दास, निपा दास, डॉ. दिव्या महेंद्रू, उषा हेंब्रम, जूही चौधरी, रंजना जायसवाल मधु, सुरभी सिंह, डॉ. नेहा रानी, मन्ना यादव, संतोष राजपूत, कल्याण दास, शौर्य राज महेंद्रू, पुनीत साहू, आकाश चक्रवर्ती, रोशन कुमार और प्रताप कुमार सहित कई सदस्य सक्रिय रूप से शामिल रहे। समिति ने विश्वास जताया है कि भविष्य में भी इसी सामूहिक भावना और सहयोग के साथ सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन जारी रहेगा।

छठ महापर्व को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड की राजधानी रांची में छठ महापर्व को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये हैं। छठ घाटों पर प्रशासन ने दंडाधिकारी और पुलिस पदाधिकारी सहित लगभग पांच हजार जवानों की तैनाती की है। राजधानी के छठ घाटों पर श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए दंडाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी और जवानों को 27 अक्टूबर की दोपहर 2:00 बजे तक और 28 अक्टूबर की तड़के सुबह 3:00 तक छठ घाट पहुंचने का निर्देश दिया गया है। घाटों पर जिला पुलिस, बीएमपी, जैप, आइआरबी, एनडीआरएफ और रैफ के जवान तैनात रहेंगे। शहर भर के घाटों पर सादे लिबास में महिला और पुरुष पुलिसकर्मियों की भी तैनाती की गयी है। साथ ही आसामाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया गया है। छठ घाटों पर वाहनों का प्रवेश पूरी तरह से वर्जित रखने का निर्देश दिया गया है। सीसीटीवी कैमरा और ड्रोन कैमरे से छठ घाटों की निगरानी की जायेगी। रांची के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राकेश रंजन ने शनिवार को बताया कि छठ महापर्व को लेकर राजधानी रांची के सभी छठ घाटों में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किये गये हैं।

एचपीसीएल ने कौन बनेगा एचपीसीएल का हार्ले किंग कैंपेन का किया शुभारंभ

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) ने शनिवार से अपने ग्राहकों के लिए एक रोमांचक लकी ड्रॉ कैंपेन कौन बनेगा एचपीसीएल का हार्ले किंग की शुरूआत की है। इस कैंपेन में ग्राहकों को हार्ले डेविडसन एक्स 440 बाइक जीतने का मौका मिलेगा। ग्राहकों को चयनित एचपीसीएल आउटलेट पर 300 (दोपहिया) या 1500 (चार पहिया) का ईंधन भरना होगा और क्यूआर कोड स्कैन कर फॉर्म भरना होगा। इसके बाद, वे लकी

ड्रॉ में भाग लेने के पात्र बन जायेंगे। इस कैंपेन में तीन भाग्यशाली विजेताओं को हार्ले डेविडसन एक्स 440 बाइक और अन्य विजेताओं को गिफ्ट वाउचर प्रदान किये जायेंगे। एचपीसीएल का यह कैंपेन ग्राहकों के लिए पुरस्कारों और उत्साह का प्रतीक है।

छठ महापर्व पर झारखंड प्रांतीय अध्यक्ष ने सहयोग की अपील की

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय अध्यक्ष विशाल पाडिया ने झारखंड राज्य की सभी 83 शाखाओं के अध्यक्षों और सचिवों से अपील की है कि आस्था, सादगी और संकल्प के प्रतीक छठ महापर्व के अवसर पर अपने-अपने क्षेत्रों के घाटों पर छठ व्रतियों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करें। श्री पड़िया ने कहा कि छठ व्रती माताओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए सभी शाखाएं पूजन सामग्री वितरण, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छता अभियान, कपड़े बदलने की व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा सेवा तथा अस्थायी शेड या टेंट की व्यवस्था जैसे कार्यों को प्राथमिकता दें। उन्होंने कहा कि यह पर्व केवल आस्था का नहीं, बल्कि समाजसेवा और जनजागरूकता का भी प्रतीक है। ऐसे अवसरों पर मंच की शाखायें समाज के बीच सेवा और समर्पण की भावना को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायें। इस अवसर पर सूचना एवं जनसंपर्क प्रांतीय संयोजक अमित शर्मा ने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि हम सब मिलकर सूर्य देव की आराधना के इस पावन अवसर को सेवा और श्रद्धा के भाव से मनायें। छठ पूजा के सभी कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संपन्न करें। स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें साथ ही घाटों पर स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करें।

युवा कृषि परंपरा को अपनाकर बेहतर भविष्य और राष्ट्र का कर सकते हैं निर्माण : प्रो रमेश

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भारतीय प्रबंधन संस्थान, रांची में शुक्रवार को पॉलिसी कन्वर्सेशन सीरीज का आयोजन हुआ। इसमें नीति आयोग के सदस्य प्रो रमेश चंद बतौर मुख्य वक्ता शामिल हुए। मौके पर संस्थान की ओर से तैयार रिसर्च मेथड्स ग्रुप (आरएमजी), का औपचारिक उद्घाटन किया गया। प्रो रमेश चंद ने अपने व्याख्यान में अपनी शैक्षणिक यात्रा को साझा करते हुए बताया कि कैसे उन्होंने बीएससी एग्रीकल्चर के बाद शोध कार्य को अपना जीवन-लक्ष्य बनाया। उन्होंने कहा कि देश के सभी शैक्षणिक संस्थानों को शोध और नवाचार की नयी पद्धतियां विकसित करनी चाहिए ताकि आम नागरिक तक नयी तकनीक और प्रबंधन ज्ञान पहुंच सकें। उन्होंने कहा कि सरकार विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की दिशा में प्रत्येक क्षेत्र की संभावनाओं को सशक्त बना रही है, ताकि भारत आर्थिक रूप से मजबूत राष्ट्र के रूप में उभर सके। प्रो रमेश ने विशेष रूप से कृषि क्षेत्र की संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह क्षेत्र न सिर्फ देश के विकास की रीढ़ है, बल्कि आगे

की प्रगति का माध्यम भी बन सकता है। उन्होंने बताया कि आज भी देश की लगभग 46 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। वर्ष 2015-16 से 2024-25 के बीच कृषि क्षेत्र की औसत वार्षिक वृद्धि दर 4.45 प्रतिशत रही है। उत्पादन में वृद्धि से न केवल देशवासियों को लाभ होगा, बल्कि निर्यात बढ़ाकर भारत अपनी आर्थिक स्थिति को और मजबूत कर सकता है। प्रो रमेश ने फील्ड क्रॉप्स और हॉर्टिकल्चर फसलों की उत्पादन संभावनाओं पर चर्चा की, साथ ही प्रबंधन के छात्रों को कृषि क्षेत्र के अवसर से प्रेरित किया। उन्होंने छात्रों को कृषि क्षेत्र में योगदान देने और इसके प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा दी। आइआइएम रांची के निदेशक प्रो दीपक श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में कहा कि प्रबंधन संस्थानों के शोध कार्य शासन और सार्वजनिक नीतियों को दिशा प्रदान करने में अहम भूमिका निभाते हैं। इस संदर्भ में आरएमजी एक सार्थक पहल सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि संस्थान समाज के लिए उत्तरदायी प्रबंधक तैयार करने की दिशा में कार्य कर रहा है। विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों के अनुरूप क्षमता निर्माण और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संस्थान निरंतर प्रयासरत है। ऐसे में शोध को- क्यों और कैसे, के प्रश्नों पर आधारित रखना जरूरी है, जिससे हम भविष्य की संभावनाओं का अधिकतम लाभ उठा सकें। प्रो कुशाग्र शरण ने रिसर्च मेथड्स ग्रुप की अवधारणा और उद्देश्यों पर बात की। उन्होंने बताया कि देश-विदेश के संस्थान आज आपसी सहयोग के माध्यम से शोध कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। ऐसे में आरएमजी का उद्देश्य अन्य शैक्षणिक संस्थानों को आइआइएम रांची के साथ जोड़कर नवीन शोध गतिविधियों से प्रेरित करना है। यह समूह शोधकर्ताओं की दार्शनिक नींव, कार्यप्रणाली एकीकरण और विश्लेषणात्मक क्षमताओं पर केंद्रित रहेगा - जिसमें मात्रात्मक, गुणात्मक और मिश्रित शोध विधियों का प्रयोग, सांख्यिकीय और संगणकीय विश्लेषण उपकरणों का उपयोग, तथा शोध सहयोग की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संभावनाओं को बढ़ाने की दिशा में प्रयास किये जायेंगे। कार्यक्रम के समापन सत्र में विद्यार्थियों ने प्रो रमेश चंद से नीति और कृषि क्षेत्र की संभावनाओं पर प्रश्न पूछे व विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की दिशा में अपने योगदान की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

निर्मला कॉन्वेंट हाइस्कूल में श्रद्धा और आस्था के साथ मनाया छठ पूजा उत्सव

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। निर्मला कॉन्वेंट हाइस्कूल, एदलहातू मोराबादी में पारंपरिक उत्साह और भक्ति के साथ छठ पूजा समारोह का आयोजन किया गया। विद्यालय परिसर में सजे सुसज्जित मंच पर नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने छठ पर्व की सुंदर झांकी प्रस्तुत की, जिसने उपस्थित सभी लोगों का मन मोह लिया। बच्चों ने पारंपरिक परिधानों में छठ मइया आराधना का जीवंत प्रदर्शन किया। केले के पत्तों, दीपों, सूप और फलों से सजी वेदी ने वातावरण को पूरी तरह आस्था और संस्कृति से भर दिया। विद्यार्थियों ने सूर्य देव और छठी मइया की पूजा कर प्रकृति और

जीवन के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के शिक्षिका किरण कुमारी और अनामिका क्षेत्री के मार्गदर्शन में किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य विजयकुमार शर्मा ने कहा कि छठ पूजा न केवल सूर्य उपासना का पर्व है, बल्कि यह अनुशासन, पवित्रता और पर्यावरण के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

वहीं विद्यालय की सचिव सीमा शर्मा ने बच्चों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि और कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों को भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जोड़ते हैं तथा उनमें भक्ति और नैतिकता की भावना विकसित करते हैं।

कार्यक्रम के अंत में छठ गीतों और जयकारों से गूंज उठा पूरा विद्यालय परिसर, और कार्यक्रम का समापन उत्साह, भक्ति और सांस्कृतिक गरिमा के साथ हुआ। मौके पर विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिका किरण कुमारी, निधि कुमारी, अनामिका क्षेत्री, विभा तिग्गा, मोनी वाला शर्मा इत्यादि उपस्थित थे।

आजाद सिपाही
रांची, रविवार, 26 अक्टूबर, 2025
www.azadsipahi.in

छठ की महिमा : शहर की छठ पूजा समितियों का योगदान सराहनीय, व्रतियों के बीच बांटी जा रही पूजन सामग्री

लोक आस्था के महापर्व पर सेवा और सहयोग को उठ रहे हजारों हाथ, सज गये छठ घाट

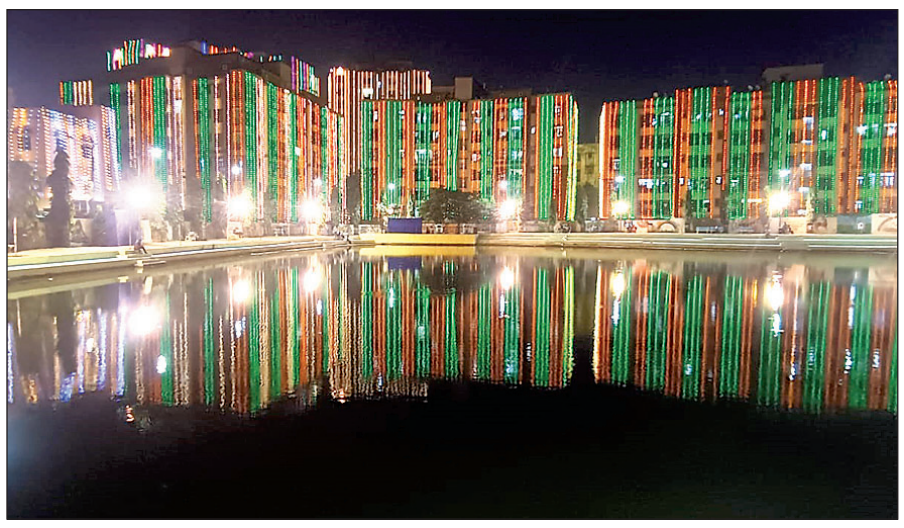

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा पर सेवा और सहयोग को हजारो हाथ उठ रहे हैं। महापर्व की तैयारियों में विभिन्न पूजा समितियों ने पूरी ताकत झोंक दी है। जगह-जगह तोरणद्वार बनाये जा रहे हैं। घाट की स्थिति सुधारने में नगर निगम तो प्रयासरत है हीं, साथ ही विभिन्न छठ पूजा समितियों के सदस्य भी उत्साह से लबरेज हो योगदान दे रहे हैं। मानों घाटों को वे दुल्हन की तरह सजाना चाहते हों। सभी छठ घाटों और उसके आसपास साफ-सफाई का काम युद्ध स्तर पर चल रहा है। गली-कूचो से लेकर घाटों को जोड़ने वाले प्रमुख सड़को पर भी यथा संभव सफाइ और प्रकाश आदि की व्यवस्था की जा रही है। सोमवार को पहला अर्घ्य पर छठ घाट जगमग रोशनी से दमकेगा। कहीं सेवा और सत्कार तो कहीं पूजन सामग्री वितरण किया जायेगा। श्रद्धालुओं के लिए भी चाय आदि की समुचित व्यवस्था की जायेगी। कई घाटों पर स्थानीय और बाहर से आये भजन गायक छठी मइया के गीतों से सब को झुमायेंगे। पयूष पाठक की ओर से चडरी तालाब सहित अन्य जालाशयों पर बनारस की तर्ज पर गंगा आरती भी उतारी जायेगी। यूं ही लोक आस्था का महापर्व श्रद्धा-भक्ति और सेवा-सहयोग के साथ संपन्न होगा।

सज-धज कर तैयार है चडरी तालाब

चडरी तालाब सज-धज कर तैयार है। घाटों से लेकर संपर्क मार्ग तक आकर्षक विद्युत सज्जा की जा रही है। सांझ ढलते तालाब के साथ आस-पास का इलाका भी रंग-बिरंगी लाइटों से दमक रहा है। शनिवार को पांच सौ व्रतियों के बीच पूजन सामग्री बांटी गयी। पूजा समिति के अध्यक्ष सबलू मुंडा ने बताया कि मौके पर गंगा आरती और भजनों के कार्यक्रम सब के मन भायेगा। कोलकाता के प्रसिद्ध भजन गायक दोनों अर्घ्य के दौरान भक्ति गीतों की सरिता बहायेंगे। पुष्प द्वार की खूबसूरती देखते ही बनेगी। महिलाओं के लिए चेंजिंग रूम की भी व्यापक व्यवस्था की गयी है। सेवा और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि सूर्य देव की आठ फीट ऊंची प्रतिमा का अलग आकर्षण रहेगा।

पूजन सामग्री बांटने में जुटी रहीं गीता और राधा

छठ महापर्व हो या कोइ अन्य मौका पूर्व पार्षद गीता कुजूर और समाजसेवी राधिका कुमारी तन-मन और धन से समर्पित हो योगदान देने में कोइ कसर नहीं छोड़ती। लोक आस्था के महापर्व छठ के मौके पर भी इनका योगदान सराहनिय है। रातू रोड और पिस्का मोड़ के विभिन्न मोहल्लों में आर्थिक रूप से कमजोर व्रतियों के बीच सूप और दउरा के साथ पूजन सामग्रियों का वितरण करने में दिनभर जुटी रहीं। राधिका ने बताया कि लोगों की सेवा कर जो संतोष मिलता है, उसे शब्दों में बताना मुश्किल है। जब भी मौका मिलता है पूरे समर्पण भाव से लोगों की सेवा और सहयोग में लगी रहती हूं। महापर्व पर तो किसी भी रूप में योगदान दे कर स्वयं को धन्य महसूस करती हूं। अखिलेश प्रसाद, पूरब प्रसाद, मुन्नी देवी, मंजू चौरसिया, गोविंद, बबलू, अलका कुजूर आदि ने भी इसमें मुख्य योगदान दिया।

देखते ही बनेगी फूलों से सजे बड़ा तालाब की भव्यता

स्टूडेंट फेडरेशन बड़ा तालाब पूजा समिति व्रतियों और श्रद्धालुओं की सेवा-सत्कार को पूरी ताकत झोक दी है। मुख्य संरक्षक राजीवरंजन मिश्रा ने बताया कि समिति 75वर्षों से योगदान दे रही है। इस बार भी व्यापक तैयारी की जा रही है। छठ महापर्व को लेकर आकर्षक विद्युत के काम को अंतिम रूप दिया जा रहा है। संध्या अर्घ्य के मौके पर एक किमी तक बाहर से मंगाये गये पुष्पों से मनोहारी साज-सज्जा की जायेगी। स्थानीय सूर्य मंदिर को भी आकर्षक ढंग से सजाया जायेगा। साथ ही सुंदरकांड पाठ के साथ भजन संध्या के कार्यक्रम होंगे। उन्होंने बताया कि समिति के कार्यक्रर्ता सेवा और सहयोग को मुस्तैद रहेंगे। छठ घाट जगमग रौशनी से दमकेगा। व्रतियों के बीच पूजन सामग्री भी बांटी जायेगी।

आकर्षक है मधुकम तालाब की लाइटिंग

न्यू लायंस क्लब छठ पूजा समिति मधुकम में की जा रही आकर्षक विद्युत साज-सज्जा के क्या कहने। छठ घाट का इलाका चाकाचौंध रोशनी और रंग-बिरंगी लाइटों से जगमगाने लगा है। दो सौ से ज्यादा स्वयंसेवक तैयारी में लगे हैं। अध्यक्ष अनिल कुमार गुप्ता ने बताया कि समिति 42वर्षो से योगदान दे रही है। इस बार भी बड़े पैमाने पर व्यवस्था की जा रही है। दो किमी तक आकर्षक विद्युत और पुष्प सज्जा करने की तैयारी है। लाइटिंग में सभी देवी-देवताओं का दर्शन सब के मन भायेगा। दोनों अर्घ्य के दौरान पूजन सामग्री के साथ पटना से मंगाये गये गंगा जल बांटे जायेंगे। व्रतियों को चुनरी ओढ़ाकर सम्मानित किया जायेगा। घाट पर बने सूर्य मंदिर में भी साज-सज्जा की जायेगी।

सरोवर नगर में सपरिवार विराजेंगे सूर्य देव

सरोवर नगर डैम साइड, देवी मंडप रातू रोड में युवा सहयोग छठ पूजा समिति की ओर से महापर्व छठ की तैयारी को अंतिम रूप दिया जा रहा है। अध्यक्ष शैलेस सिन्हा ने बताया कि घाट में सपरिवार सूर्य देवी का दर्शन इस बार श्रद्धालुओं को होगा। यहां आठ फीट ऊंची भूवण भास्कर की प्रतिमा मन मोहेगी। उन्होंने बताया कि बड़ी संख्या में कार्यक्रर्ता व्रतियों और श्रद्धालुओं को हरसंभव सहयोग देंगे। पूजन सामग्री भी बांटी जायेगी। पार्किंग से लेकर लाइट आदि की समुचित व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने बताया कि किसी तरह की अनहोनी को ध्यान में रख घाटों पर गोताखोर भी तैनात किये जायेंगे। शैलेस ने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहयोग करने वालों के प्रति आभार जताया है।

कांके डैम में भी है भव्य तैयारी

भारतीय युवा विकास क्लब छठ पूजा समिति की ओर से कांके डैम में भव्य तैयारी की जा रही है। एक किमी तक मनोहारी विद्युत साज-सज्जा का खूबसूरत नजारा देखते ही बनेगा। यहां अन्य व्यवस्था के साथ तीन फीट ऊंची श्रीगणेश जी की प्रतिमा का अलग आकर्षण रहेगा। समिति के संरक्षक राजेश कुमार बबन ने बताया कि भक्तों के सेवा और सहयोग को कार्यक्रर्ता मुस्तैद रहेंगे। व्रतियों के बीच दूध, गंगा जल, फूल-फल आदि पूजन सामग्री भी बांटी जायेगी। उन्होंने बताया कि घाटों पर महिला व्रतियों के लिए चेंजिंग रूम बनाये गये हैं। सुरक्षा के मद्देनजर जगह-जगह बैरिकेटिंग भी की गयी है।

दिनकर छठ पूजा समिति कर रही आकर्षक साज-सज्जा

दिनकर छठ पूजा समिति, हेसल डैम साइट की ओर से एक किमी तक आकर्षक साज-सज्जा की जा रही है। बड़ी संख्या में समिति के सदस्य इसमें योगदान दे रहे हैं। समिति के ललित ओझा और दीपक ओझा ने बताया कि डैम का दायरा बड़ा होने के कारण प्रकाश और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये जा रहे हैं। संध्या अर्घ्य के दौरान व्रतियों के बीच पूजन सामग्री और श्रद्धालुओं के लिए चायआदि की व्यवस्था की जायेगी। इसके अलावा अरगोड़ा तालाब, स्टेन रोज क्लब छठ पूजा समिति स्वर्णरेखा घाट, सूर्य मंदिर ट्रस्ट, धुर्वा सहित शहर के सभी छठ घाटों पर विभिन्न पूजा समितियों की ओर से प्रकाश और सुरक्षा के साथ साज-सज्जा की समुचित व्यवस्था की जा रही है।

गौरी रानी को पहला स्व. हरिनारायण सिंह उत्कृष्ट युवा पत्रकार सम्मान

राज्यसभा के उपसभापति सह वरिष्ठ पत्रकार हरिवंश देंगे 2 नवंबर को पुरस्कार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राजधानी की युवा पत्रकार गौरी रानी को इस वर्ष का स्व हरिनारायण सिंह उत्कृष्ट युवा पत्रकार सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। उनको अवार्ड के साथ प्रशस्ति पत्र और 10000 रुपये नगद दिया जायेगा। यह घोषणा शनिवार को रांची प्रेस क्लब के अध्यक्ष सुरेंद्र लाल सोरेन और आरबीएस वैदिक ट्रस्ट के नित्यानंद शुक्ला ने की। एचडी न्यूज की युवा, जुझारू और कर्मठ पत्रकार गौरी रानी का चयन उनके परफॉर्मेंस के आधार पर किया गया है। झारखंड पत्रकारिता के सशक्त हस्ताक्षर स्व. हरिनारायण सिंह के नाम से इस वर्ष से शुरू हुआ यह सम्मान लेने वाली यह पहली पत्रकार होंगी। दो नवंबर

को लालपुर स्थित होटल रेन ड्यू में रांची प्रेस क्लब के समारोह में राज्यसभा के उपसभापति सह वरिष्ठ पत्रकार हरिवंश गौरी रानी को यह पुरस्कार देंगे। गौरतलब है कि वरिष्ठ पत्रकार स्व. हरिनारायण सिंह की याद में हर वर्ष एक युवा पत्रकार को यह सम्मान दिया जायेगा। कार्यक्रम में स्व. हरिनारायण सिंह के परिजनों की मौजूदगी में यह सम्मान दिया जायेगा।

जालान टिंबर ने आम की लकड़ी का वितरण किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। छठ महापर्व के पावन अवसर पर शनिवार को जालान टिंबर लेक रोड की ओर से आम की लकड़ी का निशुल्क वितरण किया गया। वहीं रविवार को निशुल्क दूध का वितरण भी किया जायेगा। यह परंपरा लगभग पचास वर्षों से चली आ रही है। जालान टिंबर की ओर से यह एक छोटा सा प्रयास है। जालान टिंबर के प्रोपराइटर रतन जालान ने कहा कि श्रद्धा और आस्था के बिना भक्ति व्यर्थ है। छठ महापर्व के अवसर पर हम सभी को श्रद्धा और आस्था के साथ भगवान की पूजा करनी चाहिए। जालान टिंबर की ओर से आम की लकड़ी और दूध का निशुल्क वितरण इसी श्रद्धा और आस्था का प्रतीक है।

जेएलकेएम ने घाटशिला उपचुनाव में देवेंद्र नाथ महतो को मुख्य संयोजक बनाया

रांची (आजाद सिपाही)। जेएलकेएम सुप्रीमो जयराम महतो ने घाटशिला उपचुनाव में देवेंद्र नाथ महतो को मुख्य संयोजक बनाया है। बता दें कि घाटशिला विधानसभा उपचुनाव का पारा तेज होता जा रहा है। सभी पार्टी अपना अपना वोट बढ़ाने में एड़ी चोटी एक कर दिया है। इंडिया गठबंधन और एनडीए गठबंधन के नेताओं का घाटशिला में जमावड़ा शुरू हो गया है। यह चुनाव झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के अस्तित्व का भी अग्नि परीक्षा है । घाटशिला उपचुनाव जीत का चाभी संथाल और कुड़मी वोट को माना जा रहा है। घाटशिला क्षेत्र में कुड़मी मतदाता लगभग 28000 है ।

एसडीओ ऑफिस में पिस्तौल लहरानेवाला व्यक्ति गिरफ्तार

रांची (आजाद सिपाही)। समाहरणालय स्थित सदर एसडीओ ऑफिस में पिस्तौल लहराने वाले व्यक्ति नागेश्वर महतो को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए के नेतृत्व में पुलिस की टीम ने कार्रवाई करते हुए नागेश्वर महतो को एक पिस्तौल पर दस गोली के साथ गिरफ्तार किया है। शनिवार को जानकारी देते हुए कोतवाली डीएसपी ने बताया कि 24 अक्टूबर को दोपहर लगभग 3.00 बजे एक चौंकाने वाली घटना सामने आई, एक व्यक्ति ने सरकारी कर्मचारियों को धमकाते हुए कमर से पिस्तौल निकाल कर लहरा दी। कर्मचारियों ने साहस दिखाते हुए उसे काबू किया और तुरंत वरीय अधिकारियों को सूचित किया, जिसके बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। यह घटना समाहरणालय ब्लॉक 'बी' के कमरा संख्या-210 (सदर एसडीओ ऑफिस) में हुई। कार्यालय के कर्मचारी उस समय अपने-अपने स्थानों पर बैठकर सरकारी कार्यों का निष्पादन कर रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, दोपहर करीब तीन बजे एक व्यक्ति कमरे में आया और उसने बड़गांई अंचल से संबंधित ऑन-लाइन प्रमाण पत्र के काम के बारे में पूछताछ की।कर्मचारियों ने उसे बताया कि बड़गांई अंचल का कार्य देखने वाले संबंधित स्टाफ अवकाश पर हैं और उन्हें अवकाश के बाद आने का अनुरोध किया गया। यह सुनते ही वह व्यक्ति अमर्यादित व्यवहार पर उतर आया और व्यक्ति ने अपनी कमर से पिस्तौल निकाली और लहराना शुरू कर दिया। इस घटना से कार्यालय में हड़कंप मच गया।

डोरंडा बाजार से निकली भव्य विसर्जन शोभायात्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्रीडोरंडा बाजार काली पूजा समिति के पूजा पंडाल से शनिवार की शाम गाजे-बाजे के साथ भव्य विसर्जन शोभायात्रा निकाली गयी। इसमें समिति के पदाधिकारियों और सदस्यों के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। उड़ते रंग-गुलाल के बीच नाचते-झूमते स्थानीय बटम तालाब पहुंचे। यहां नेम-निष्ठा के साथ मां की प्रतिमा का विसर्जन किया गया।

यात्रा के दौरान बंगाल के ढाक बाजा और हजारीबाग से ताशा पार्टी ने खूब रंग जमाया। जम कर आतिशबाजी की गयी। रास्ते भर प्रसाद बांटा गया। जगह-जगह यात्रा में शामिल भक्तों का स्वागत विभिन्न व्यावसायी और धार्मिक संगठनों की ओर से किया गया। इससे पूर्व सुबह पूजन-हवन के

बाद मां का खोंइछा भरने को महिलाओं की लंबी कतार लगी रही। सभी ने एक-दूसरे को सिंदूर लगा कर अखंड सौभाग्य की कामना मां से की। अध्यक्ष राजू चौरसिया, सचिव जयदेव घोष, मीडिया प्रभारी मनोज वर्मा, प्रदीप कुमार मुन्ना, गौतम गुप्ता, प्रदीप पांडेय, निर्मल गुप्ता, नविन मल्होत्रा, प्रकाश मामा, प्रकाश वर्मा, विवेक सहाय, सुनील सिन्हा, राजेश वर्मा, विजय सिन्हा, श्यामल घोष, मुन्ना लाल, चंदन सिंह, कुंदन प्रसाद, सिंटू, सुभाष, राहुल चौरसिया, अभिषेक घोष, अजय ठाकुर, शंकर घोष, विश्वनाथ राम, राकेश पाल, महेश विजय, अशोक घोष, अशोक पासवान, रोहन चौरसिया, चंदन गुप्ता, सुजीत मालाकार, उत्तम ठाकुर, सम्मी गुप्ता, अशोक साव, विजय पाल आदि ने पूजनोत्सव के सफल आयोजन में मुख्य योगदान दिया।

बहुत जान है इन बाजुओं में बता दिता रोहित और विराट ने

आजाद सिपाही संवाददाता

सिडनी। रोहित शर्मा और विराट कोहली की शानदार साझेदारी की मदद से भारत ने तीसरे वनडे मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया को नौ विकेट से हरा दिया है। ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 46.4 ओवर में 236 रन बनाये। जवाब में रोहित शर्मा ने शतक लगाया और कोहली ने अर्धशतकीय पारी खेली। इन दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट के लिए 168 रनों की साझेदारी हुई जिसके दम पर भारत ने 38.3 ओवर में एक विकेट पर 237 रन बनाकर मैच जीता। ऑस्ट्रेलिया ने हालांकि, तीन मैचों की यह सीरीज 2-1 से अपने नाम की। इस मैच में भारतीय गेंदबाजों ने भी शानदार प्रदर्शन किया और ऑस्ट्रेलिया को बड़ा स्कोर बनाने से रोका। लक्ष्य का पीछा करते हुए रोहित और गिल ने भारत को अच्छी शुरूआत दिलाई और दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 69 रनों की

साझेदारी हुई। इसे जोश हेजलवुड ने गिल को आउट कर तोड़ा। इसके बाद रोहित और कोहली की जोड़ी ने मोर्चा संभाला और ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों की जमकर क्लास ली। यह दोनों बल्लेबाज अंत तक टिके रहे और नाबाद रहते हुए पवेलियन लौटे। रोहित ने 125 गेंदों पर 13 चौकों और तीन छक्कों की मदद से नाबाद 121 रन बनाये, जबकि कोहली 81 गेंदों पर सात चौकों की मदद से 74 रन बनाकर नाबाद लौटे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शुरूआती दो मैचों में शून्य पर आउट होने वाले विराट कोहली आखिरकार अंतिम मुकाबले में वापसी करने में कामयाब रहे। उन्होंने 56 गेंदों में करियर के 75वें अर्धशतक के साथ रिकॉर्ड्स की झड़ी लगा दी।

सचिन को पछाड़ा

कोहली ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अर्धशतक लगाने के साथ ही लक्ष्य का पीछा करते हुए सर्वाधिक बार 50+ स्कोर लगाने के मामले में सचिन को पीछे छोड़ दिया है। कोहली ने वनडे में 70वीं बार चेज करते हुए 50+ स्कोर बनाया, जबकि सचिन ने इस दौरान 69 बार 50+ स्कोर किये हैं। 75वें वनडे अर्धशतक के साथ किंग कोहली ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2500 रन भी पूरे कर लिये हैं। वह ऐसा करने वाले तीसरे भारतीय बल्लेबाज बन गये। किंग कोहली ने रोहित के साथ 19वीं बार 100 से ज्यादा रनों की साझेदारी निभाई। दोनों के बीच 101वीं पारी में 19वीं दफा 100+ रनों की साझेदारी हुई।

स्वागत समिति ने बांटे 1101 नारियल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। काली पूजा स्वागत समिति, हरमू रोड की ओर से छठ महापर्व पर व्रतियों के घरों में 1101 नारियल पहुंचायी गयी। संस्थापक अध्यक्ष प्रेम वर्मा ने बताया कि समिति हर साल साफ-सफाई और विद्युत सज्जा में मुख्य योगदान देती है। साथ ही व्रतियों के बीच पूजन सामग्री भी बांटी जाती है। अनिल माथुर, पूर्व पार्षद ओम प्रकाश, चंदन वर्मा, विजय खरे, जोगिंदर प्रजापति, प्राणिक वर्मा, रामू सोनी, ध्रुव प्रजापति आदि ने इसमें मुख्य योगदान दिया।

श्रीजीण माता समिति लगायेगी सेवा शिविर

रांची (आजाद सिपाही)। श्रीजीण माता मंदिर प्रचार समिति लोक आस्था के महापर्व में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करायेगी। आनंद पाराशर ने बताया कि बड़ा तालाब बिजली आफिस के पीछे समिति की ओर से सेवा शिविर लगा व्रतियों और श्रद्धालुओं को हरसंभव सहयोग दिया जायेगा। दोनों अर्घ्य के दौरान बड़ी संख्या में माता भक्त तन-मन और धनद से समर्पित हो योगदान देंगे। सेवा और सहयोग के साथ व्रतियों के बीच पूजन सामग्री भी बांटी जायेगी। श्रद्धालुओं के लिए चाय-पानी आदि की व्यवस्था की जायेगी। विश्वनाथ पंकज सिंघानिया,संजय पाराशर, गौरव मित्तल, बजरंग पुरोहित, अजय सिंघानिया, कैलाश मालपानी, प्रदीप शर्मा,रेखा पाराशर, मीनू पाराशर, पिंकी शर्मा, वंदना शर्मा आदि इसमें मुख्य योगदान दे रहीं हैं।

सबको चुभेगा ये बैन

अलास्का में रूसी राष्ट्रपति पुतिन और अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की मुलाकात की उम्मीदें अब पुरानी लगने लगी हैं। अगस्त की वह तस्वीर, जिसमें दोनों नेता एक ही कार में थे, अब यूक्रेन युद्ध पर बातचीत शुरू होने की उम्मीद जगाती थी। लेकिन, रूस की दो बड़ी तेल कंपनियों Rosneft और Lukoil पर अमेरिकी प्रतिबंधों ने इस उम्मीद को खत्म कर दिया है। इस अमेरिकी फैसले का असर भारत सहित पूरी दुनिया को भुगतना पड़ेगा। ट्रंप बुडापेस्ट में पुतिन से मिलने वाले थे, लेकिन बाद में उन्होंने कहा कि वह ऐसी बैठक नहीं करना चाहते जो बेकार साबित हो। इसके ठीक अगले दिन, रूसी कंपनियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। ट्रंप सरकार का मानना है कि रूस युद्ध में अपने तेल व्यापार के दम पर टिका हुआ है। इसलिए, यह कदम रूस पर दबाव बनाने के लिए उठाया गया है। पहले भी अमेरिका रूसी तेल पर आपत्ति जताता रहा है, लेकिन भारत और चीन के जरिए इसके व्यापार की छूट देता रहा था। अमेरिकी सहमति के कारण ही दुनिया में तेल की सप्लाई पहले की तरह जारी थी। लेकिन अब नए प्रतिबंध सीधे कंपनियों पर लगाए गए हैं। इसका मतलब है कि इन कंपनियों के साथ किसी भी तरह का व्यापार करना बहुत मुश्किल हो जाएगा। रूस ग्लोबल ऑयल प्रोडक्शन का 11% हिस्सा रखता है, और ये दोनों कंपनियां इसमें से लगभग आधा उत्पादन करती हैं। इन पर बैन लगने से कच्चे तेल की ग्लोबल सप्लाई घट सकती है। हालांकि ओपेक देशों ने अमेरिका के कहने पर पहले ही उत्पादन बढ़ा दिया है, लेकिन रूस के सस्ते तेल की कमी को पूरा करना आसान नहीं होगा। अमेरिकी प्रतिबंधों का असर भारत पर भी पड़ेगा। रिलायंस इंडस्ट्रीज और अन्य सरकारी व निजी तेल रिफाइनरी कंपनियां रूसी तेल पर बहुत ज्यादा निर्भर हैं। रिलायंस तो Rosneft की सबसे बड़ी भारतीय खरीदार है। भारतीय कंपनियों ने रूस से तेल खरीदना कम करने की तैयारी शुरू कर दी है। अमेरिकी बैन के बाद ब्रेंट क्रूड के दाम में 5% का उछाल आया है। 21 नवंबर से जब ये प्रतिबंध पूरी तरह लागू हो जाएंगे, तो क्रूड ऑयल की कीमतों में और तेजी आ सकती है। यह भारत जैसे देशों के लिए चिंता की बात है, क्योंकि भारत अपनी 85% तेल जरूरतें आयात से पूरी करता है। यह स्थिति भारत के लिए एक बड़ी चुनौती पेश करती है। भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वैकल्पिक स्रोतों की तलाश करनी होगी। रूसी तेल पर निर्भरता कम करने के लिए सरकार और कंपनियों को मिल कर काम करना होगा। यह देखना होगा कि भारत इस मुश्किल दौर से कैसे निपटता है। यह प्रतिबंध सिर्फ.रूस पर ही नहीं, बल्कि उन देशों पर भी असर डालेगा जो रूस से तेल खरीदते हैं। तेल की बढ़ती कीमतें आम आदमी की जेब पर भारी पड़ेंगी। पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ेंगे, जिससे महंगाई और बढ़ेगी। सरकार को इस स्थिति से निपटने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या अमेरिका अपने प्रतिबंधों पर कायम रहता है या फिर बातचीत के जरिए कोई समाधान निकलता है।

रूसी तेल पर निर्भरता कम करने के लिए सरकार और कंपनियों को मिलकर काम करना होगा। यह देखना होगा कि भारत इस मुश्किल दौर से कैसे निपटता है। यह प्रतिबंध सिर्फ.रूस पर ही नहीं, बल्कि उन देशों पर भी असर डालेगा जो रूस से तेल खरीदते हैं।

अभिमत
आजाद सिपाही

चार दिवसीय इस अनुष्ठान का प्रत्येक चरण अपने आप में एक पूर्ण दर्शन समेटे हुए है। 'नहाय-खाय' का दिन केवल शारीरिक शुद्धि का प्रतीक नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक शुद्धि का संकल्प है। जब व्रती स्नान करके शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करता है, तो वह अपने भीतर के समस्त विकारों को त्यागने का प्रण लेता है। 'खरना' का दिन त्याग और समर्पण की पराकाष्ठा है–जब व्रती पूरे दिन निराहार रहकर संध्या में मीठी खीर का प्रसाद बनाता है, तो यह उसके जीवन के कड़वे-मीठे अनुभवों का प्रतीक बन जाता है।

छठ पूजा : आस्था, पर्यावरण और सामाजिक समरसता का महापर्व

प्रो तपन शांडिल्य

भारतीय सनातन संस्कृति के हृदय में विराजमान छठ पूजा का महापर्व केवल एक धार्मिक अनुष्ठान मात्र नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक महाकाव्य है जो आस्था के सूर्य को पर्यावरण की नदियों में स्नान कराता हुआ सामाजिक समरसता के उस तट पर पहुँचता है जहाँ मानवता का मूल सार प्रकट होता है। यह पर्व उस सनातन सत्य का दर्पण है जो हमें सिखाता है कि ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा प्रकृति का सम्मान है, और मानव का सबसे बड़ा धर्म मानवता की सेवा। प्रकृति के पाँच तत्वों–आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी–के प्रति कृतज्ञता का यह उत्सव मनुष्य को उसके मूल से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम बन जाता है। इस पर्व की ऐतिहासिक यात्रा अत्यंत गहन और रोमांचक है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक के इस सफर में छठ ने न केवल अपनी मौलिकता को बनाए रखा, बल्कि प्रत्येक युग में नए अर्थ और नई व्याख्याएँ ग्रहण करती रही। प्राचीन ग्रंथों और लोकमान्यताओं में इसके प्रमाण बिखरे पड़े हैं–माता सीता ने जब अयोध्या लौटकर सूर्योपासना की, तो वह केवल एक रानी का अनुष्ठान नहीं था, बल्कि समस्त जनता के कल्याण की कामना थी। जब द्रौपदी ने इस व्रत को किया, तो वह केवल राजसी ऐश्वर्य की कामना नहीं थी, बल्कि धर्म की स्थापना का संकल्प था। कालांतर में यह राजमहलों से निकलकर आम जनता के हृदय में बस गया और लोकपर्व बन गया।

छठ पूजा वह दिव्य साधना है जो मनुष्य को मनुष्य से, मनुष्य को प्रकृति से, और मनुष्य को परमात्मा से जोड़ती है।

छठ पूजा का दार्शनिक पक्ष अत्यंत गहन और विचारणीय है। यह पर्व हमें सिखाता है कि सूर्य केवल एक खगोलीय पिंड नहीं, बल्कि समस्त जीवन का आधार है। उसकी प्रत्येक किरण में समाहित है ऊर्जा का अथम सागर, और उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मानव का नैसर्गिक धर्म है। जल हमारे जीवन का आधार है, और माटी हमारी पहचान–इन तीनों के प्रति श्रद्धा रखना हमारी सांस्कृतिक विरासत का मूल मंत्र है। यह पर्व प्रकृति और मनुष्य के बीच के उस अटूट रिश्ते को पुनर्स्थापित करता है जो आधुनिकता की भागदौड़ में कहीं खो सा गया है।

चार दिवसीय इस अनुष्ठान का प्रत्येक चरण अपने आप में एक पूर्ण दर्शन समेटे हुए है। 'नहाय-खाय' का दिन केवल शारीरिक शुद्धि का प्रतीक नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक शुद्धि का संकल्प है। जब व्रती स्नान करके शुद्ध सात्त्विक भोजन ग्रहण करता है, तो वह अपने भीतर के समस्त विकारों को त्यागने का प्रण लेता है। 'खरना' का दिन त्याग और समर्पण की पराकाष्ठा है–जब व्रती पूरे दिन निराहार रहकर संध्या में मीठी खीर का प्रसाद बनाता है, तो यह उसके जीवन के कड़वे-मीठे अनुभवों का प्रतीक बन जाता है। इस प्रसाद का समस्त समुदाय के साथ वितरण सामूहिकता और साझेदारी की उस भावना को जन्म देता है जो आज के व्यक्तिवादी युग में कहीं विलुप्त होती जा रही है।

'संध्या अर्घ्य' और 'प्रातः अर्घ्य' का दृश्य तो अवर्णनीय है। जब लाखों व्रती एक साथ नदियों और तालाबों के घाटों पर इकट्ठा होते हैं, तो यह मानो मानवता का समुद्र लहरा उठता है। हाथों में सजे सूपों में रखे प्रसाद केवल फल-मिठाई नहीं, बल्कि हर व्यक्ति की आशाएँ, आकांक्षाएं और अराधना हैं। लोकगीतों की मधुर स्वरलहरियाँ केवल सुर-ताल का संगम नहीं, बल्कि सदियों से चली आ रही परंपरा की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। केलवा जे पानी के... और उग हे सूर्य देव... जैसे गीतों में समाहित है एक सम्पूर्ण सभ्यता का सांस्कृतिक इतिहास।

सामाजिक दृष्टि से छठ पूजा भारतीय लोकतंत्र की मूल भावना को प्रतिबिंबित करती है। यह वह अद्भुत पर्व है जहाँ सभी भेदभाव ध्वस्त हो जाते हैं। घाट पर खड़ा हर व्यक्ति–चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग या सम्प्रदाय से हो–एक समान है। सबकी आस्था एक, सबका उद्देश्य एक। यह सामाजिक समरसता का वह आदर्श प्रतिमान है जिसकी कल्पना महान समाज सुधारकों ने की थी। गाँव-गाँव, शहर-शहर में लोग स्वतःस्फूर्त रूप से घाटों की सफाई में जुट जाते हैं, पूजन सामग्री का प्रबंध करते हैं, और एक-दूसरे की सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। यह देखकर लगता है मानो सम्पूर्ण समाज एक बड़े परिवार में बदल गया हो।

सांस्कृतिक संदर्भ में छठ पूजा लोक कला और लोक संगीत का एक जीवंत संग्रहालय है। यह पर्व लोकगीतों, लोककथाओं और लोकशैलियों को संरक्षित करने का एक सशक्त माध्यम है। पारम्परिक वेशभूषा में सजी महिलाएँ जब घाटों पर जाती हैं, तो वह दृश्य केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रदर्शन बन जाता है। बांस के सूप-दौरे, केले के पत्ते, गन्ने के झौंप और नारियल-केले की सजावट–ये सब मिलकर एक ऐसा लोकसौंदर्य रचते हैं जो आधुनिक डिजाइनों को भी चुनौती देता है।

पर्यावरणीय दृष्टि से छठ पूजा आज के युग की सबसे प्रासंगिक आराधना है। यह पर्व प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी का स्मरण कराता है। सूर्य की उपासना हमें याद दिलाती है कि नवीकरणीय ऊर्जा के इस स्रोत का सम्मान करना हमारा नैतिक दायित्व है। नदियों और तालाबों की सफाई पर बल देना हमें जल संरक्षण का संदेश देता है। प्राकृतिक संसाधनों के प्रति यह संवेदनशीलता आज के पर्यावरणीय संकट के समय में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

आर्थिक पहलू से भी यह पर्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्थानीय अर्थव्यवस्था को इससे बल मिलता है–कुम्हार, बढ़ई, किसान, फल विक्रेता, सभी को इस पर्व से रोजगार मिलता है। हस्तशिल्प और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा मिलता है। यह पर्व वास्तव में 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र का जीवंत उदाहरण है।

नारी शक्ति के संदर्भ में छठ पूजा एक क्रांतिकारी पर्व है। यहां नारी के त्याग, तपस्या और संकल्प शक्ति की अद्भुत अभिव्यक्ति होती है। व्रत रखने वाली महिलाएं न केवल अपने परिवार के लिए, बल्कि समस्त समाज की भलाई की कामना करती हैं। उनकी यह साधना हमें सिखाती है कि नारी शक्ति ही वह मूल आधार है जिस पर सम्पूर्ण सृष्टि टिकी हुई है।

अंततः, छठ पूजा भारतीय संस्कृति का वह स्वर्णिम अध्याय है, जो हमें सिखाता है कि सच्ची आध्यात्मिकता का मार्ग प्रकृति प्रेम, आत्मानुशासन और सामाजिक सद्भाव से होकर गुजरता है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि हम प्रकृति के अंग हैं, उसके स्वामी नहीं। जब तक हम इस सत्य को समझते रहेंगे, तब तक हमारा जीवन सार्थक और समृद्ध बना रहेगा। छठ पूजा वह दिव्य साधना है जो मनुष्य को मनुष्य से, मनुष्य को प्रकृति से, और मनुष्य को परमात्मा से जोड़ती है। यह त्रिवेणी संगम ही इस पर्व की सनातन सार्थकता है।

(लेखक : डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय रांची के पूर्व कुलपति, हैं।)

कोल्हान की खबरें

बिरसानगर विजया गार्डेन में तलाकशुदा महिला पर जानलेवा हमला, मामला दर्ज

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। बिरसानगर थाना क्षेत्र के विजया गार्डेन में एक तलाकशुदा महिला पर उसके पूर्व पति द्वारा जानलेवा हमला किये जाने का एक मामला सामने आया है। शनिवार को घटना के बाद पीड़िता डॉ. पूर्णिमा ने बिरसानगर थाने में लिखित शिकायत दर्ज करायी। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की कारवाई शुरू कर दी। मिली जानकारी के अनुसार, डॉ. पूर्णिमा का तलाक उसके पति विकास से तीन वर्ष पूर्व हो चुका है। उन्होंने बताया 24 अक्टूबर को वह विजया गार्डेन स्थित अपनी जमीन के गड्ढ़े को भरवाने का कार्य करा रही थीं। इसी दौरान विकास वहां पहुंच गया और विवाद करने लगा। विवाद के दौरान उसने डॉ. पूर्णिमा के साथ मारपीट की और उसे जमीन पर पटक दिया, जिससे उनके शरीर के कई हिस्सों में चोटें आईं। पीड़िता ने पुलिस को बताया तलाक के बाद भी विकास लगातार उसे शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करता रहा है। डॉ. पूर्णिमा ने प्रशासन से न्याय की गुहार लगायी। पुलिस के अनुसार शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर लिया गया। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। घायल डॉ. पूर्णिमा का इलाज स्थानीय अस्पताल में चल रही है।

विधायक सरयू राय ने किया छठ घाटों का निरीक्षण, दिये सुधार के निर्देश

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। जमशेदपुर पश्चिम के विधायक सरयू राय ने शनिवार को कदमा एवं सोनारी के विभिन्न छठ घाटों का दौरा किया। छठ घाटों का दौरा कदमा के शास्त्रीनगर ब्लॉक नंबर 3 से प्रारंभ किया गया। श्री राय ने रामजनमनगर, सतीघाट होते हुए सोनारी के दोमुहानी मूर्ति विसर्जन घाट, एलएण्डटी घाट सहित अन्य छठ घाटों का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान विधायक सरयू राय ने इन सभी घाटों पर महापर्व छठ के मद्देनजर की गयी तैयारियों का जायजा लिया और इसमें जो भी कमी नजर आयी उसमें सुधार करने के लिए जमशेदपुर अक्षेस के उप नगर आयुक्त को निर्देश दिया। सरयू राय ने कहा कि महापर्व छठ में श्रद्धालुओं को कोई भी कठिनाई और परेशानी न हो इसका ध्यान रखा जाये। भ्रमण के अवसर पर मुख्य रूप से जमशेदपुर पश्चिम के जनसुविधा प्रतिनिधि मुकुल मिश्रा, सरयू राय के सचिव मुन्ना सिंह, जदयू कदमा मंडल के अध्यक्ष तारक मुखर्जी, सोनारी के विधायक जनसुविधा प्रतिनिधि रवि ठाकुर, वरिष्ठ नेता राकेश सिंह, मनोज सिंह, सुरंजन राय, शेषनाथ पाठक, प्रदीप सिंह, विनोद सिंह, सुप्रियो घोष, संदीप पांडेय, लक्ष्मीनारायण तिवारी, विश्वजीत सिंह राठौड़, अशोक सिंह, महेंद्र यादव, काजल चौधरी, बिनोद सिंह नरेश बागती, सुप्रीयो घोष, अतुल सिंह, लालू रजक, अजय सिंह आदि मौजूद रहे।

चोरी रोकने के लिए बना बाइक दस्ता

डीएसपी स्तर के अधिकारी भी रहेंगे शामिल

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। छठ महापर्व के दौरान घरों में चोरी की बढ़ती घटनाओं पर रोक लगाने के लिए जमशेदपुर पुलिस ने विशेष तैयारी की। शनिवार को सिटी एसपी कुमार शिवाशीष ने साकची सीसीआर से बाइक दस्ता को हरि झंडी दिखाकर रवाना किया। सिटी एसपी ने बताया छठ पर्व के दौरान अधिकांश लोग पूजा में व्यस्त रहते हैं। ऐसे में चोर गिरोह सक्रिय हो जाते। इस पर नियंत्रण पाने के उद्देश्य से शहर में बाइक दस्ते को तैनात किया गया। यह व्यवस्था बीते वर्ष भी प्रभावी साबित हुई थी। रेसीडेंसियल सोसायटी और धार्मिक स्थलों पर विशेष निगरानी।सिटी एसपी ने बताया बाइक दस्ता शहर की विभिन्न रेसीडेंसियल सोसायटियों में जाकर सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा करेगी और सुरक्षा गार्डों को आवश्यक दिशा-निर्देश देगी। साथ ही मंदिरों और मस्जिदों के आसपास भी सुरक्षा व्यवस्था पर पैनी नजर रखी जायेगी। डीएसपी स्तर के अधिकारी भी रहेंगे शामिल।

उन्होंने बताया इस विशेष दस्ते में डीएसपी स्तर के अधिकारी भी शामिल किये गये हैं। जो बाजारों और छठ घाटों पर लगातार निगरानी रखेंगे ताकि किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके।

20 सदस्यीय सिविल दस्ता भी सक्रिय

साथ ही 20 पुलिसकर्मियों का सीविल दस्ता भी बाइक से गश्त करेगी। इनकी जिम्मेदारी अड्डेबाजी या संदिग्ध गतिविधियों पर तुरंत कार्रवाई करना। संदिग्ध व्यक्तियों को पकड़कर थाने लाया जाएगा।बाइक दस्ते के अलावा शहर के संवेदनशील इलाकों में पैदल गश्ती की भी योजना बनाई गई है। सभी पुलिसकर्मियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देकर रवाना किया गया है।सिटी एसपी कुमार शिवाशीष ने नागरिकों से अपील की वे छठ पर्व को शांतिपूर्ण और सुरक्षित माहौल में संपन्न कराने के लिए पुलिस प्रशासन को सहयोग दें।

निर्वाचन पदाधिकारी पर मनमानी का आरोप

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। सृष्टि महिला विकास सहयोग समिति की पूर्व अध्यक्ष रानी गुप्ता ने निर्वाचन पदाधिकारी सुदामा प्रसाद पर निर्वाचन प्रक्रिया को गलत तरीके से संचालित करने का गंभीर आरोप लगाया है। उन्होंने इस संबंध में जिले के डीसी, निबंधक, सहयोग समितियों को लिखित शिकायत दी। रानी गुप्ता का आरोप है समिति के चुनाव की जानकारी उन्हें और अन्य सदस्यों को नहीं दी गयी। निर्वाचन कार्यक्रम की प्रति समिति मुख्यालय में चस्पा भी नहीं दी गयी। इससे स्पष्ट होता है यह झारखंड सहकारी समिति नियमावली 1959 की धारा 21 का उल्लंघन है। रानी गुप्ता का कहना है निर्वाचन पदाधिकारी सुदामा प्रसाद ने रीना सेनापति को लाभ पहुँचाने के लिए जानबूझकर सूचना पत्र को हटाया है। रानी गुप्ता के अनुसार, जब वे 16 अक्टूबर को नामांकन दाखिल करने पहुंचीं, तो निर्वाचन पदाधिकारी स्थल पर मौजूद नहीं थे। उनको नामांकन प्रत्र देने से भी इंकार किया गया। उन्होंने आरोप लगाया निर्वाचन पदाधिकारी ने रीना सेनापति के नामांकन पर दी गयी आपत्ति की पावती नहीं दी और नामांकन सूची का प्रकाशन भी नहीं किया। रानी गुप्ता का कहना है पूरे कार्यक्रम के दौरान रीना सेनापति निर्वाचन पदाधिकारी के साथ मौजूद थीं। जिससे निष्पक्षता पर सवाल उठता है। पूर्व अध्यक्ष रानी गुप्ता ने मांग की है निर्वाचन प्रक्रिया पर तत्काल रोक लगायी जाये और निर्वाचन पदाधिकारी के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाये। ताकि भविष्य में इस तरह की अनियमितताएं दोबारा न हों सके।

छठ पर्व की तैयारियों को लेकर एसपी ने छठ घाटों का किया निरीक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। आगामी छठ पर्व को लेकर सरायकेला जिला प्रशासन पूरी तरह सक्रिय है। जिले के एसपी मुकेश लुनायत ने सरायकेला के विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया। उनके साथ एसडीओ निवेदिता नियति और नगर पंचायत के नगर प्रशासक समीर बोदरा मौजूद रहे। निरीक्षण के दौरान एसपी ने संबंधित अधिकारियों को श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा व्यवस्था, और विधि-व्यवस्था नियंत्रण पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिये। उन्होंने कहा घाटों पर भीड़ के समय पुलिस बल की पर्याप्त तैनाती सुनिश्चित की जायेगी ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। इस अवसर पर पूर्व उपाध्यक्ष मनोज कुमार चौधरी भी उपस्थित रहे। मौके पर अधिकारियों ने घाटों की साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था और यातायात नियंत्रण की तैयारियों की भी समीक्षा की। गौरतलब है पूर्व में डीसी नितिश कुमार सिंह और एसपी मुकेश लुनायत ने आदित्यपुर और आरआइटी क्षेत्र के विभिन्न छठ घाटों का भी निरीक्षण कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिये थे। प्रशासन ने आश्वासन दिया छठ पर्व को शांतिपूर्ण और श्रद्धामय वातावरण में संपन्न कराने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूरी की जा रही हैं।

निर्मल नगर में कचरे के ढेर में लगी आग, बड़ा हादसा टला

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। आदित्यपुर थाना क्षेत्र के निर्मल नगर में कचरे के ढेर में अचानक आग लग गयी। आग की लपटें इतनी तेज थीं आसपास की झाड़ियां और फाइबर के केबल का ढेर भी इसकी चपेट में आ गया। घटना की सूचना मिलते ही अग्निशमन विभाग और स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और त्वरित कार्रवाई करते हुए आग पर काबू पाया। स्थानीय लोगों के अनुसार कुछ असामाजिक तत्वों ने कचरे में आग लगा दी थी, जिससे यह तेजी से फैल गयी। अगर समय रहते दमकल मौके पर नहीं पहुंचती तो आग पास के घरों तक फैल सकती थी और बड़ा हादसा हो सकता था। अग्निशमन विभाग के पदाधिकारी ने बताया ठंड के मौसम के कारण आग ज्यादा नहीं फैल पायी। उन्होंने चेतावनी दी गर्मी के मौसम में इस तरह की लापरवाही गंभीर परिणाम ला सकती है। स्थानीय लोगों ने अग्निशमन दल की तत्परता की सराहना की और कहा कि विभाग की त्वरित कार्रवाई से एक बड़ी दुर्घटना टल गयी।

रंका बीडीओ ने छठ घाटों का किया निरीक्षण

रंका (आजाद सिपाही)। बीडीओ शुभम बेला तोपनों ने शनिवार को विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया और पूजा से जुड़ी पूजा समितियों को छठ घाट पर आवश्यक सुरक्षा से संबंधित उपाय करने का निर्देश दिया। इस दौरान बीडीओ ने कहा कि इस वर्ष नदियों एवं तालाबों में गहराई का स्तर ज्यादा बढ़ी है। ऐसे में समस्त छठ पूजा समितियों की जिम्मेदारी काफी ज्यादा ही बढ़ गई है। इसलिए छठ पूजा समिति से जुड़े लोग यह विशेष रूप से ध्यान देने का काम करेंगे कि बच्चे गहरे पानी के नजदीक नहीं जाएं। गहरे पानी के पास सांकेतिक रूप से वेरीकेड किया जाए। साथ ही ध्वनि विस्तारक यंत्रों के माध्यम से समय-समय पर लोगों को इस बात पर ध्यान भी आकृष्ट कराया जाए। हालांकि समस्त छठ पूजा घाटों पर साफ-सफाई की व्यवस्था संतोषजनक पाई गई। ज्ञात हो कि रंका प्रखंड मुख्यालय के विभिन्न घाटों पर छठ पूजा को लेकर तैयारी पूरी हो चुकी है। प्रखंड मुख्यालय के विभिन्न छठ घाटों जैसे बाजार नदी पुल छठ घाट, बड़ा तालाब छठ घाट, गिदियाही नदी छठ घाट एवं नक्षत्र वन छठ घाट सहित विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न छठ घाटों पर तैयारी को अंतिम रूप देने में पूजा समिति के लोग निरंतर लगे हुए हैं। इस मौके पर पंचायती राज के प्रखंड समन्वयक कीर्ति गुप्ता, रंकाकला के पंचायत सहायक अमरेंद्र कुमार, छठ पूजा समिति के संरक्षक अमर कुमार सिंह, सदस्य मुकेश चौधरी आदि उपस्थित थे।

मेराल थाना प्रभारी ने किया छठ घाटों का निरीक्षण

मेराल (आजाद सिपाही)। थाना प्रभारी विष्णु कांत ने छठ पूजा से पूर्व मुख्यालय के सभी छठ घाटों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने पूजा समिति के लोगों से साफ-सफाई, लाइट साउंड सहित अन्य विधि व्यवस्था की जानकारी ली और सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिया आवश्य निर्देश दिए। मेराल के सबसे पुराना बर नदी शिव मंदिर छठ घाट के निरीक्षण के अवसर पर उपस्थित प्रसिद्ध मां शायर देवी धाम संचालन समिति के मुख्य संरक्षक संजय भगत, मुखिया रामसागर महतो, विनोद प्रसाद, सतीश प्रसाद आदि को समाजसेवी अजय प्रसाद गुप्ता ने रविवार की सुबह 8 बजे से डंडई रोड स्थित अपने आवास पर इस वर्ष भी स्टॉल लगाकर छठ व्रतियों के बीच अन्न, फल आदि का वितरण समारोह में समय पर पहुंचने का निमंत्रण दिया। थाना प्रभारी ने सबसे पहले मुड़ल टोला यूरिया नदी छठ घाट पर मुखिया रामसागर महतो के साथ पहुंचे जहां नवयुवक फ्रेंड्स क्लब द्वारा बनाए गए पीपा पुल एवं संस्कृतिक कार्यक्रम की जानकारी ली। इसी तरह नेनुआ मोड सरस्वती नदी छठ घाट पर सनराइज फैंस क्लब द्वारा किये जा रहे 19वें भव्य आयोजन की जानकारी ली। इसके बाद मकूना तालाब छठ घाट, स्टेशन रोड में छःआना टोला शिव मंदिर छठ घाट के पश्चात प्रसिद्ध मां शायर देवी धाम के समीप प्राचीन शिव मंदिर शिवाला छठ घाट पर पूजा समिति की ओर से किये जा रहे द्वितीय भव्य और आकर्षक सजावट भगवान सूर्य की स्थापित की जाने वाली प्रतिमा और अन्य जानकारी लेने के बाद कई निर्देश दिया। इस मौके पर धनंजय चौधरी, विनोद चौधरी, सुदर्शन चौधरी, कमलेश कुमार, विजय प्रसाद, विनोद कुशवाहा, उदय कुशवाहा, सूर्य प्रकाश, अभय कुमार, प्रमोद महाजन, मनोज जायसवाल और जहूर रंगसाज आदि उपस्थित रहे।

थाना प्रभारी ने किया धुरकी के विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण

सगमा/धुरकी/गढ़वा (आजाद सिपाही)। लोक आस्था के महापर्व छठ को लेकर धुरकी क्षेत्र में तैयारियां जोरों पर हैं। इसी क्रम में शनिवार को धुरकी थाना प्रभारी जनार्दन राउत ने धुरकी सहित सगमा प्रखंड के विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया और स्वच्छता व्यवस्था का जायजा लिया। उनकी अगुवाई में पुलिस बल एवं स्थानीय ग्रामीणों की मदद से घाटों पर साफ-सफाई अभियान चलाया गया। थाना प्रभारी ने घाटों पर मौजूद जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों को निर्देश दिया कि श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सभी आवश्यक व्यवस्था समय पर पूरी कर ली जाए। जनार्दन राउत ने कहा कि छठ महापर्व लोक आस्था, पवित्रता और अनुशासन का पर्व है। इस दौरान स्वच्छता और सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने स्थानीय लोगों से अपील की कि वे प्रशासन के सहयोग से घाटों की साफ-सफाई और अनुशासन बनाए रखें। उन्होंने बताया कि पर्व के दौरान किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना से बचाव के लिए पुलिस बल की विशेष तैनाती की जाएगी। यह भी कहा कि सभी छठ घाटों पर प्रकाश व्यवस्था, बैरिकेडिंग और निगरानी की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है, ताकि श्रद्धालु निर्बाध रूप से सूर्य उपासना कर सकें।

मारुति नंदन सोनी ने घर-घर बांटी छठ पूजा सामग्री

मझिआंव/गढ़वा (आजाद सिपाही)। लोक आस्था के महापर्व छठ शनिवार को नहाय-खाय के साथ शुरू हो गयी। इस अवसर पर युवा समाजसेवी मारुति नंदन सोनी के नेतृत्व में नगर क्षेत्र के सभी वार्डों में गर-घर जाकर छठ पूजा सामग्री का वितरण किया गया। इस दौरान दिये जाने वाले किट में नारियल, धूप-अगरबत्ती, पचमेवा, और अन्य पूजन सामग्रियां शामिल हैं। इस अभियान की शुरूआत राधा कृष्ण मंदिर में की गई, जहां मंदिर के महंत केशव नारायण दास जी ने विधिवत पूजा-अर्चना कर इस धार्मिक कार्य का शुभारंभ किया। महंत जी ने कहा कि मारुति नंदन सोनी जैसे युवाओं के इस पुनीत प्रयास से समाज में सकारात्मक संदेश जाता है। छठ महापर्व केवल पूजा नहीं, बल्कि लोक संस्कृति और एकता का प्रतीक है।

श्रीराम सेना ने जेसीबी मशीन से करायी नदी की साफ-सफाई

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा को लेकर अवधूत भगवान सर्वेश्वरी आश्रम स्थित छठ घाट की साफ-सफाई लगभग पूरी कर ली गई है। शनिवार से ही घाटों की रौनक बढ़ गई है। स्थानीय युवाओं द्वारा उक्त घाट पर सुरक्षा, स्वच्छता और सुविधाओं की विशेष व्यवस्था की गई है, ताकि व्रतियों और श्रद्धालुओं को किसी प्रकार परेशानी न हो। इस दिन सर्वेश्वरी आश्रम स्थित छठ घाट पर श्रीराम सेना की ओर से जेसीबी मशीन से नदी की साफ-सफाई की गई। साथ ही भारी बारिश से क्षतिग्रस्त सड़क को भी ट्रैक्टर से मिट्टी गिरकर जेसीबी मशीन से समतल करते हुए व्रतियों के आवागमन के लिए सड़क को पूरी तरह से दुरुस्त कर दिया है। छठ घाट पर रंग रोगन के साथ ही सजावट और लाईटिंग का कार्य जारी है। इस कार्य में श्रीराम सेना के गौरव सिंह, अमृत सिंह, अर्पित, सौरभ, अंकित, आश्रम के सदस्य सुनील सिंह, बुचुल राम, प्रमोद बैठा, अरुण चौधरी आदि शामिल रहे।

पूर्व मंत्री ने किया विभिन्न छठ घाटों का भ्रमण, दिया जरूरी निर्देश

पूरे झारखंड-बिहार में प्रसिद्ध है गढ़वा का छठ : मिथिलेश ठाकुर

आजाद सिपाही संवाददाता

छठ घाट का भ्रमण करते पूर्व मंत्री मिथिलेश ठाकुर।

गढ़वा। झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री एवं झामुमो के केंद्रीय महासचिव मिथिलेश कुमार ठाकुर ने शनिवार को गढ़वा जिला मुख्यालय क्षेत्र के विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया। उन्होंने स्टूडेंट क्लब, फ्रेंडस क्लब, छठ सेवा समिति सहिजना आदि छठ घाटों का भ्रमण करने के बाद क्लबों के पदाधिकारियों के साथ तैयारियों की चर्चा की। साथ ही सभी को सहयोग किया। पूर्व मंत्री ने कहा कि चार दिवसीय छठ महापर्व शनिवार को नहाय खाय के साथ शुरूआत हो गई। गढ़वा के सभी क्लबों के पदाधिकारी, सदस्य एवं अन्य लोग भी तन, मन, धन से छठ महापर्व के वृहत आयोजन में काफी सहयोग करते हैं। यहां 15 दिन पहले से ही तैयारी शुरू कर दी जाती है। लोग दिन-रात लग कर काफी भव्य आयोजन करते हैं। उन्होंने कहा कि गढ़वा का छठ सिर्फ पूरे बिहार-झारखंड में भव्य एवं बेहतर आयोजन के लिए काफी प्रसिद्ध है। दूसरे राज्यों से लोग गढ़वा में छठ का आयोजन देखने आते हैं। क्लबों के लोग छठ व्रतियों को किसी प्रकार की कोई समस्या न हो, इसके लिए वे पूरा प्रयास करते हैं। मिथिलेश ठाकुर ने कहा कि छठ मईया एवं भगवान भाष्कर की कृपा हम सब पर बनी रहे। हमारे राज्य एवं पूरे देश में अमन, चैन एवं शांति कायम हो। पूरा देश खुशहाल हो एवं आगे बढ़े। इस मौके पर समाजसेवी राकेश पाल, बिनोद जायसवाल, जितेंद्र सिन्हा, सुनील केषरी, जगजीवन बघेल, चंदन जायसवाल, आशीष अग्रवाल, कंचन साहु, ओम प्रकाश गुप्ता, मनीष जायसवाल, दिलीप गुप्ता और दयाशंकर गुप्ता आदि उपस्थित थे।

आदिम जनजाति परिवारों से मिलकर सुरेंद्र विश्वकर्मा दी राहत सामग्री, पुनर्वास का दिया आश्वासन

गढ़वा/मेराल (आजाद सिपाही)। लोक आस्था के महापर्व छठ के 'नहाय-खाय' के अवसर पर, सुरेंद्र विश्वकर्मा ने गढ़वा जिले के मेराल प्रखंड की तीसरटेटुका पंचायत अंतर्गत ग्राम कोलोदोहर में निवास कर रहे आदिम जनजाति के विस्थापित परिवारों से मुलाकात की। विदित हो कि ग्राम बहेरवा दामर में रहने वाला यह परिवार जंगली हाथियों के उत्पात से गंभीर रूप से प्रभावित हैं। हाथियों ने इनके कई घरों को नष्ट कर दिया है। यही नहीं एक सदस्य को कुचलकर उसकी जान भी ले ली, जिसके बाद उक्त परिवार जीवनयापन के लिए अपने पैतृक स्थान को छोड़कर वर्तमान में ग्राम कोलोदोहर में झोपड़ी बनाकर रहने को मजबूर हैं। अखबारों के माध्यम से जानकारी मिलने के बाद सुरेंद्र विश्वकर्मा ने तत्काल इन परिवारों के बीच पहुंचकर उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान की। इस दौरान सभी प्रभावित परिवारों के लिए चावल, दाल, आलू, तेल, नमक, मसाला आदि आवश्यक खाद्य सामग्रियों के पैकेट वितरित किए। इस कार्य में उनके पुत्र संभव विश्वकर्मा ने भी सहयोग किया। लगे हाथ उन्होंने घोषणा की कि इन परिवारों के जो भी बच्चे उनके शिक्षण संस्थान में पढ़ना चाहेंगे, उन्हें पूर्णतः निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी। उन्होंने विस्थापित परिवारों को आश्वस्त किया कि उन्हें सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ मिल सके, इसके लिए व्यक्तिगत रूप से जिला प्रशासन से स्थाई पुनर्वास और सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने की मांग करेंगे। इस मौके पर मुखिया विष्णु यादव, अविनाश पासवान, रंजीत चौरसिया आदि उपस्थित रहे।

तेज रफ्तार बाइक ने ली राहगीर की जान

मेराल (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के छपरवार खूर्द गांव में शुक्रवार की देर शाम बाइक चालक ने एक राहगीर को टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसकी पहचान बेलचंपा गांव निवासी दीपक कुमार भुइयां (35) के रूप में हुई है। स्थानीय लोगों-परिजनों की मदद से उसे आनन फानन में गढ़वा सदर अस्पताल ले जाया गया जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने गंभीर स्थिति को देखते हुए रांची के रिम्स अस्पताल रेफर कर दिया। हालांकि रांची ले जाने के क्रम में रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। उसका शव घर पहुंचते ही परिजनों में कोहराम मच गया। उधर, घटना से आक्रोशित लोगों ने गढ़वा-मझिआंव मुख्य मार्ग को जाम कर दिया। इसकी सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची मेराल पुलिस ने बाइक चालक पर प्राथमिकी दर्ज करने और मुआवजा दिलाने आदि आश्वासन के बाद लोगों को समझा बुझाकर यातायात बहाल कराया। इसके बाद शव को अंत्य परीक्षण के लिए गढ़वा सदर अस्पताल भेज दिया।

ग्रामीणों ने श्रमदान कर बनाई तीन किलोमीटर सड़क

धुरकी (आजाद सिपाही)। प्रखंड के रक्सी गांव के पंचफेडी टोला में लगभग 50 घर है। जहां आजादी से ले कर अब तक सड़क नसीब नहीं हुआ। ग्रामीणों ने तंग आकर चंदा जुटाया और श्रमदान कर खुद से ही तीन किलोमीटर लंबी सड़क बना दी। ग्रामीणों ने बताया कि मरीजों को चारपाई पर ले जाना पड़ता था। युवाओं का कहना है कि अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से सड़क की उम्मीद करना व्यर्थ है। जनप्रतिनिधि भी सिर्फ वोट लेने के लिए गांव आते हैं लेकिन चुनाव खत्म होने के बाद वापस नहीं आते हैं। किसी की तबीयत खराब होने पर डोली टोला तक मरीज को लाना पडता है। इसके बाद ही वाहन मिलती है। थकहार कर लोगों ने खुद से ही सड़क की मरम्मति कर अपने लिए रास्ता बना लिया।

नहाय-खाय के साथ शुरू हुआ लोक आस्था का महापर्व छठ

व्रतियों ने शुद्धता के साथ किया आरंभ, खरना आज

आजाद सिपाही संवाददाता

कांडी। भगवान सूर्य की उपासना का चार दिवसीय लोक आस्था का महापर्व छठ शनिवार को नहाय-खाय के साथ श्रद्धा और भक्ति भाव से प्रारंभ हुआ। व्रती महिलाओं ने दिनभर पूर्ण शुद्धता के साथ व्रत रखकर पूजा-अर्चना की और सायंकाल लौकी, चावल, चने की दाल, घी, सेंधा नमक व रोटी का सेवन कर व्रत का शुभारंभ किया। रविवार को व्रती खरना का व्रत करेंगी। इसके बाद ही 36 घंटे का निर्जल उपवास प्रारंभ होगा। सोमवार को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने के साथ महापर्व का मुख्य आयोजन होगा। इस दौरान नदियों, सरोवरों और तालाबों के घाटों पर श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ेगा। मंगलवार की सुबह उदयाचल सूर्य को अर्घ्य देने के बाद व्रत का समापन होगा। इसे लेकर क्षेत्र की व्रती परिवारों में उत्साह का माहौल है। घरों की विधिवत सफाई के साथ छठ पूजन की तैयारियां जोरों पर हैं। महिलाएं ठेकुआ, मीठी पूड़ी एवं अन्य पारंपरिक प्रसाद बना रही हैं।

आरके पब्लिक स्कूल में महापर्व 'छठ' पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

गढ़वा (आजाद सिपाही)। लोक आस्था का महापर्व 'छठ पूजा ' के अवसर पर आरके पब्लिक स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाएं और छात्र-छात्राओं ने श्रद्धा एवं भक्ति से भाग लिया। इस अवसर पर स्कूल के निदेशक सह शिक्षाविद् अलखनाथ पांडेय ने कहा कि लोक आस्था का महापर्व छठ चार दिनों तक चलने वाला अनुष्ठान है, जिसमें विशेष नियमों का पालन किया जाता है। आजकल युवा -किशोर रियल लाइफ से दूर होकर रील्स बनाने में रुचि रखते हैं जिससे वे अपनी संस्कृति और संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं। इस तरह के कार्यक्रमों से बच्चों में सांस्कृतिक विकास होता है और उनकी जड़ें अपनी परंपराओं से जुड़ी रहती है। छठ पूजा प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने और सूर्य देव की उपासना का प्रतीक है। कहा कि यह पर्व जीवन में सकारात्मकता और शांति का संचार करता है। यह पर्व स्वच्छता, सादगी और प्रकृति के साथ जुड़ाव का प्रतीक है जिसका महत्व नई पीढ़ी को समझाना आवश्यक है। वहीं, स्कूल के बच्चों द्वारा छठ पर्व के पारंपरिक गीतों पर जीवंत झांकी ने लोगों को भक्ति भाव से सराबोर कर दिया। प्राचार्य संतोष पाण्डेय ने बताया कि छठ पूजा प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने और सूर्य देव की उपासना का प्रतीक है।

दो बाइक की टक्कर में दो घायल, एक गंभीर

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। भवनाथपुर-केतार मुख्य मार्ग के सिंघीताली मोड़ के समीप शनिवार को दो बाईकों के बीच हुई आमने-सामने की टक्कर में दो दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों में केतार थाना क्षेत्र के बीजडीह गांव निवासी बबन चंद्रवंशी और कैलान गांव निवासी धीरेंद्र यादव शामिल है। जानकारी के अनुसार बबन केतार से बाइक पर सवार होकर भवनाथपुर जा रहे थे, जबकि धीरेन्द्र यादव भवनाथपुर से बाईक से केतार जा रहे थे, तभी सिंघीताली मोड़ के पास जोरदार टक्कर हो गई। ग्रामीणों की मदद से घायलों को तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां बबन की हालत गंभीर देख सदर अस्पताल रेफर कर दिया।

स्थानांतरण के बाद भी योगदान नहीं बीआरसी विशुनपुरा का कामकाज ठप

मनचाही पोस्टिंग के लिए ऑफिस के चक्कर लगा रहे रवि शंकर कुमार

- जिला कार्यकारिणी समिति के आदेशों के बावजूद एक माह से लंबित योगदान

राजू सिंह

विशुनपुरा/गढ़वा (आजाद सिपाही)। जिला कार्यकारिणी समिति की बैठक में लिए गए निर्णय के आलोक में शिक्षा विभाग ने तीन वर्षों से अधिक एक ही स्थान पर पदस्थापित प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारियों और प्रबंधकों का स्थानांतरण किया था। इसके तहत कई पदाधिकारियों को नये प्रखंड संसाधन केंद्रों में पदस्थापित किया गया, ताकि कार्य में पारदर्शिता और गति लाई जा सके। विगत 27 सितंबर 2025 को आयोजित बैठक में लिये गये निर्णय के बाद गढ़वा जिला शिक्षा कार्यालय से आदेश निर्गत किया गया। जिसमें स्पष्ट उल्लेख था कि स्थानांतरित प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी/प्रबंधक अपने नए पदस्थापित प्रखंड संसाधन केंद्र में पत्र निर्गत होने के सात दिनों के अंदर योगदान दें और इसकी सूचना अधोहस्ताक्षरी को उपलब्ध कराएं। लेकिन आदेश जारी हुए लगभग एक महीना बीत चुका है, फिर भी विशुनपुरा प्रखंड संसाधन केंद्र पर स्थानांतरित रवि शंकर कुमार ने अब तक अपना योगदान नहीं दिया है। जानकारी के अनुसार, प्रखंड संसाधन केंद्र विशुनपुरा में कार्यरत सुदीप श्रीवास्तव का स्थानांतरण केतार प्रखंड में किया गया था, जहां उन्होंने समय पर योगदान दे दिया है। उनके स्थान पर भंडारिया प्रखंड से रवि शंकर कुमार को विशुनपुरा भेजा गया था, लेकिन उन्होंने अब तक पदभार नहीं संभाला है। वहीं, रविशंकर कुमार के स्थान पर गढ़वा से एडमुन कछप ने भंडारिया प्रखंड में योगदान दे दिया है, जबकि रविशंकर कुमार कार्यालय का चक्कर लगा रहे हैं, ताकि अपनी मनचाही जगह पर ज्वाइनिंग पा सकें। इस रवैये से प्रखंड संसाधन केंद्र विशुनपुरा का कार्य पूरी तरह ठप हो गया है। इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी से संपर्क करने पर उन्होंने बताया की उनके कार्यकाल का भुगतनान भुगतान लंबित के कारन अपना योगदान विशुनपुरा में नहीं दिये हैं। रवि शंकर कुमार बहुत जल्द विशुनपुरा में अपना योगदान देंगे। वहीं, स्थानीय शिक्षकों ने कहा कि यदि अधिकारी स्थानांतरण आदेश का पालन नहीं करेंगे तो शिक्षा व्यवस्था प्रभावित होगी। विभाग को ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

हजारीबाग नगर निगम, हजारीबाग

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं॰ 36/2025–26

Urban Transport

Sl. no.	Name of Scheme	Estimated Cost	Earnest Money	Tender Fee	Completion of period of work
1	Laying of Paver Block from Munna Singh chowk to H/o Ram Kishun Saw in ward no. 19 under Municipal Corporation Hazaribag.	9,10,000/-	19,000/-	5,900/-	90 Days
2	Construction of new P.C.C. road from H/O Devendar Kr. Singh to H/O Rajesh Soni in Jai Mata Di gali at Baba path & repair of PCC road near retired ADJ in Subhas Nagar in ward no 34 (Thirty Four) Under Municipal Corporation Hazaribag.	9,33,700/-	19,000/-	5,900/-	90 Days
3	Construction of Paver Block Road from The House of Manish Pathak to The House of Rajesh Kasera in ward no. 25 under Municipal Corporation, Hazaribag	9,98,900	20,000/-	5,900/-	90 Days
4	Laying of Paver Block from Dushad Mohalla to H/o Raju Kumar to H/o Mahendra Ram in ward no. 32 under Municipal Corporation, Hazaribag	9,98,000/-	20,000/-	5,900/-	90 Days

1. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : नगर निगम कार्यालय, हजारीबाग
   तिथि एवं समय : दिनांक 12.11.2025 को 11.00 बजे पूर्वाह्न से 2.00 बजे अपराह्न तक
2. निविदा प्राप्ति का स्थान : नगर निगम कार्यालय, हजारीबाग
   तिथि एवं समय : दिनांक 13.11.2025 को 11.00 बजे पूर्वाह्न से 2.00 बजे अपराह्न तक
3. निविदा खोलने का स्थान : नगर निगम कार्यालय, हजारीबाग
   तिथि एवं समय : दिनांक 13.11.2025 को 3.00 बजे अपराह्न
4. विज्ञापन दाता का पदनाम : नगर आयुक्त सह प्रशासक, नगर निगम, हजारीबाग।

नोट :–निविदा से संबंधित शर्ते एवं अन्य जानकारी कार्यालय अवधि में नगर निगम कार्यालय में देखा जा सकता है।

PR 364754 (Urban Development and Housing) 25-26 (D)

नगर आयुक्त सह प्रशासक
नगर निगम, हजारीबाग

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, खूँटी

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना

निविदा आमंत्रण सूचना सं0– 1025 दिनांक– 25.10.2025

1. विज्ञापनदाता का नाम एंव पता : कार्यपालक अभियंता, पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, खूँटी।
2. परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि : 30.10.2025 से 31.10.2025 को 12.00 बजे दिन से 4.00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एंव समय : 03.11.2025 के अपराह्न 3:00 बजे तक
4. निविदा खोलने की तिथि एंव समय : 03.11.2025 के अपराह्न 3:30 बजे
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थल : (i) मुख्य अभियंता (यातायात) का कार्यालय, पथ निर्माण विभाग, झारखण्ड, अभियंत्रण हॉस्टल,प्रथम तल्ला,धुर्वा, रॉची।
   (ii) अधीक्षण अभियंता, पथ निर्माण विभाग, पथ अंचल, रॉची।
   (iii) कार्यपालक अभियंता, पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, खूँटी।
6. निविदा प्राप्ति एंव खोलने का स्थान : क्रमांक 5 में उल्लेखित कार्यालय में क्रमांक 2, 3 एवं 4 में अंकित तिथि एवं समय अनुसार।
7. कार्य की विवरणी –

क्र0 सं0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रू0 में)	अग्रधन की राशि (रू0 में)	परिमाण विपत्र का मुल्य (रू0 में)	कार्य समाप्ति की अवधि
1	2	3	4	5	6
1.	SH-03 से उलिहातु पथ में Safety Work एवं अन्य कार्य।	25,00,000.00	50,000.00	5000.00	14 नवम्बर 2025
2.	सरसा (बेड़ो – खूँटी पथ) से दरंदा – लतरातु डेम भाया साई टेम्पल पथ के 2रे कि0मी0 में Retaining Wall निर्माण कार्य।	25,00,000.00	50,000.00	5000.00	एक माह पन्द्रह दिन
3.	कामडारा–बेड़ो पथ के 2रें कि0मी0 में अवस्थित पुल में सुरक्षात्मक कार्य।	25,00,000.00	50,000.00	5000.00	एक माह पन्द्रह दिन
4.	खूँटी–हितुटोला–मारंगहादा–तैमारा पथ के कि0मी0 26वें पर कल्भर्ट निर्माण कार्य एवं 4थें कि0मी0 में गार्डवाल का निर्माण कार्य।	25,00,000.00	50,000.00	5000.00	एक माह

1) निविदा की शर्ते सूचना पट पर देखा जा सकता है।
2) प्राक्कलित एवं अग्रधन की राशि घट – बढ़ सकती है, जो कि परिमाण विपत्र बिक्री के संमय देखा जा सकता है।

PR 364748 Road (25-26)_D

कार्यपालक अभियंता
प0नि0वि0, पथ प्रमण्डल, खूँटी

आजाद सिपाही
रांची, रविवार, 26 अक्टूबर, 2025
www.azadsipahi.in

नहाय-खाय के साथ सूर्योपासना का महापर्व छठ शुरू

आजाद सिपाही टीम

खूंटी। लोक आस्था और सूर्य उपासना का चार दिवसीय महापर्व छठ शनिवार से पूरे श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ आरंभ हो गया। पर्व की शुरूआत पर जिलेभर में नहाए-खाए का अनुष्ठान किया गया। महिलाओं ने स्नान कर घर की पवित्रता बनाए रखते हुए अरवा चावल, कद्दू की सब्जी और चने की दाल का प्रसाद ग्रहण किया। इसी के साथ व्रतियों ने शुद्धता और नियमों का पालन करते हुए अगले दिनों के अनुष्ठान की तैयारी शुरू कर दी है।

छठ व्रत को लेकर खूंटी के विभिन्न तालाबों, नदी घाटों और सरोवरों की साफ-सफाई का कार्य भी तेजी से चल रहा है। नगर पंचायत द्वारा घाटों पर सुरक्षा और प्रकाश की विशेष व्यवस्था की जा रही है। रविवार को खरना का व्रत होगा, जिसमें गुड़ से बने खीर-रोटी का प्रसाद तैयार किया जाएगा। सोमवार को अस्ताचलगामी सूर्य और मंगलवार को उदयाचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर व्रत का समापन होगा। छठ पर्व को लेकर खूंटी के गांवों और शहरों में भक्ति का माहौल छाया हुआ है। महिलाओं ने घरों की सफाई और सजावट शुरू कर दी है। दुकानों में पूजा सामग्री की खरीदारी बढ़ गई है। जगह-जगह लोकगीतों की गूंज और आस्था का वातावरण लोगों को उत्साह और एकता का संदेश दे रहा है।

सोनाहातू। भगवान भास्कर की आराधना का महापर्व छठ का चार दिवसीय अनुष्ठान शनिवार को नहाय - खाय से शुरू हुआ। रविवार को खरना पूजन के साथ 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू हो जाएगा। सोमवार की शाम अस्ताचलगामी सूर्य और मंगलवार को सुबह उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा।शनिवार को शोभन,रवि एवं सिद्ध योग के उत्तम संयोग में व्रती नहाय-खाय करेंगी। रविवार को रवियोग व सर्वार्थ सिद्धि योग में व्रती खरना का प्रसाद ग्रहण करेंगी।सोमवार को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के साथ सुकर्मा योग में अस्ताचलगामी सूर्य को एवं मंगलवार को त्रिपुष्कर एवं रवियोग का मंगलकारी संयोग में व्रती उगते सूर्य को अर्घ्य देने के बाद चार दिवसीय महापर्व का समापन पारण के साथ करेंगी। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार छठ व्रत करने की परंपरा ऋग्वैदिक काल से चली आ रही है।छठ महापर्व के पहले दिन में आज नहाय-खाय में लौकी की सब्जी, अरवा चावल, चने की दाल, आंवला की चासनी के सेवन का खास महत्व है। वैदिक मान्यता है कि इससे संतान प्राप्ति को लेकर व्रती पर छठी मैया की कृपा बरसती है। खरना के प्रसाद में ईख के कच्चे रस, गुड़ के सेवन से त्वचा रोग, आंख की पीड़ा समाप्त हो जाते है। इसके प्रसाद से तेजस्विता, निरोगिता व बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होती है। राहे में छठ को लेकर लोगों में काफी उत्साह है। कोकरो नदी घाट,बड़ा तालाब घाट और दुलमी तालाब घाट में अर्घ्य दिया जायेगा।

बुंडू। लोक आस्था का महापर्व छठ को लेकर बुंडू में तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। नगर पंचायत और प्रशासन की ओर से घाटों की सफाई, समतलीकरण और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर तेजी से काम किया जा रहा है। इसी क्रम में अनुमंडल पदाधिकारी किष्टो कुमार बेसरा ने शनिवार को बुंडू के कई छठ घाटों का निरीक्षण किया और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान अनुमंडल पदाधिकारी ने कहा कि जहां-जहां कमियां पाई जाएंगी, उन्हें तुरंत दुरुस्त कराया जाएगा ताकि किसी भी श्रद्धालु को असुविधा न हो। उन्होंने बताया कि गहरे पानी वाले इलाकों में मार्किंग, गोताखोरों की तैनाती, बैरिकेडिंग,और वालंटियर्स की संख्या बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके साथ ही छठ पर्व के दौरान चारों ओर पुलिस बल और दंडाधिकारी की तैनाती रहेगी ताकि विधि-व्यवस्था पर पूरी नजर रखी जा सके। अनुमंडल पदाधिकारी ने नगर पंचायत को साफ-सफाई और प्रकाश व्यवस्था को लेकर भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रशासन की कोशिश है कि बुंडू में छठ मनाने आने वाले सभी व्रती और श्रद्धालु सुरक्षित और स्वच्छ माहौल में पर्व संपन्न करें।स्थानीय लोगों ने भी प्रशासन की इस तैयारी की सराहना की और उम्मीद जताई कि इस बार का छठ पर्व श्रद्धा और अनुशासन के साथ सम्पन्न होगाः बुंडूः-लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा का शनिवार को लौकी भात से शुरू हो गई यह पर तीन दिनों तक चलती है तथा चौथे दिन पर्व का समापन होता है पहला दिन लौकी भात दूसरा दिन छठव्रती दिन भर निर्जला उपवास रहकर रात में खीर का भोग लगाते हैं उसके पश्चात तीसरा दिन भर निर्जला उपवास रहकर संध्या को अस्ताचलगामी सूर्य को नदी तालाब में जाकर अर्घ्य देते हैं तथा अपनी परिवार की सुख समृद्धि एवं स्वास्थ्य की कामना करते हैं चौथे दिन उदयीमान सूर्य को अर्घ्य देकर पर्व का समापन करते हैं इस तरह पूरे 48 घंटा छठव्रती निर्जला उपवास रहकर यह पर्व को करती है यह पर वर्षों से चली आ रही है इस पर्व में सबसे ज्यादा साफ सफाई पर ध्यान दी जाती है।

सिल्ली। शनिवार के दिन नहाए खाय के पावन अनुष्ठान के साथ चार दिवसीय छठ महापर्व की शुरूआत हुई। छठव्रतियों ने स्नान,ध्यान एवं शरीर और मन की शुद्धि के साथ अपने-अपने घरों में सात्विक भोजन तैयार कर प्रसाद के रूप में ग्रहण कर व्रत का संकल्प लिया।ज्ञात हो कि इस पावन अवसर पर छठ के घाटों पर जो दृश्य दिखाई देता है उसमें पारिवारिक और सामाजिक सद्भाव की अद्भुत प्रेरणा होती है।छठ महापर्व की प्राचीन परंपरा का हमारे समाज में गहरा प्रभाव रहा है।छठ महापर्व आस्था,उपासना और प्रकृति प्रेम का एक अनूठा संगम है। इसमें जहां अस्ताचलगामी और उदीयमान सूर्य देव को अर्घ्य दिया जाता है, वहीं प्रसाद में भी प्रकृति के विविध रंग समाहित होते हैं। छठ पूजा के गीत और धुन में भी भक्ति और प्रकृति का अद्भुत भाव भरा होता है।छठ पर्व को लेकर पूरे क्षेत्र में उत्साह का माहौल है। बाजारों में पूजन सामग्री की खरीदारी जोरों पर है और घाटों की सफाई का काम भी तेजी से चल रहा है। प्रशासन की ओर से सुरक्षा और स्वच्छता की विशेष व्यवस्था की जा रही है।

खलारी। नेम निष्ठा एवं आस्था का महापर्व छठ शनिवार को नहाय खाय के साथ शुरू हो गया। चार दिनों तक चलने वाले इस महापर्व के पहले दिन व्रतियां नहा धोकर स्वच्छता से शुद्ध चुल्हे पर अरवा चावल, चना दाल और कद्दू की सब्जी बनाईं। भगवान सूर्य को भोग लगाने के बाद छठव्रती स्वयं ग्रहण की। इसे प्रसाद स्वरूप परिजनों तथा आस पड़ोस के बीच भी बांटा गया। व्रतियों के घर तथा चैक-चैराहों पर छठ गीत बजने शुरू हो गए है। इधर नेम निष्ठा से गेहूं की सफाई कर छठव्रतियो ने महाअनुष्ठान के लिए पवित्रता के साथ गेहूं धोकर सुखाया। जिन व्रतियों के पास जांता उपलब्ध था, वे जांता में ही गेहूं पीसी। आटा चक्की संचालक भी चक्कियों को धोकर छठ का गेहूं पीसने के लिए तैयार रखे हैं। प्रसाद बनाने के लिए व्रतियों के परिजन आम की लकड़ी लाते दिखे।

महत्वपूर्ण खबरें

छाता गांव में अवैध संबंध के विवाद में युवक की हत्या, दो आरोपी गिरफ्तार

खूंटी (आजाद सिपाही)। कर्रा थाना क्षेत्र के छाता गांव में शनिवार दोपहर अवैध संबंध के विवाद में 30 वर्षीय कोपेया धान की हत्या कर दी गयी। बताया जाता है कि दो चचेरे भाइयों मंगरा धान और चामा धान ने दौली से काटकर कोपेया की हत्या कर दी। घटना के बाद दोनों आरोपी स्वयं थाने पहुंच गया और अपराध स्वीकार करते हुए आत्मसमर्पण कर दिया। पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया है और रविवार को जेल भेजने की प्रक्रिया पूरी की जा रही है। एसपी मनीष टोप्पो ने बताया कि प्रारंभिक जांच में अवैध संबंध हत्या का मुख्य कारण पाया गया है। मृतक कोपेया धान का संबंध आरोपियों में से एक की पत्नी से था, जिससे नाराज होकर दोनों भाइयों ने इस घटना को अंजाम दिया। जानकारी के अनुसार तीनों के बारी और खलिहान एक ही स्थान पर थे। शनिवार को धान की कटाई के दौरान मंगरा और चामा ने मौके पर पहुंचकर दौली से वार कर कोपेया की हत्या कर दी। घटना की सूचना मिलते ही कर्रा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

तालाब में डूबने से बच्ची की हुई मौत

खूंटी (आजाद सिपाही)। मुरहू प्रखंड कार्यालय के पीछे स्थित तालाब में शनिवार को डूबने से नौ वर्षीय बच्ची आरोसी होरो की मौत हो गई। आरोसी तोरपा प्रखंड के कमड़ा गांव निवासी प्रकाश होरो की बेटी थी। वह अपनी मां के साथ डुडरी निवासी मौसा अमित मिंज के घर मेहमान आई थी। जानकारी के अनुसार, आरोशिवसुबह कुछ अन्य बच्चियों के साथ ट्यूब लेकर तालाब में नहाने गई थी। उसी दौरान वह तालाब के गहरे हिस्से में चली गई और डूब गई। साथ में मौजूद बच्चियों ने शोर मचाकर लोगों को सूचना दी। मौके पर पहुंचे मौसा अमित मिंज ने किसी तरह बच्ची को तालाब से बाहर निकाला, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। घटना की जानकारी मिलते ही मुरहू थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल खूंटी भेज दिया।

उप चुनाव को लेकर बड़ा सुसनी में बने स्टेट चेकनाका में वाहनों की जांच

पटमदा (आजाद सिपाही)। पूर्वी सिंहभूम जिले के घाटशिला विधानसभा क्षेत्र में राज्य के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के निधन के बाद चुनाव आयोग द्वारा उप चुनाव करवाने की तिथि की घोषणा आगामी 11 अक्टूबर को की है।चुनाव में राज्य के अन्य जिले से पूर्वी सिंहभूम जिले में प्रवेश करने वाले चार पहिया वाहनों की सघन जांच बोड़ाम थाना क्षेत्र के बडा सुसनी में लगे स्टेट चेकनाका में किया जा रहा हैं।इस दौरान अभियान में मैजिस्ट्रेट,पुलिस बल, कैमरा मेन को पदस्थापित किया गया है। जिला में प्रवेश करने वाले सभी चार पहिया वाहनों की वीडियो ग्राफी के साथ जांच किया जा रहा हैं।

नयन गुप्ता ने आइओक्यूएम में सफलता अर्जित की

बुंडू (आजाद सिपाही)। साउथ प्वाइंट पब्लिक स्कूल बुंडू के कक्षा दस के छात्र नयन गुप्ता ने आइओक्यूएम में सफलता अर्जित की है। कांची निवासी जयप्रकाश गुप्ता व रश्मि गुप्ता के सुपुत्र नयन की सफलता पर साउथ प्वाइंट पब्लिक स्कूल बुंडू के प्राचार्य ने प्रसन्नता जतायी है। प्राचार्य सुभाष कुमार पाटनी ने कहा कि नयन विद्यालय का होनहार छात्र है, उसकी यह सफलता अप्रत्याशित नहीं है। प्राचार्य और शिक्षकों ने नयन को बधाई देते हुए शुभकामनाएं दी है।

बांदू गांव में सोहराई जतरा सह फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन

खूंटी (आजाद सिपाही)। कर्रा प्रखंड के कच्चाबारी पंचायत स्थित बांदू गांव में शनिवार को सोहराई जतरा सह फुटबॉल टूनार्मेंट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में खूंटी जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रवि मिश्रा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। मौके पर उन्होंने कहा कि पर्व के अवसर पर इस प्रकार का आयोजन गांव की समृद्धि और सामाजिक एकता का प्रतीक है। हमारी संस्कृति को सहेज कर रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। ऐसे आयोजन आपसी भाईचारे को बढ़ावा देते हैं और लोगों में उमंग का संचार करते हैं। उन्होंने ग्राम सभा बान्दू को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस पारंपरिक आयोजन में शामिल होना सौभाग्य की बात है। खेल प्रतियोगिता के बाद विभिन्न नाच मंडलियों ने पारंपरिक वेशभूषा में ढोल-नगाड़ों की थाप पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया, जिससे पूरा माहौल उत्सवमय हो गया। इस अवसर पर प्रदेश आदिवासी कांग्रेस के उपाध्यक्ष विलसन तोपनो, सांसद प्रतिनिधि विक्रम नाग, कर्रा प्रखंड अध्यक्ष अल्बर्ट तिग्गा, एलेक्सियूस परधिया, अनमोल होरो, उमेश कुमार गोप सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

बाबा आम्रेश्वर धाम स्थित श्री शनिदेव मंदिर में उमड़ी भीड़

खूंटी (आजाद सिपाही)। बाबा आम्रेश्वर धाम स्थित श्री शनिदेव मंदिर में शनिवार को श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखी गयी। विशेष रूप से दो पुत्रों वाली माताओं की लंबी कतार मंदिर परिसर में सुबह से ही लगी रही। सभी माताएं अपनी बारी का इंतजार करते हुए श्रद्धा और भक्ति भाव से शनिदेव को तेल और तिल अर्पित कर परिवार की सुख-समृद्धि और पुत्रों की दीर्घायु की कामना करती नजर आईं। पुजारी ने बताया कि शनिदेव की पूजा विशेष रूप से शनिवार को करने का धार्मिक महत्व है।

उपायुक्त नीतीश सिंह ने किया कुकडू प्रखंड कार्यालय का औचक निरीक्षण

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। सरायकेला-खरसावां के उपायुक्त नीतीश कुमार सिंह ने शनिवार को कुकडू प्रखंड मुख्यालय का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने चुनाव, मनरेगा, प्रखंड नजारत, अंचल कार्यालय, प्रधानमंत्री आवास सहित बाल विकास परियोजना से जुड़े दस्तावेज एवं योजना की जांच के क्रम में कार्य में त्रुटि को लेकर प्रखंड नाजीर एवं अंचल कार्यालय के प्रभारी को फटकार लगाते हुए जल्द से जल्द कार्य पूरा करने का निर्देश दिया। उपायुक्त नीतीश कुमार सिंह ने बताया कुकडू प्रखंड मुख्यालय का औचक निरीक्षण किया गया, कार्यालय से जुड़ी कुछ कमियां पाई गई हैं, जिसे पूरा करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा प्रखंड कार्यालय के समक्ष सरकारी जमीन पर अनैतिक रूप से कब्जा किये गये जगह को अतिक्रमण मुक्त किया जायेगा, साथ ही संबंधित लोगों के ऊपर करवाई की जायेगी।

छठ महापर्व की तैयारियों को लेकर समीक्षा बैठक, सुरक्षा-स्वच्छता पर विशेष जोर

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। छठ महापर्व की तैयारियों को लेकर समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में शनिवार को उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी आर रॉनिटा की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में प्रमुख छठ घाटों पर सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था, नदी-तालाब घाटों की साफ-सफाई, पेयजल आपूर्ति, मेडिकल टीम की उपलब्धता, गोताखोरों की प्रतिनियुक्ति, यातायात नियंत्रण एवं विधि-व्यवस्था से जुड़ी तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की गयी। उपायुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी छठ घाटों पर बैरिकेडिंग, उचित लाइटिंग, अग्नि सुरक्षा उपकरण तथा निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की जाये। संवेदनशील घाटों पर गोताखोर तैनात रहें। नगर पंचायत द्वारा वार्ड स्तर पर व्यापक साफ-सफाई के साथ पेयजल आपूर्ति और सभी सीसीटीवी कैमरों को सक्रिय रखने के निर्देश दिये गये। चिकित्सा विभाग को एंबुलेंस और प्राथमिक उपचार टीम तैनात करने का निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने कहा कि छठ व्रतियों और श्रद्धालुओं की सुविधा सर्वोच्च प्राथमिकता है। अधिकारियों को विशेष सतर्कता बरतने और आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहने के निर्देश भी दिये गये। बैठक में पुलिस अधीक्षक मनीष टोप्पो, अनुमंडल पदाधिकारी दिपेश कुमारी, अपर समाहर्ता परमेश्वर मुंडा, डीसीएलआर अरविंद कुमार, सिविल सर्जन डॉ नागेश्वर मांझी, नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी सृष्टि दीप्रिया मिंज सहित विद्युत विभाग के अधिकारी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

करकट्टा छठ घाट मार्ग में सफाई अभियान चला

खलारी। खलारी कोयलांचल में आस्था और सूर्योपासना के महापर्व छठ पूजा को लेकर तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। सभी छठ घाटों की सफाई युद्धस्तर पर की जा रही है, ताकि छठ व्रतियों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। शनिवार को करकट्टा से दामोदर नदी जाने वाले करकट्टा छठ घाट मार्ग की साफ-सफाई की गयी। जर्जर पड़े इस मार्ग को दुरुस्त करने के साथ ही छठ घाट परिसर में भी सफाई अभियान चलाया गया। वहीं, एसीसी छठ घाट तालाब सहित क्षेत्र के अन्य घाटों पर भी सफाई का कार्य तेजी से जारी है। अभी भी कई घाटों पर सफाई और व्यवस्था को लेकर काम चल रहा है। सीसीएल प्रबंधन, स्थानीय छठ पूजा समिति एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के संयुक्त प्रयास से घाटों की साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था, और व्रतियों के लिए सुरक्षित पहुंच मार्ग सुनिश्चित किया जा रहा है। स्थानीय ग्रामीण भी इसमें सक्रिय सहयोग दे रहे हैं।

मोहन नगर में भक्ति जागरण का होगा आयोजन

खलारी। मोहन नगर पूजा समिति के द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी लोकआस्था का महापर्व छठ धूमधाम से मनाने की तैयारी की जा रही है। वहीं तैयारियों का जायजा लेने खलारी अंचल अधिकारी प्रणव अंबष्ट ने मोहन नगर छठ घाट का निरीक्षण किया और सभी व्यवस्थाओं को परखा। इस दौरान उन्होने छठ पूजा समिति को कई आवश्यक निर्देश भी दिये। पूजा समिति के अध्यक्ष कृष्णा चैहान ने बतया कि समिति के द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छठ व्रतियों एवं श्रद्धालुओं की सुविधा का पूरा ख्याल रखा जा रहा है। बताया कि तालाब के बीचों-बीच भगवान सूर्य की भव्य प्रतिमा स्थापित की जायेगी, जो श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का मुख्य केंद्र होगी। वहीं 27 अक्टुबर को छठ घाट पर भक्ति जागरण का भी आयोजन किया जायेगा। उन्होने बताया कि सुरक्षा और सहयोग के साथ इस पर्व को शांतिपूर्ण और भक्ति पूर्ण रूप से किया जायेगा। इस मौके पर अभिषेक कुमार चैहान, मुन्नू शर्मा, बुटन चैहान, नसीब चैहान सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

खलारी सीओ ने छठ घाटों का किया निरीक्षण

खलारी। आस्था के महापर्व छठ पूजा को लेकर खलारी कोयलांचल के सभी घाटों की सफाई हो गयी है। रविवार को छठ घाटों को सजाने का कार्य होगा। क्षेत्र के एसीसी तालाब छठ घाट, खलारी बाजारटांड सोनाडुबी नदी छठ घाट, शांति नगर सोनाडुबी नदी छठ घाट, जेहलीटांड सोनाडुबी नदी, केडी-जेहलीटांड़ रोड के सोनाडुबी नदी पुल स्थित छठ घाट एवं जेहलीटांड़ छलटा पुलिया स्थित छठ घाट, दामोदर नदी धमधमिया एवं करकट्टा छठ घाट, जामडीह पुल के निकट दामोदर नदी छठ घाट सहित अन्य घाटों की साफ-सफाई की गयी। छठ घाटों के सफाई अभियान में सीसीएल प्रबंधन, छठ पूजा समितियां एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा। छठ घाट की साफ-सफाई के साथ-साथ छठव्रती को पहुंचने के लिए सुगम मार्ग बनवाया जा रहा है। शनिवार को अंचल अधिकारी प्रणव अंबष्ठ, पुलिस उप अधीक्षक रामनारायण चैधरी तथा खलारी थाना के पुलिस अधिकारियों ने विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया और समितियों को आवश्यक निर्देश दिये। एसीसी छठ घाट पूजा समिति के अध्यक्ष बिट्टू सिंह और सचिव अवधेश यादव ने आम नागरिकों से अपील की है कि वे अपने-अपने घरों के सामने तथा व्रतियों के आने-जाने के रास्तों की साफ-सफाई सुनिश्चित करें।

केडी ओल्ड साइडिंग लंबा धौड़ा छठ पूजा समिति का भक्ति जागरण : केडी ओल्ड साइडिंग लंबा धौड़ा छठ पूजा समिति के द्वारा छठ पूजा को लेकर की जा रही तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। पूजा समिति के द्वारा छठ पूजन और भगवान भास्कर को अर्घ्य देने के लिए लंबा धौड़ा में तालाब का निर्माण एवं छठ व्रतियों के लिए विशेष सुविधा का व्यवस्था किया जा रहा है। श्यामजी महतो ने बताया कि 27 अक्टुबर को रात्री में आयोजित भक्ति जागरण में कानपुर के कलाकार बिनय मिश्रा, सुरूषि सिंह, विक्की सिंह द्वारा भक्ति गीत एवं अमर तिलकधारी टीम के द्वारा आकृषक झांकी की प्रस्तुति दी जायेगी। इस दौरान सफाई में सहयोग करनेवाले श्यामजी महतो, रामजी महतो, जीवन रजवार, राधेश्याम प्रसाद सहित समस्त छठ पूजा समिति लंबा धौड़ा के सदस्य शामिल थे।

छठ पूजा आत्म-शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का संदेश: बीके प्रीति बहन

खलारी (आजाद सिपाही)। लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा के आध्यात्मिक स्वरूप को ब्रह्माकुमारी गीता पाठशाला, सुभाष नगर की बीके प्रीति बहन ने विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि यह पर्व निराकार परमपिता परमात्मा शिव बाबा (ज्ञान के सूर्य) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और स्वयं को विकारों से शुद्ध करने की आंतरिक तपस्या का एक पावन संगम है। प्रीति बहन के अनुसार छठ पूजा केवल बाहरी अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्म-परिवर्तन की आध्यात्मिक यात्रा है। जिस प्रकार सूर्य अंधकार मिटा कर प्रकाश फैलाता है, उसी प्रकार शिव बाबा का ज्ञान हमें पवित्र और दिव्य गुणों से भर देता है। उगते और डूबते सूर्य को अर्घ्य देना हर परिस्थिति में परमात्मा की याद बनाये रखने का संदेश देता है। उन्होंने बताया कि नारियल चढ़ाने के पीछे का भाव अहंकार रूपी कठोर खोल को त्यागकर शुद्ध आत्म स्वरूप में स्थित होना है। चार दिनों का कठोर व्रत मन और जीवन दोनों में पवित्रता एवं समर्पण का प्रतीक है। उपवास का वास्तविक अर्थ उप यानी समीप और वास यानी रहना अर्थात परमात्मा के सान्निध्य में रहना। बीके प्रीति बहन ने कहा कि यह महापर्व हमें संकल्प देता है कि परमात्मा-प्राप्त ज्ञान से स्वयं को बदल कर, इस विकारी संसार को पुनः दैवी गुणों से युक्त स्वर्ग बनाने में योगदान दें।

तन-मन और समाज को तंदरुस्त बनाने का माध्यम है खेल : कालीचरण मुंडा

आजाद सिपाही संवाददाता

मुरहू (खूंटी)। हाकी खेल समिति डोगड़ा के तत्वावधान में मुरहू प्रखंड के डोगड़ा मैदान में शनिवार को दो दिवसीय हाकी प्रतियोगिता का शुभारंभ धूमधाम से किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन खूंटी सांसद कालीचरण मुंडा, खूंटी विधायक राम सूर्या मुंडा, तोरपा विधायक सुदीप गुड़िया एवं रांची जिला परिषद की अध्यक्ष निर्मला भगत ने संयुक्त रूप से फीता काटकर और खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया।

इस अवसर पर सांसद कालीचरण मुंडा ने कहा कि खेल न केवल तन को तंदुरुस्त रखता है, बल्कि मन को भी स्वस्थ और अनुशासित बनाता है। खेलों से समाज में प्रेम, भाईचारा और एकता की भावना बढ़ती है। उन्होंने कहा कि खूंटी की धरती ने देश को कई नामचीन खिलाड़ी दिये हैं, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का परचम लहराया है। ऐसे में जरूरत है कि हम अपने गांव-गांव में खेल संस्कृति को बढ़ावा दें, ताकि नयी पीढ़ी स्वस्थ, अनुशासित और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाली बने।

विधायक राम सूर्या मुंडा एवं सुदीप गुड़िया ने भी खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस तरह की प्रतियोगिताएं प्रतिभाओं को निखारने का उत्कृष्ट मंच प्रदान करती हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार भी खेल विकास के लिए कई योजनाएं चला रही है, जिनका लाभ युवाओं को उठाना चाहिए।

कार्यक्रम में धर्मगुरु बगरय मुंडा, मथुरा कंडीर, इंस्पेक्टर किशुन दास, मुरहू थाना प्रभारी नायल गोडविन केरकेट्टा, सनिका बोदरा, सुखराम सरूकद, डिक्सन पूर्ति उपस्थित रहे।

पति ने की हत्या, गिरफ्तार

शव को बोरे में भर कर ठिकाने लगाने की कोशिश

आजाद सिपाही संवाददाता

पिठोरिया। थाना क्षेत्र के बाढ़ू गांव से शुक्रवार की देर रात एक व्यक्ति ने अपनी ही पत्नी की धारदार हथियार से वार कर हत्या कर दी। इसके बाद साक्ष्य मिटाने की नियत से घर में मौजूद खून के धब्बों को पानी से धो दिया, ताकि किसी को घटना की भनक न लगे। हालांकि पुलिस ने आरोपित की लाख चतुराई के बावजूद उसे गिरफ्तार कर लिया। उसकी पहचान बाढ़ू निवासी जगदीश महली (40) के रूप में हुई है।

आरोपित जगदीश महली।

जानकारी के मुताबिक पत्नी की हत्या करने के बाद जगदीश शव को एक बोरे में बंद कर फेंकने की फिराक में था। उसी समय गुप्त सूचना मिलने पर पिठोरिया थाना प्रभारी सतीश कुमार सशस्त्र बल के साथ घटनास्थल पहुंचकर आरोपी को उसके घर से पकड़ लिया। उसकी निशानदेही पर पुलिस ने उसकी पत्नी के शव को बंद बोरे से बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए रिम्स अस्पताल भेज दिया। प्रारंभिक जांच में हत्या के पीछे गृह कलह का कारण बताया जा रहा है, हालांकि पुलिस अन्य पहलुओं की भी जांच कर रही है। उदर, ग्रामीणों में घटना को लेकर आरोपी के प्रति आक्रोश है। उनका कहना है कि जगदीश और उसकी पत्नी के बीच अक्सर विवाद होता था। फिलहाल पिठोरिया थाना पुलिस मामला दर्ज कर अग्रेत्तर कार्रवाई कर रही है। साथ ही आरोपी को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

नहाय-खाय के साथ छठ महापर्व शुरू, खरना आज

आजाद सिपाही टीम

नामकुम। अनुशासन, पवित्रता और आस्था का प्रतीक चार दिवसीय महापर्व छठ पूजा शनिवार को नहाय-खाय के साथ शुरू हो गया। नामकुम, टाटीसिलवे, लोवाडीह, सिदरौल, रामपुर, नामकुम बाजार और तुपुदाना के आसपास के इलाकों में श्रद्धालु बड़े उत्साह और भक्ति के साथ इस पर्व को मना रहे है। सुबह में व्रती महिलाओं और पुरुषों ने विभिन्न नदियों, तालाबों और जलाशयों में स्नान कर सूर्य देव की पूजा-अर्चना कर अपने पवित्र व्रत की शुरूआत की। इस दौरान स्वर्णरेखा और सिपाही नदी पर श्रद्धालुओं की भीड़ देखी गई। नहाय-खाय छठ पर्व का पहला और पवित्र चरण है। छठ पूजा का पहला दिन, नहाय-खाय, अत्यंत पवित्र माना जाता है। यह चरण इस बात का प्रतीक है कि भक्त अब सांसारिक जीवन को पूरी तरह से त्याग कर भक्ति और अनुशासन के मार्ग पर चल पड़े है। इस दिन भक्त नदी या तालाब में स्नान करके अपने शरीर को शुद्ध करते है और कद्दू भात और चने की दाल का सात्विक भोजन ग्रहण करते है। ऐसा माना जाता है कि यह भोजन तन और मन दोनों को शुद्ध करता है।

ओरमांझी में छठ महापर्व शुरू

ओरमांझी (आजाद सिपाही)। लोक आस्था का चार दिवसीय महापर्व छठ शनिवार को नहाय खाय के साथ शुरू हुआ। छठ व्रतियों के यहां सुबह से ही चहल पहल देखी गई। घरों की साफ-सफाई, स्नान आदि से निवृत होकर कद्दू भात चना की दाल को मिट्टी के बने चूल्हे पर प्रसाद के रूप में बनाया गया। छठ व्रतियों ने सबसे पहले कद्दू, भात, दाल, रोटी, बचका आदि छठ माई को अर्पित करते हुए प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया। इसके बाद व्रतियों के परिजनों ने प्रसाद को ग्रहण किया। रविवार की शाम खरना पूजा होगी। इसके साथ ही 36 घंटे का निर्जला व्रत शुरू हो जाएगा, जो मंगलवार को अगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ संपन्न होगा।

बेड़ो में नहाय-खाय के साथ छठ महाव्रत शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। आस्था और सूर्य उपासना के चार दिवसीय छठ महापर्व की शुरूवात शनिवार को प्रखंड मुख्यालय सहित ग्रामीण क्षेत्रों में नहाय खाय के साथ शुरू हुआ। पहले दिन छठ व्रत करने वाले पुरुष-महिला परवैतिन ने अंतःकरण की शुद्धि के लिए जलाशयों में स्नान कर व्रत का संकल्प लिया। इसके बाद सेंधा नमक से बने चना दाल और कद्दू की सब्जी एवं अरवा चावल का प्रसाद बनाया। पूजा के बाद व्रतियों ने छठ व्रत का संकल्प लेकर खुद कद्दू भात का प्रसाद ग्रहण किया। इसके बाद परिवार के अन्य सदस्यों-स्वजनों के बीच वितरण किया गया।

झामुमो नेता वीरू साहू से मिलीं राज्यसभा सांसद महुआ माझी, जतायी शोक संवेदना

नामकुम (आजाद सिपाही)। राज्यसभा सांसद महुआ माझी शनिवार को झामुमो नेता वीरु साहू के लोवाडीह स्थित आवास पहुंची। वीरु साहू की माता के निधन पर उनके परिजनों से मिलकर शोक संवेदना प्रकट किया। उन्होंने भरोसा दिया कि दुख की इस खड़ी में पूरा झामुमो परिवार उनके साथ है। बताते चले कि पिछले दिनों वीरु साहू की माता सुशीला देवी (79) का आकस्मिक निधन हो गया था। जिसके बाद नामकुम पुरुलिया रोड स्थित स्वर्णरेखा नदी मुक्तीधाम खाट पर अंतिम संस्कार कर दिया गया था। मौके पर बड़ा भाई सुरेश साहू, वीरु साहू, विलियम रिचर्ड लकड़ा, मंटू लाला, जावेद अख्तर, बीरु तिर्की, जोसफ मिंज, अशोक शाह, बनमाली मंडल, उमेश साहू, संजीव लकड़ा, अनिरुद्ध पांडे, महादेव मुंडा सहित अन्य मौजूद थे।

छठ महापर्व हमारी सांस्कृतिक पहचान है : कैलाश कुमार

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। बिनय बगीचा स्थित डीएवी विवेकानंद पब्लिक स्कूल में शनिवार को लोक आस्था के महापर्व छठ के अवसर पर स्कूल परिसर में छात्र-छात्राओं की ओर से आकर्षक छठ पूजा की झांकी का आयोजन किया गया। छात्राओं ने छठ पूजा की पारंपरिक परंपराओं, सांस्कृतिक आस्था और मधुर लोकगीतों की जीवंत प्रस्तुति देकर उपस्थित सभी लोगों को भावविभोर कर दिया।कार्यक्रम का शुभारंभ छठ मइया के पारंपरिक गीतों की प्रस्तुति के साथ हुई जहां छठ गीतों पर छात्र-छात्राओं ने आकर्षक झांकी प्रस्तुत की। इसमें सूर्य उपासना, पवित्र अर्घ्यदान की विधि और कठिन छठ व्रत के विभिन्न पहलुओं की मनोहारी झलकियां शामिल थी। प्रधानाध्यापक कैलाश कुमार ने कहा कि छठ महापर्व हमारी सांस्कृतिक पहचान है। जिसमें हम हमारे जीवन के मुख्य आधार भगवान भास्कर की पूजा अर्चना करते हैं। उन्होंने छात्राओं द्वारा प्रस्तुत झांकी की सराहना करते हुए कहा कि छठ महापर्व स्वच्छता, पवित्रता एवं सकारात्मक सोच का संदेश देता है। ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों से बच्चों में भारतीय परंपराओं के प्रति आस्था और आत्मिक विकास को बल मिलता है। उन्होंने बच्चों को छठ महापर्व के गहरे संदेश से अवगत कराया। बताया कि इस पर्व में पहले डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है और फिर अगले दिन उगते हुए सूर्य को। यह हमें सिखाता है कि डूबने वाला एक दिन जरूर उगता है। समय का धैर्यपूर्वक इंतजार करना चाहिए, क्योंकि असफलता के बाद सफलता निश्चित रूप से मिलती है। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षिकाओं सोमा सरकार, प्रियंका गगराई, अनिता कुमारी, शैली श्रेया गुप्ता, आरती, निर्मला लकड़ा, शिवानी कुमारी, रागिनी कुमारी, प्रियंका सिंह, हंसिका कुमारी, प्रिस्का खेस, शिक्षक श्रवण कुमार, जयंतो चौधरी, रवि सिंह आदि की भूमिका सराहनीय रही।

मोबाइल दुकान में चोरी का उद्भेदन, एक गिरफ्तार

मांडर (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के ब्राम्बे में 17 अक्टूबर को मोबाइल दुकान में हुई चोरी का खुलासा करते हुए पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। उसके पास से चोरी के मोबाइल एवं अन्य सामान भी बरामद कर लिया है। शनिवार की दोपहर दो बजे खलारी पुलिस उपाधीक्षक आरएन चौधरी ने संवाददाता सम्मेलन कर इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ब्राम्बे स्थित गुलजार मोबाइल दुकान से रात में चोरी की घटना को अंजाम दिया गया था। पुलिस ने मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए थाना प्रभारी मनोज करमाली के नेतृत में एक टीम का गठन कर जांच शुरू की और आरोपी तक पहुंच गयी और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उसकी पहचान जुलफान आदम अंसारी के रूप में हुई है। उसे शनिवार की दोपहर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

नगड़ी में नेम निष्ठा का महापर्व छठ नहाय-खाय के साथ शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

पिस्कानगड़ी। नेम निष्ठा का महापर्व छठ शनिवार को नहाय खाय के साथ शुरू हो गयी। इस दिन सुबह से छठव्रतियों ने भगवान सूर्य की पूजा की अर्चन कर अरवा चावल, कद्दू और चना दाल से बने प्रसाद का भोग भगवान को चढ़ाया। इसके बाद छठ व्रतियों ने उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण किया। उसरे बाद सभी लोगों ने प्रसाद के रूप में ग्रहण किया। बतातें चलें कि नगड़ी प्रखंड क्षेत्र में इस वर्ष करीब 800 से अधिक लोग छठ पूजा कर रहे हैं। नगड़ी गांव में करीब 300 लोग छठ पूजा कर रहे। घरों में बज रहे छठ गीत से पूरा क्षेत्र छठमय हो गया है। उधर, छठ पर्व को देखते हुए प्रखंड मुख्यालय के सभी पंचायतों के जलाशयों के किनारे छठ घाटों पर पहुंचकर घाटों की साफ-सफाई की गई। इनमें मुख्य रूप से नगड़ी का ऐतिहासिक धार्मिक आस्था का संगम का प्रतीक नया तालाब जिसके घाट पर कई सालों से छठ पर्व किया जा रहा नगड़ी नया तालाब, नगड़ी महतो टोली तालाब, नारो तालाब, स्वर्णरेखा नदी के उद्गम स्थल पर स्थित स्वर्णरेखा तालाब, साहेर रोड पर स्थित बोटवा बांध, एडचोरो गांव स्थित कोयल नदी छठ घाट, बरसा गांव तालाब, बलालोंग गांव का तालाब, लालगुटवा तालाब, कुटे तालाब आदि शामिल है। इस दौरान हरि ओम युवा छठ पूजा समिति के अध्यक्ष आदित्य केसरी अपने सहयोगियों के साथ पिछले दो दिनों से जेसीबी से तालाब के किनारे छठव्रतियों के बैठने के लिये सीढ़ी निर्माण और झाड़ियों को साफ कराया। आदित्य केशरी ने कहा कि पिछले कई वर्षों से छठव्रतियों के लिए तालाब की साफ-सफाई समिति की ओर से की जाती रही है। जिला प्रशासन, विधायक या सांसद द्वारा छठ घाट की साफ सफाई को लेकर कभी मदद नहीं मिली। वहीं, छठ घाट की साफ सफाई में समिति के रवि कुमार केसरी, आशीष केशरी, दीपक बैठा, मनीष केशरी, राहुल चौधरी, शशि भूषण सिंह, रिक्की भगत, अजीत सोनी, राजेश केसरी आदि ने योगदान दिया।

लापुंग में नहाय-खाय के साथ छठ महापर्व शुरू

लापुंग (आजाद सिपाही)। लापुंग में नहाय-खाय के साथ शनिवार से चार दिवसीय छठ महापर्व शुरू हो गया। उधर, बाजार में सूप और सब्जी की खरीददारी करते लोग देखे गये। इस दिन खरना को लेकर छठ व्रती गेहूं को धोकर सूखाते दिखीं। रविवार को खीर प्रसाद, सोमवार की संध्या अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य और मंगलवार को उगते सूर्य को अर्घ्य देने केबाद चार दिवसीय छठ महापर्व का समापन होगा। छठ महापर्व फतेहपुर, लापुंग, लालगंज, ककरिया, मालगो, दोलाइचा, महुगाव, देवगांव, तबीखुर्द आदि अन्य गांव में भी धूमधाम से मनाया जाता है।

अवैध बालू लदा हाइवा जब्त

पिस्कानगड़ी (आजाद सिपाही)। नगड़ी थाना प्रभारी ने शनिवार तड़के तीन बजे पेट्रोलिंग के दौरान नाचियातू रिंग रोड के समीप अवैध रूप से बालू लादे हाइवा को जब्त कर थाना लाया। नगड़ी थाना प्रभारी प्रवीण कुमार ने बताया कि शुक्रवार की रात गुप्त सूचना मिला कि रिंग रोड बलालोंग नाचियातू की ओर से बालू लदे वाहन चल रहे हैं। रात को ही पेट्रोलिंग ही जा रही थी। इसी बीच हाइवा को देखने पर रुकने को कहा गया, लेकिन चालक हाइवा को तेज रफ़्तार से भगाने लगा। यह देख पुलिस ने हाइवा का आठ किलोमीटर तक पीछा कर उसे पकड़ लिया।

सवारी बिठाने को लेकर मारपीट, एक ने दूसरे ऑटो चालक के पेट में छूरा मारा

पिस्कानगड़ी (आजाद सिपाही)। नगड़ी थाना क्षेत्र के दलादिली टीओपी अंतर्गत गुटवा ओवरब्रिज चौक पर दो आटो चालकों में सवारी बैठाने को लेकर मारपीट हो गयी। इस दौरान निरोज अंसारी नामक चालक ने दूसरे आटो चालक अयान अंसारी को छूरा मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। छूरा लगने से घायल अयान अंसारी को पहले रातू स्थित पीएचसी ले जाया गया, जहां हालत गंभीर देख रिम्स अस्पताल ले में भर्ती कराया गया। दोनों आटो चालक सिमलिया चौक के रहने वाले हैं। घटना शनिवार को अपराह्न 3.30 बजे की बतायी जा रही है। जानकारी के मुताबिक इस दिन गुटवा ओवरब्रिज से रातू काठिटांड चौक तक चलने वाले दो आटो चालकों अयान और निरोज अंसारी के बीच सवारी बैठाने को लेकर झगड़ा हो गया। बात बढ़ गयी और दोनों में मारपीट होने लगी। इसी बीच निरोज अंसारी ने छूरा निकाल कर अयान के पेट में मार दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे अन्य आटो चालक की मदद से इलाज के लिए पहले रातू पीएचसी ले जाया गया। वहां उसकी गंभीर हालत को देखते हुए रिम्स रेफर कर दिया। दूसरी ओर, मारपीट में निरोज अंसारी भी घायल हो गया था। उसे भी इलाज के लिए रातू पीएचसी में भर्ती कराया गया था, जहां से प्राथमिक इलाज के बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

सूर्य उपासन का महापर्व छठ नहाय-खाय के साथ शुरू

इटकी (आजाद सिपाही)। इटकी में नहाए खाए के साथ ही चार दिवसीय सूर्य उपासना का महान पर्व छठ शनिवार से आरंभ हो गया है। इटकी में इस वर्ष छठ पर्व काफी सख्या में की जा रही है। इस बाबत छठ व्रती अपने परिवार के साथ मिलकर सड़क की भी साफ सफाई कर रहे हैं। चारों ओर ध्वनि विस्तार यंत्र की सहायता से छठी मैया के गीत से और भी माहौल भक्ति में हो गया है। वहीं, अनेकों स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा छठ घाट के साथ ही छठ घाट की ओर जाने वाली सड़कों की भी सफाई के साथ कई प्रकार के साज सज्जा लगाने में जुट गये है। सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र बाहरी तालाब स्थित सूर्य मंदिर तालाब में देखा जा रहा है ।

नामकुम के शिव शक्ति मंगलम छठ घाट में होगी अस्ताचलगामी अर्घ्य पर गंगा आरती

नामकुम (आजाद सिपाही)। लोक आस्था का महापर्व छठ शनिवार को नहाय खाय से शुरू हो गया। इस दिन व्रती कद्दू, चना दाल एवं भात का भोग लगाएं। रविवार को खरना होगा। सोमवार की शाम में अस्ताचलगामी अर्घ्य तथा मंगलवार को सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया जाएगा। वहीं, शिव शक्ति मंगलम छठ पूजा समिति नामकुम जोरार, पंडित सदन छठ महापर्व की तैयारी में जुटा हुआ है। पूजा समिति के अध्यक्ष पिंटू सिंह ने बताया कि इस वर्ष भी मंगलम छठ पूजा समिति हर वर्ष की तरह सिपाही नदी के डेरी फार्म डेम में छठ पूजा का भव्य आयोजन करेंगा। जिसे लेकर छठ घाट पर पूरी तैयारी कर ली गई है। बताया कि 27 अक्टूबर को छठ घाट जाने के लिए रास्ते की साफ-सफाई की जायेगी। पूरे रास्ते में प्रकाश की व्यवस्था की गई है। समिति की ओर से व्रतियों के बीच घाट पर दूध, दातुन व अगरबत्ती का वितरण भी किया जाएगा। साथ ही इस बार अस्ताचलगामी अर्घ्य के दौरान शाम चार बजे बनारस से आए पंडितों के द्वारा गंगा आरती की जायेगी।

सोहराई जतरा हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान है : डॉ रवींद्र नाथ भगत

बेड़ो (आजाद सिपाही)। सोहराई जतरा हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत है। इसे अक्षुण्ण बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। उक्त बातें हजारीबाग विनोवा भावे विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ रवींद्र नाथ भगत ने कही। वे बेड़ो प्रखंड के जरिया गांव में शनिवार को करमचंद भगत स्टेडियम जरिया में आयोजित सोहराई जतरा समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। इस दौरान पूर्व वीसी डॉ भगत के नेतृत्व में ग्रामीणों ने ढोल, ढाक, मांदर, नगाड़ा और झण्डा के साथ जरिया सरनास्थल से एक शोभायात्रा निकाला, जो पूरे गांव का परिभ्रमण एवं भगवान शंकर की मंदिर का परिक्रमा करते हुए करमचंद भगत स्टेडियम में पहुंचकर जतरा समारोह में बदल गया। समारोह में आसपास के गांवों के खोड़हा टीमों ने परंपरागत नाच गान प्रस्तुत किया। इस मौके पर प्रो मंगा उरांव, सुकरा उरांव, पंसस विशेश्वर उरांव, ग्राम प्रधान पेरो उरांव, बुधनाथ उरांव, अशोक कुमार और सुखदेव भगत आदि मौजूद थे।

मांडर में चलती बस में लगी आग

मांडर (आजाद सिपाही)। मांडर में शनिवार की शाम रांची की ओर से आ रही एक यात्री बस में अचानक आग लग गई। घटना एलआईसी ऑफिस के निकट हुई, जब बस रांची से यात्रियों को लेकर रही थी। जानकारी के अनुसार, बस रांची से चतरा जा रही थी। मांडर पहुंचने से दो किलोमीटर पहले किसी बाइक सवार ने बस के पीछे धुआं उठता देखा। उसने समझदारी दिखाते हुए तेजी से बस का पीछा किया और चालक को इशारा कर बस को रुकवाया। बस रुकते ही आग तेजी से फैलने लगी, लेकिन चालक और यात्रियों ने सूझबूझ से सभी को तुरंत बाहर निकाल लिया। स्थानीय लोगों ने तुरंत पानी और मिट्टी की मदद से आग बुझाने की कोशिश की। साथ ही फायर ब्रिगेड को भी सूचना दी। हालांकि इस हादसे में किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ।

सोहराई जतरा के रूप में पुरखों ने हमें परंपरा संस्कृति को धरोहर के रूप में सौंपी है: जयनाथ

डाडी में आयोजित सोहराई जतरा में उमड़ी लोगों की भीड़

आजाद सिपाही संवाददाता

लापुंग। सांस्कृतिक विरासत हमारे पूर्वजों की अनमोल धरोहर है। सोहराई जतरा के रूप में हमारे पुरखों ने हमें पुरानी परंपरा, संस्कृति और रीति-रिवाज को धरोहर के रूप में सौंपा है। आदिवासी और सदान मिलकर इस त्योहार को सदियों से मनाते आएं हैं। हमें उन परंपराओं को आगे बढ़ाने की जरूरत है। उक्त बातें लापुंग प्रखंड के डाडी पंचायत सचिवालय के निकट आयोजित सोहराई जतरा के मौके पर समाजसेवी जयनाथ साहू ने कही। वहीं, बतौर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित तेली समाज के प्रदेश अध्यक्ष अरुण कुमार साहु ने कहा कि जतरा संस्कृति को कायम रखने के लिए हमारे बीच एकता और अखंडता की जरूरत है। प्रखंड प्रमुख कंचन उरांव ने कहा कि डाडी गांव ही नहीं, बल्कि पूरे पंचायत में सोहराई जतरा का विशेष महत्व है। इस वक्त हम सभी फसल कटने का इंतजार कर रहे हैं। कार्तिक के बाद अगहन महीने में फसल की कटाई के साथ हम अपने पुरखों को याद करेंगे। उनके द्वारा दी गई सांस्कृतिक विरासत हमारी अनमोल धरोहर है। हमें ऐसी मान्यताओं को बचाकर रखना होगा। इसके पूर्व उद्घाटनकर्ता समाजसेवी अरूण कुमार साहू, जयनाथ साहू, कंचन उरांव, किशोर साहू, राहुल केशरी और सोनू पंडित आदि ने मिलकर जतरा एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस मौके पर ओड़िशा की प्रसिद्ध लोक कलाकार उर्मिला महंतों, सैनी शिल्की 'खुशी', वर्षा मोहंतो, पम्मी मोहंतो, सुमति मोहंतो लोक गायिका ललिता कुमारी, सरिता बडाईक, पंकज महली की टीम ने अपनी नृत्य नाटिका और सीता हरण का जीवंत दृष्य प्रस्तुत कर लोगों को रोमांचित कर दिया। नृत्यांगना रेशमा एवं आरती ने अपने नृत्य शैली एवं प्रस्तुति से लोगों को खूब झुमाया। कार्यक्रम का संचालन प्रभात साहू ने किया। इस मौके पर विजय पाहन, पंचू पाहन, मंगल साहू, मनोज साहू, विरेंद्र साहू, भोला नाग, मुकेश साहू, राजू साहू, राजू गोप, दिलेश्वर साहू, अरविंद साहू, महावीर साहू, गिरीधारी नाग, जालंधर साहू, प्रदीप साहू, सुईया साहू, पवन साहू, छोटू साहू आदि मौजूद रहे।

महिला कांग्रेस ने चलाया 'वोट चोर गद्दी छोड़' अभियान

कांके (आजाद सिपाही)। रामगढ़ जिला महिला कांग्रेस की अध्यक्ष मंजू जोशी और रामगढ़ जिला महिला कांग्रेस की महासचिव सुषमा देवी की ओर से शनिवार को अरगड्डा क्षेत्र में 'वोट चोर गद्दी छोड़' अभियान के तहत हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। जिसमें सैकड़ों महिला-पुरुष और युवाओं ने हस्ताक्षर कर अपना समर्थन दिया। कांग्रेस नेत्री सुषमा देवी ने कहा कि बिहार के चुनाव में भी भाजपा वोट चोरी की तैयारी एसआइआर के तहत कर ली है। लेकिन बिहार की जनता बहुत ही समझदार है। वह महागठबंधन को ही वोट करेगी और कांग्रेस के उम्मीदवार सभी जगह जीत दर्ज करेंगें। कहा कि कांग्रेस ही एकमात्र पार्टी है जो संविधान आधारित लोकतंत्र की रक्षा कर आम जनता को उनके अधिकारों को दिलाती है।

सीओ-बीडीओ ने खुद मौजूद रहकर करवायी छठ घाटों की साफ-सफाई

नहाय-खाय के साथ आस्था का महापर्व छठ शुरू, खरना आज

आजाद सिपाही संवाददाता

चैनपुर। लोक आस्था का महापर्व छठ शनिवार को प्रखंड मुख्यालय सहित विभिन्न क्षेत्रों में नहाय-खाय के साथ शुरू हो गया। चार दिनों तक चलने वाले इस महाव्रत के पहले दिन छठव्रतियों ने स्नान-ध्यान कर सूर्य की उपासना की और सात्विक भोजन (प्रसाद) तैयार कर खुद ग्रहण करने के बाद अपने सगे-संबंधियों एवं मित्रों को भी खिलाया। ग्राम पुरोहित अवनीश कुमार पाठक के अनुसार नहाय-खाय का महत्व शरीर और मन दोनों को पवित्र करने में है। छठ पर्व का मूल भाव जीवन में शुद्धता, अटूट आस्था और सूर्य देव के प्रति कृतज्ञता को बनाए रखना है। रविवार को खरना, सोमवार को अस्ताचगामी सूर्य को अर्घ्य और मंगलवार को उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही चार दिवसीय छठ महापर्व का समापन होगा। बतातें चलें कि प्रखंड मुख्यालय से कुछ छठव्रती लगभग तीन किलोमीटर दूर सफी नदी छठ घाट तक पैदल चलकर जाती हैं और कठिन नियमों का पालन करते हुए पूजा करती हैं। उधर, सफाई अभियान के दौरान बीडीओ यादव बैठा, सीओ दिनेश गुप्ता, थाना प्रभारी कृष्ण कुमार एवं जिला परिषद मेरी लकड़ा खुद उपस्थित रहकर सफाई कार्यों का निरीक्षण और मार्गदर्शन किया। साथ ही खुद भी श्रमदान में हिस्सा लिया। इसमें चैनपुर के सामाजिक संगठनों के सदस्यों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। छोटा नागपुरीया तेली उत्थान समाज के सचिव रंथु साहू ने बताया कि घाट परिसर की सफाई, कचरा उठाव, चूना छिड़काव के साथ ही लाइट व्यवस्था की भी व्यवस्था की जाएगी। 10 से अधिक चेंजिंग रूम बनाया जाएगा। वहीं, मौजूद अधिकारियों ने संयुक्त रूप से कहा कि छठ पर्व के दौरान श्रद्धालुओं की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। उन्होंने आश्वासन दिया कि एक स्वच्छ घाट और सुरक्षित पर्व सुनिश्चित करने की दिशा में सभी विभाग मिलकर कार्य कर रहे हैं।

कद्दू-भात का भोग ग्रहण करती छठव्रती महिलाएं।

बाजारों में दिखी रौनक

पूजन सामग्री की दुकानों पर खरीदारों की भारी भीड़ उमड़ रही है। बांस से बने सूप और दउरा की मांग सबसे अधिक है, जिसकी कीमत में बढ़ोतरी हुई है। अलग-अलग बाजारों में सूप करीब 200 रुपये प्रति पीस या उससे अधिक में बिक रहे हैं। इस महापर्व को लेकर लोग उत्साह के साथ पूजा की तैयारियों में लगे हुए हैं।

डूमरी में छठ महापर्व की धूम

डूमरी (आजाद सिपाही)। मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्र में नहाए खाए के साथ चार दिवसीय छठ पूजा की शनिवार से शुरूआत हो गई। इस दिन छठ व्रतियां स्नान कर कद्दू भात का प्रसाद ग्रहण कर छठ पूजा की शुरुआत की। छठ व्रतियों और पूरे परिवार को कद्दू भात खाने की परंपरा वर्षों से चली आ रही है ।

नहाय-खाय के साथ छठ महापर्व शुरू

घाघरा (आजाद सिपाही)। लोक आस्था का महापर्व छठ शनिवार को नहाय-खाय के साथ श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ आरंभ हो गया। घाघरा प्रखंड के विभिन्न गांवों में छठ व्रतियों ने शुद्धता और पवित्रता के साथ नहाय-खाय की विधि पूरी की। सुबह से ही गांवों में पवित्रता का माहौल बना रहा। व्रतियों ने नदी, तालाब और कुओं में स्नान कर भगवान सूर्य की आराधना की और इसके बाद चूल्हे पर लउवा भात (कद्दू-भात और चने की दाल) बनाकर ग्रहण किया। नहाय-खाय के साथ ही चार दिवसीय छठ पर्व की शुरूआत हो गई है। छठ वर्ती रविवार को खरना, सोमवार को अस्ताचगामी भगवान सूर्य अर्घ्य, जबकि मंगलवार को उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देने की तैयारी में जुट गए हैं। गांवों में धार्मिक गीतों की गूंज और घर-आंगन की सफाई से माहौल भक्तिमय बन गया है।

झारखंड में तेली समाज अपने अधिकार के लिए अब लड़ेगा आर-पार की लड़ाई : उदासन नाग

आजाद सिपाही संवाददाता

बसिया। प्रखंड मुख्यालय के तिर्रा केमता टोली में छोटानागपुरिया तेली उत्थान समाज के केंद्रीय अध्यक्ष उदासन नाग की अध्यक्षता में शनिवार को बैठक हुई। जिसमें गुमला आदिवासी छात्र संघ के नेता अशोक भगत के दिए बयान का कड़ा विरोध किया गया। इस संबंध में उदासन नाग ने कहा कि झारखंड में रहने वाले सभी झारखंडियों को भारत का संविधान अधिकार देता है कि वह अपने अधिकार की मांग संवैधानिक तरीके से कर सकते हैं। तेली समाज का रहन-सहन रूढ़िवादी है। वर्षो से तेली समाज अपने समाज को आदिवासी में शामिल करने की मांग कर रहा है। वह भी शांतिपूर्ण तरीके से पर इस बीच अशोक भगत द्वारा जो उलजुलूल बयान तेली समाज के बारे दिया जा रहा है उसे समाज कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। अब झारखंड में तेली समाज अपने अधिकार के लिए आर पार की लड़ाई करेगा, इसके लिए पूरे झारखंड में तेली समाज आंदोलन की रूपरेखा तैयार कर रहा है। कहा कि तेली समाज किसी राजनीतिक दल का पिट्ठू नहीं है। पूर्व की सरकार हो या वर्तमान की सरकार, सभी ने तेली समाज को ठगा है। पर अब तेली समाज जाग चुका है। अपने अधिकार के लिए निर्णायक आंदोलन करने की तैयारी की जा रही है।

कुर्मी समाज की मांग को तेली समाज का समर्थन

छोटानागपुरिया तेली उत्थान समाज के केंद्रीय अध्यक्ष उदासन नाग ने कहा कि कुर्मी समाज संवैधानिक तरीके से अपने अधिकार की मांग कर रही है जिसका समर्थन तेली समाज करता है। इस मौके पर भागीरथी साहू, दिलीप साहू, कृष्ण ओहदार, मुकेश ओहदार, गोवर्धन साहू, अभिषेक साहू, गुरुचरण साहू और अजय साहू आदि मौजूद थे।

बाइक सवार नाबालिग स्कूली छात्र की सड़क हादसे में मौत

पुलिस एवं जिला प्रशासन के निर्देशो का विद्यालय प्रबंधन नहीं कर रहे है पालन, अभिभावक लापरवाह

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। पालकोट रोड स्थित झारखंड डिपा मोड में शनिवार को सड़क हादसे में 15 वर्षीय विनय टाना भगत नामक किशोर की मौत हो गई। वह बघिमा टुकु टोली का रहने वाला था। वह तेज रफ्तार बाइक चला रहा था। उसने रेलिंग को जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे के बाद जहां छात्रों में दहशत है, वहीं पुलिस महकमें में सन्नाटा छा गया है।

एक बाइक पर सवार थे तीन छात्र

घटना शनिवार की सुबह नौ बजे की है। मृतक छात्र संत अन्ना इंटर कॉलेज पुग्गू में 11वीं कक्षा का छात्र था। उसके पिता इंदु टाना भगत पालकोट प्रखंड के बघिमा टुकु टोली निवासी हैं। बताया जा रहा कि तीनों छात्र एक बाइक में सवार होकर स्कूल आ रहे थे। बाइक में पीछे बैठे सोनू केरकेट्टा एक अन्य छात्र को हल्की चोट लगी। दोनों छात्र का इलाज कराया जा रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो तीनों छात्र एक बाइक पर सवार होकर तेज रफ्तार में स्कूल आ रहे थे। झारखंड डिपा मोड में बाइक अनियंत्रित हो गई और सड़क के किनारे की रेलिंग में जा कर टकरी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक रेलिंग के बीच में जा कर फंस गई। स्थानीय लोगों की मदद से तीनों को रेलिंग से निकाल कर सदर अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टर ने जांच के उपरांत विनय को मृत घोषित कर दिया। उधर, मृतक की चाची विनीता कुमारी ने बताया तीनों स्कूल के लिए बाइक से निकले थे। विनय हेलमेट पहना था। इधर, सदर अस्पताल में लोगों की भीड़ लग गई। परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। वहीं, पुलिस सदर अस्पताल पहुंचकर आगे की कार्रवाई में जुट गई है। हैरत की बात तो यह है कि जहां एसपी हारिश बिन जमा स्कूली छात्रों के बीच बाइक और वाहन चालन को लेकर काफी सख्त हैं। उसके बावजूद इस तरह की घटना होने से कई तरह के प्रश्न पैदा होने लगे हैं। पुलिस एवं जिला प्रशासन के निर्देशों का स्कूल प्रबंधन पर कोई असर नहीं पड़ रहा है। एसपी ने शहर के सभी विद्यालय के प्रिंसिपल को पत्र लिखकर निर्देशित किया था कि नाबालिक स्कूली छात्रों को बाइक स्कूल लाने को लेकर रोक लगाई जाए। साथ ही कुछ विद्यालय और अभिभावक प्रशासनिक आदेश का पालन भी कर रहे हैं। छात्रों के बाइक विद्यालय लाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। बावजूद कुछ छात्र विद्यालय के बाहर बाइक लगाकर स्कूल पहुंचते हैं।

चैनपुर पुलिस की बड़ी कार्रवाई, 100 किलो अवैध जावा महुआ किया नष्ट

चैनपुर (आजाद सिपाही)। पुलिस ने अवैध शराब के कारोबार के खिलाफ कार्रवाई जारी रखते हुए शनिवार को गश्ती की। इस दौरान चैनपुर थाना अंतर्गत बम्हनी गांव में थाना प्रभारी कृष्णा कुमार के नेतृत्व में छापामारी की गयी। जहां गांव के कुछ घरों से लगभग 100 किलोग्राम अवैध जावा महुआ (कच्ची शराब बनाने का सामान) जब्त कर मौके पर ही विनष्ट कर दिया गया। थाना प्रभारी ने इस दौरान अवैध रूप से शराब बनाने और बेचने में शामिल सभी लोगों को सख्त हिदायत दी। साफ शब्दों में चेताते हुए कहा कि क्षेत्र में अवैध महुवा शराब का धंधा किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भविष्य में ऐसी गतिविधि पाए जाने पर दोषियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उधर. पुलिस के इस अचानक अभियान से अवैध महुवा शराब कारोबारियों में हड़कंप मच गया है। पुलिस का कहना है कि क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने और अपराधों पर नियंत्रण के लिए अवैध शराब के खिलाफ यह अभियान लगातार जारी रहेगा।

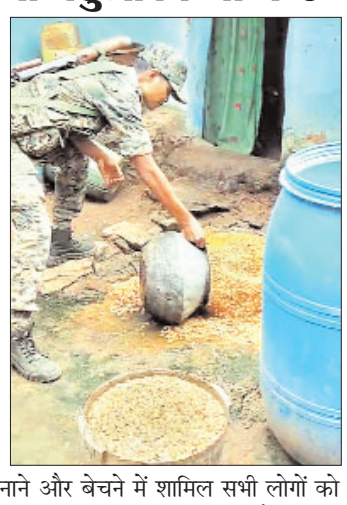

लोक आस्था का महापर्व है छठ : रमेश

गुमला (आजाद सिपाही)। झारखंड फेडरेशन चेंबर ऑफ कॉमर्स के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रमेश कुमार चीनी ने छठ व्रतीयों और छठ पर आस्था रखने वाले लोगों को पर्व की शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा कि यह पावन त्योहार भगवान भास्कर की आराधना के लिए स्वच्छ मन से मनाया जाता है। कहा कि लोक आस्था का यह पर्व निश्चल मन से भगवान की आराधना का संदेश देता है। यह शक्ति का प्रतीक भी है। बताया कि उनके घर में पत्नी एवं बड़ी पुत्री सपना कुमारी भी छठ करती हैं। उन्होंने जिला प्रशासन से अनुरोध किया है कि छठ व्रतियों की सुविधा का ख्याल रखें और छठ घाटों पर सुरक्षा की पूरी व्यवस्था की जाए।

बीएलओ कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

घाघरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड कार्यालय परिसर स्थित सभागार में मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य को लेकर बीएलओ कर्मियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य वर्ष 2003 में प्रकाशित मतदाता सूची को वर्ष 2025 की अद्यतन मतदाता सूची से मिलान (मैपिंग) कर सही एवं त्रुटिरहित मतदाता सूची तैयार करना था। इस दौरान कर्मियों को मतदाता सूची में ए, बी, सी और ई श्रेणी के मतदाताओं की पहचान एवं सुधार की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षणकर्ता ने बताया कि प्रत्येक बीएलओ को अपने क्षेत्र के मतदाताओं का सत्यापन कर अद्यतन आंकड़ा उपलब्ध कराना सुनिश्चित करना है, ताकि आगामी चुनाव में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो। इस अवसर पर घाघरा प्रखंड के बीडीओ दिनेश कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे सभी बीएलओ कर्मियों से कहा कि वे पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ कार्य करें, क्योंकि सटीक मतदाता सूची ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया की बुनियाद है। इस दौरान कंप्यूटर सहायक ज्योति लाल महतो ने भी तकनीकी जानकारी साझा की।

निदेशक, लेखा प्रशासन ने पालकोट एवं बागवानी परियोजनाओं का किया निरीक्षण

गुमला (आजाद सिपाही)। निदेशक, लेखा प्रशासन एवं स्वनियोजन, जिला ग्रामीण विकास शाखा, विद्या भूषण कुमार की ओर से पालकोट प्रखण्ड कार्यालय का निरीक्षण किया गया। इस दौरान कार्यालय संचालन की स्थिति, कर्मियों की उपस्थिति एवं अभिलेखों के संधारण का विस्तृत अवलोकन किया गया। अधोहस्ताक्षरी द्वारा बीडीओ एवं अन्य अधिकारियों को कार्यालय को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने एवं प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये। जिला समाज कल्याण पदाधिकारी के सहयोग से दो वर्षीय भरत किड़ो, जिसकी माता नहीं थी एवं जो शारीरिक रूप से कमजोर पाया गया, को आवश्यक चिकित्सकीय उपचार के लिए एमटीसी सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं, निरीक्षण के दौरान उपस्थिति पंजी की जांच में कुछ कर्मी अनाधिकृत रूप से अनुपस्थित पाये गये, जिनका वेतन अगले आदेश तक स्थगित रखने का निर्देश दिया गया।

चैनपुर सीएचसी में एंबुलेंस न मिलने से मौत एवं अवैध वसूली का मामला

बीडीओ-जिप सदस्य ने किया निरीक्षण लापरवाह कर्मचारियों को दी चेतावनी

आजाद सिपाही संवाददाता

चैनपुर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में व्याप्त घोर अनियमितताओं और हाल ही में एंबुलेंस की कमी के चलते एक युवक की मौत के बाद शनिवार को बीडीओ यादव बैठा और जिप सदस्य मेरी लकड़ा ने सीएचसी का औचक निरीक्षण किया। इस दौरे से स्वास्थ्यकर्मियों में हड़कंप मच गया। दरअसल चैनपुर सीएचसी पिछले काफी समय से अपनी लचर व्यवस्था और स्वास्थ्यकर्मियों द्वारा मरीजों से की जा रही अवैध उगाही के आरोपों के कारण सुर्खियों में रहा है। विगत दिनों भी यहां अवैध उगाही का मामला प्रकाश में आया था। इन गंभीर मामलों के बीच सबसे बड़ा झटका तब लगा जब एंबुलेंस की अनुपलब्धता के कारण एक युवक की तड़पकर मौत हो गयी। इस दुखद घटना ने सीएचसी की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिया। उधर, निरीक्षण के दौरान बीडीओ और जिप सदस्य ने एक-एक कर सभी स्वास्थ्यकर्मियों से मुलाकात की। बीडीओ ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने आए दिन सामने आ रहे मामलों पर तुरंत ध्यान देने और अवैध उगाही को तत्काल रोकने का निर्देश दिया। वहीं, जिप सदस्य ने स्वास्थ्यकर्मियों को याद दिलाया कि मरीजों की सेवा करना उनका प्राथमिक धर्म और कर्म है। युवक की मौत को दुखद बताते हुए जिप सदस्य ने तत्काल एंबुलेंस की जरूरत पर जोर दिया। कहा कि एंबुलेंस नहीं मिलने के कारण एक युवक की तड़पकर मौत हो गई जो दुखद है। हमें पूर्व में सीएस द्वारा चैनपुर स्वास्थ्य केंद्र में एंबुलेंस देने का आश्वासन मिला था। पर दुर्भाग्यपूर्ण है कि अप तक एम्बुलेंस नहीं मिला। उन्होंने गुमला डीसी एवं सिविल सर्जन से तत्काल एक एंबुलेंस की मांग की। बताया कि रेफर के बाद मरीज को गुमला पहुंचने के लिए 50 किलोमीटर का लंबा सफर तय करना पड़ता है। इसलिए एंबुलेंस का होना बेहद जरूरी है, ताकि इसकी कमी के चलते किसी की जान न जाए। भविष्य में इस तरह की गड़बड़ी रोकने के लिए मेरी लकड़ा ने कहा कि महीने में एक बार स्वास्थ्यकर्मियों के साथ बैठक की जाएगी जिससे सीएचसी की कार्यप्रणाली पर लगातार नजर रखी जा सके। अंत में अनुमंडल स्तरीय 30 बेड वाले अस्पताल के निर्माण कार्य की कछुए की गति' पर नाराजगी व्यक्त करते हुए तेजी लाने को कहा।

गोपाल साहू पब्लिक स्कूल में बच्चों ने दी छठ पूजा पर शानदार प्रस्तुति

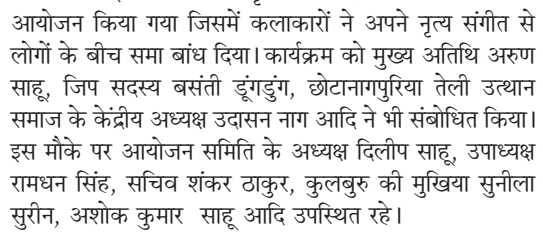

घाघरा (आजाद सिपाही)। क्षेत्र के पाकर टोली स्थित गोपाल साहू पब्लिक स्कूल में शनिवार को छठ पूजा के अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें बच्चों ने पारंपरिक वेशभूषा में छठी मइया की आराधना से जुड़ी सुंदर प्रस्तुति दी। विद्यालय परिसर में छठी मइया के गीत, कांचा ही बांस के बहंगिया और 'उग हे सूरज देव' जैसे पारंपरिक गीतों पर बच्चों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों को भावविभोर कर दिया। इस दौरान छात्राओं ने छठ व्रत की महत्ता और उसकी विधि-विधान को नाट्य रूपांतरण के माध्यम से दर्शाया। विद्यालय की शिक्षिकाओं और शिक्षकों ने बच्चों के उत्साह की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से बच्चों में संस्कृति और परंपरा के प्रति सम्मान बढ़ता है। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राएं, शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं उपस्थित रहे।

डाईर मेला सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का अयोजन

बसिया (आजाद सिपाही)। अनुमंडल स्थित कुरकुरा तेतरटोली में डाईर मेला सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का अयोजन हुआ। जिसका उद्घाटन तेली समाज के प्रदेश अध्यक्ष सह कांग्रेस नेता अरुण साहू, विशिष्ट अतिथि जिला परिषद सदस्य बसंती डूंगडुंग ने किया। डाईर मेला में सांस्कृतिक कार्यक्रम आर्केस्टा का भी आयोजन किया गया जिसमें कलाकारों ने अपने नृत्य संगीत से लोगों के बीच समा बांध दिया। कार्यक्रम को मुख्य अतिथि अरुण साहू, जिप सदस्य बसंती डूंगडुंग, छोटानागपुरिया तेली उत्थान समाज के केंद्रीय अध्यक्ष उदासन नाग आदि ने भी संबोधित किया। इस मौके पर आयोजन समिति के अध्यक्ष दिलीप साहू, उपाध्यक्ष रामधन सिंह, सचिव शंकर ठाकुर, कुलबुरु की मुखिया सुनीला सुरीन, अशोक कुमार साहू आदि उपस्थित रहे।

NETARHAT AWASIYA VIDYALAYA, NETARHAT
P.O- NETARHAT, DISTRICT- LATEHAR
(An Autonomous Institute under School Education & Literacy Department, Govt. of Jharkhand)
Tender Inviting Notice

Enquiry No. - 323 **Dated-24-10-2025**

Sealed tenders are invited for Netarhat Awasiya Vidyalaya, Netarhat from reputed parties/firms/Company/contractors having relevant experience in supply of Miscellaneous items for supply and installation of Water Purifier Machine at Netarhat Awasiya Vidyalaya, Netarhat.

1.	Name of the Tender	For Supply and installation the Water Purifier Machine for all Ashrams at Netarhat Awasiya Vidyalaya , Netarhat.
2.	Scope of Work	For Supply and installation the Water Purifier Machine for all Ashrams at Netarhat Awasiya Vidyalaya , Netarhat.
3.	Name and Address of the Office Inviting Tender	Principal, Netarhat Awasiya Vidyalaya , Netarhat, P.O - Netarhat, Dist- Latehar.
4.	Date of Publication of Tender on Website	24.10.2025 at 03.00 P. M.
5.	Last Date and Time for submission of Bids	10.11.2025 at 11.30 A. M
6.	Date of Opening of the Tender	11.11.2025 at 11.30 P.M. (Technical Bid) 11.11.2025 at 03.30 P.M. (Financial Bid)

Complete details can be seen on our school's website www.netarhatvidyalaya.com
Sd/- Principal
PR 364716 Human Resource Developement (25-26)_D
Netarhat Awasiya Vidyalaya, Netarhat

कार्यालयः जिला स्वास्थ्य समिति, कोडरमा
Email ID :- cs.koderma4@gmail.com

पत्रांक.....(MMJAY) कोडरमा, दिनांक...../

शुद्धि पत्र

दिनांक 10.09.2025 को आयोजित हेल्थ टास्क फोर्स की बैठक में लिए गए निर्णय के आलोक में, मॉडल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों का विकास किया जाना आवश्यक है, ताकि गुणवत्ता पूर्ण उपचार के साथ–साथ मातृत्व एवं नवजात शिशु सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु पत्रांक संख्या 162, दिनांक 07.10.2025 (PR. No 363758) के माध्यम से निविदा आमंत्रित की गई थी तथा पत्रांक संख्या 171, दिनांक 18.10.2025 के माध्यम से एक शुद्धि पत्र भी प्रकाशित किया गया था।

अब निम्नांकित बिंदु में संशोधन किया जाता है—

संशोधित बिंदु (Revised Points):

पूर्व निर्धारित तिथि:- 25.10.2025 समय अपराह्न 4:00 बजे
संशोधित तिथि:- निविदा खोलने एवं तकनीकी प्रस्तुति की तिथि 30.10.2025 समय अपराह्न 4:00 बजे
स्थान :- समाहरणालय सभागार, कोडरमा ।

अन्य सभी शर्तें पूर्ववत रहेंगी।

अधिक जानकारी हेतु इच्छुक अभ्यर्थी https://www.koderma.nic.in (विभागीय वेबसाइट) पर अवलोकन कर सकते हैं।

मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी सह मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, DHS कोडरमा

PR 364736 (Health Med Edu and Family Welfare) 25-26 (D)

आजाद सिपाही
रांची, रविवार, 26 अक्टूबर, 2025
www.azadsipahi.in
11

रामायण-महाभारत काल से ही रही है छठ मनाने की परंपरा

दीपक कुमार

बोकारो (आजाद सिपाही)। त्योहारों का देश समझा जानेवाला भारतवर्ष में कई ऐसे पर्व हैं, जिन्हें काफी कठिन माना जाता है। इन्हीं में से एक है लोक आस्था का महापर्व 'छठ' , जिसे रामायण और महाभारत काल से ही मनाने की परंपरा रही है।

नहाय-खाय के साथ आरंभ होने वाले लोकआस्था के इस चार दिवसीय महापर्व को लेकर शास्त्रों में कई कथाएं मौजूद हैं। एक कथा के अनुसार, महाभारत काल में जब पांडव अपना सारा राजपाट जुये में हार गये, तब द्रौपदी ने छठ व्रत किया। इससे उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हुईं तथा पांडवों को राजपाट वापस मिल गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार छठ पूजा की शुरूआत सूर्य पुत्र कर्ण ने की थी। वे प्रतिदिन घंटों कमर तक पानी में खड़े रहकर सूर्य को अर्घ्य देते थे। सूर्य की कृपा से ही वे महान योद्धा बने थे। इसके अलावा छठ महापर्व का उल्लेख रामायण काल में भी मिलता है। किंवदंती के अनुसार, ऐतिहासिक नगरी मुंगेर (अंग देश) के सीता चरण में कभी मां सीता ने छह दिनों तक रह कर छठ पूजा की थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार 14 वर्ष वनवास के बाद जब भगवान राम अयोध्या लौटे थे तो रावण वध के पाप से मुक्त होने के लिए ऋषि-मुनियों के आदेश पर राजसूय यज्ञ करने का फैसला लिया। इसके लिए मुग्दल ऋषि ने भगवान राम एवं सीता को अपने आश्रम में आने का आदेश दिया। ऋषि की आज्ञा पर भगवान राम एवं सीता वहां गए और उन्हें इस व्रत के बारे में बताया गया। मुग्दल ऋषि ने मां सीता को कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि को सूर्यदेव की उपासना करने का आदेश दिया। यहीं रह कर माता सीता ने छह दिनों तक सूर्यदेव की पूजा की थी। एक अन्य पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी के सूर्यास्त और सप्तमी के सूर्योदय के मध्य वेदमाता गायत्री का जन्म हुआ था। प्रकृति के षष्ठ अंश से उत्पन्न षष्ठी माता बालकों की रक्षा करने वाले विष्णु भगवान द्वारा रची माया हैं। बालक के जन्म के छठे दिन छठी मैया की पूजा-अर्चना की जाती है, जिससे बच्चे के ग्रह-गोचर शांत हो जाएं और जिंदगी में किसी प्रकार का कष्ट नहीं आए। इस मान्यता के तहत ही इस तिथि को षष्ठी देवी का व्रत होने लगा।

निरंतर बढ़ती जा रही है छठ महापर्व के प्रति लोगों की गहरी आस्था : छठ को पहले केवल बिहार, झारखंड और उत्तर भारत में ही मनाया जाता था। लेकिन, अब धीरे-धीरे पूरे देश में इसके महत्व को स्वीकार कर लिया गया है। विदेशों में रहने वाले भारतवंशी भी इस पर्व को धूमधाम से मनाते आ रहे हैं। छठ पर्व षष्ठी का अपभ्रंश है। इस कारण इस व्रत का नामकरण छठ व्रत हो गया। छठ वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक माह में। चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले छठ पर्व को चैती छठ और कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले पर्व को 'कार्तिकी छठ' भी कहा जाता है। इस पूजा के लिए चार दिन महत्वपूर्ण हैं नहाय-खाय, खरना या लोहंडा, सांझा अर्घ्य और सूर्योदय अर्घ्य। छठ की पूजा में गन्ना, फल, डाला और सूप आदि का प्रयोग किया जाता है। मान्यताओं के अनुसार, छठी मइया को भगवान सूर्य की बहन बताया गया हैं। इस पर्व के दौरान छठी मइया के अलावा भगवान सूर्य की पूजा-आराधना होती है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति इन दोनों की अर्चना करता है उनकी संतानों की छठी माता रक्षा करती हैं। छठ वास्तव में सूयोर्पासना का पर्व है। इसलिए इसे सूर्य षष्ठी व्रत के नाम से भी जाना जाता है।

वेदों में छठ पूजा का संदर्भ

छठ पूजा के अनुष्ठान, जैसे कि पवित्र स्नान, उपवास और नदी में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देना, ऋग्वेद में वर्णित प्राचीन अनुष्ठानों के समान हैं। यह सूर्य को जीवन और कल्याण के स्रोत के रूप में आभार व्यक्त करने का एक प्राचीन वैदिक तरीका है। 9 गोपालेश्वर महादेव मंदिर, चीराचास, बोकारो के प्रधान पुजारी सह वेदाचार्य पंडित व्यास पांडेय बताते हैं कि छठ पूजा का मूल सूर्य देव की पूजा में निहित है, जिनकी स्तुति वेदों में कई स्थानों पर की गयी है। ऋग्वेद में सूर्य को- सविता और आदित्य, अलग अलग नामों से पुकारा गया है। इसमें सूर्य को पापों का नाश करने वाला, रोगों को हरने वाला तथा सत्य का प्रतीक बताया गया है। एक श्लोक में सूर्य को 'जगतस्तस्थुषश्च' अर्थात सभी चर और अचर प्राणियों की आत्मा कहा गया है। वहीं यजुर्वेद में भी सूर्य को ब्रह्मांड का ऊर्जा स्रोत बताया गया है। छठ पूजा में एक ओर सूर्य की पूजा की जाती है, वहीं दूसरी ओर छठी मैया (सूर्य की बहन) की भी पूजा होती है। वेदों में उषा का उल्लेख सूर्य की पत्नी या देवी के रूप में मिलता है। छठ पूजा में किये जाने वाले अनुष्ठान जैसे पवित्र स्नान, उपवास, और उगते-डूबते सूर्य को अर्घ्य देना, प्राचीन वैदिक परंपराओं से जुड़े हैं।

अंतरराष्ट्रीय कलाकार दिवस पर विशेष कला अभियान शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

झरिया। अंतरराष्ट्रीय कलाकार दिवस पर झरिया में एक विशेष कल अभियान की शुरूआत की गयी। इस अभियान के तहत झरिया के घोनुडीह क्षेत्र में 109 साल पुरानी झरिया कोयला की आग की आकर्षक पेंटिंग बनायी गयी। 7-8 युवा कलाकार इस कार्यक्रम में शामिल हुए और आग स्थल के पास ऑइल पेंट और ऐक्रेलिक रंगों से कैनवास पर अपनी कलाकृतियां उकेरीं। उन्होंने कहा कि हम इस ऐतिहासिक अग्नि क्षेत्र के प्राकृतिक दृश्यों को चित्रित करके बहुत खुश हैं। हमने अपने माता-पिता से ऐसी कोयला आग के बारे में सुना था, लेकिन पहली बार इसे करीब से देख रहे हैं। आग के रंगों में भी सुंदरता होती है। 25 अक्टूबर प्रसिद्ध कलाकार पाब्लो पिकासो का जन्मदिन है। उनके जन्मदिन पर 'अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस' मनाया जाता है। शनिवार को झरिया में, आइएनए के पिनाकी रॉय और ललित कला केंद्र, धनबाद के वरिष्ठ कलाकार संजय पंडित के मार्गदर्शन में युवा कलाकार निधि अग्रवाल, आनंद पंडित, रिंकी कुमारी, रुद्र जीत पॉल, आदित्य सोनी, सुमित कुमार उत्साहपूर्वक कला शिविर में शामिल हुए। कार्यक्रम में मौसमी रॉय, संजय पंडित, पिनाकी राय ने युवा कलाकारों को 'झरिया की धधकती आग' को कला में ढालने में मदद की।

छठ पर सभी पदाधिकारियों को अलर्ट रहने का निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। जिला प्रशासन ने छठ महापर्व के अवसर पर श्रद्धालुओं की सुरक्षा और व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए व्यापक तैयारियों के निर्देश जारी किए हैं। उपायुक्त अजय नाथ झा ने शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिला स्तरीय पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारीझ सभी प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी झ अंचलाधिकारी के साथ बैठक कर विधि-व्यवस्था की समीक्षा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। उपायुक्त ने कहा कि छठ महापर्व आस्था और लोक परंपरा का पर्व है, जिसे जिले में पूरी शांति, सुरक्षा और स्वच्छता के साथ संपन्न कराया जाना जिला प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। उन्होंने सभी अधिकारियों को अलर्ट रहने और प्रत्येक स्थिति पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उपायुक्त ने विशेष रूप से कहा कि गहरे पानी वाले सभी घाटों और तालाबों पर प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारी तैनात रहेंगे, ताकि किसी प्रकार की अप्रिय घटना नहीं हो। जिले के सभी तालाबों, नदियों और छठ घाटों पर बैरिकेटिंग लगाने के निर्देश दिये गये हैं। खासकर गहरे पानी वाले क्षेत्र में बांस बल्ला/ रस्सी आदि से सुरक्षा घेरा बनाया जाये। इन स्थलों पर पुलिस बल, गोताखोरों और एनडीआरएफ टीमों की भी तैनाती करें। उपायुक्त ने कहा कि हर घाट पर पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, पेयजल और मेडिकल टीम की व्यवस्था भी की जाये। उन्होंने निर्देश दिया कि सभी बीडीओ और सीओ एवं प्रखंड स्तरीय अन्य पदाधिकारी अपने-अपने क्षेत्रों के सभी छठ घाटों का निरीक्षण करें। प्रमुख एवं बड़े घाटों का निरीक्षण एसडीओ और एसडीपीओ स्वयं करेंगे। उन्होंने कहा कि घाटों पर भीड़-भाड़ को देखते हुए प्रवेश और निकास मार्ग अलग-अलग बनाये जायें, ताकि श्रद्धालुओं को असुविधा न हो। एसडीओ चास प्रांजल ढ़ांडा ने बताया कि अनुमंडल क्षेत्र में कुल 63 दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी पुलिस बल को प्रतिनियुक्ति किया गया है। वहीं, बेरमो अनुमंडल पदाधिकारी मुकेश मछुआ ने बताया कि अनुमंडल क्षेत्र में कुल 86 दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी पुलिस बल को प्रतिनियुक्ति किया गया है।

आज खुलेगा गरगा डैम का फाटक, सतर्क रहने की अपील

बोकारो (आजाद सिपाही)। जिले में अस्था का महापर्व 'छठ' के अवसर पर गरगा डैम का फाटक विशेष रूप से खोला जायेगा। ताकि नदी घाट स्वच्छ हो और पर्व पर छठ व्रती सुरक्षित और सहज तरीके से पूजा में हिस्सा ले सकें। इस बाबत शनिवार शाम अनुमंडल पदाधिकारी (एसडीओ) चास प्रांजल ढ़ांडा ने बताया कि डैम का फाटक रविवार अपराह्न 9 से 10 बजे तक खोला जायेगा। उन्होंने आमजन से अनुरोध किया कि इस समय के दौरान नदी तट पर सतर्कता बनाए रखें। उन्होंने आमजनों से डैम के आसपास भीड़ से बचने झ विशेषकर निचले इलाके के लोगों को जरूरी सतर्कता बरतने की अपील की है।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें
www.azadsipahi.in

सिंटर प्लांट में सड़क सुरक्षा जागरूकता के लिए मानव श्रृंखला का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक विशेष जागरूकता पहल के तहत मानव श्रृंखला का आयोजन सिंटर प्लांट एवं सुरक्षा अभियंत्रण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में सिंटर प्लांट के मुख्य मार्ग पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने सुरक्षा संदेशों और नारों से युक्त तख्तियों के माध्यम से सड़क सुरक्षा का संदेश दिया।

कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक (सिंटर प्लांट) पी चौधरी उपस्थित रहे। साथ में महाप्रबंधक (सिंटर प्लांट-ऑपरेशन) आई मुखर्जी, महाप्रबंधक (सिंटर प्लांट-मैकेनिकल) अंशुमाली, महाप्रबंधक (सिंटर प्लांट-इलेक्ट्रिकल) राजेश कुमार, सहायक महाप्रबंधक (सुरक्षा अभियंत्रण विभाग) मनोज कुमार सहित अन्य वरीय अधिकारी, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में संविदा श्रमिक उपस्थित थे। सभी ने सुरक्षा तख्तियों और बैनरों के माध्यम से सड़क पर सतर्कता बरतने, यातायात नियमों के पालन और सुरक्षित कार्य परिवेश सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया। इस पहल का उद्देश्य प्लांट के कर्मचारियों एवं ठेका श्रमिकों में सड़क सुरक्षा के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाना और सुरक्षित कार्य वातावरण सुनिश्चित करने हेतु प्रेरित करना था। बोकारो स्टील प्लांट सदैव अपने कर्मचारियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता आया है और इस प्रकार के कार्यक्रम सुरक्षा संस्कृति को सुदृढ़ करने में सहायक हैं।

विधायक अरूप चटर्जी की पहल पर हाइ मास्ट लाइट की हुई मरम्मत

आजाद सिपाही संवाददाता

चिरकुंडा। निरसा विधायक अरुप चटर्जी द्वारा मैथन सिरामिक को नेहरू रोड स्थित हाइ मास्ट लाइट की मरम्मती को कहा गया था। जिसकी पहल करते हुए मैथन सिरामिक के कर्मियों द्वारा शनिवार को मरम्मती कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए मैथन सिरामिक के सीएसआर पदाधिकारी सीएस सिंह ने कहा की दो दिन पूर्व 23अक्टूबर को निरसा विधायक अरुप चटर्जी द्वारा नेहरू रोड मोड़ स्थित हाइ मास्ट लाइट की मरम्मती के लिए कहा गया था। ताकि यहां से आनेजाने वाले राहगीरों को सुविधा हो सके। साथ ही आसमाजिक लोगों पर प्रशासन की कड़ी नजर बनाने में सुविधा हो। उम्मीद है की शाम तक सभी छह लाइट को बदल कर नया लाइट लगा, चालू कर दिया जायेगा। पिछले कई दिनों से यह लाइट खराब थी इसके लिए नगर परिषद को स्थानीय लोगों द्वारा कहा गया था मगर ठीक नहीं करवाया गया था विधायक के पहल पर नेहरू रोड मोड हुआ जगमग।

लोजपा महानगर अध्यक्ष का कार्यकर्ताओं ने किया स्वागत

झरिया (आजाद सिपाही)। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने शनिवार को लोदना निवासी रूदल पासवान को धनबाद जिला महानगर अध्यक्ष पद पर नियुक्त किये जाने पर कार्यकताओं ने झरिया इंद्रीरा चौक पर भव्य स्वागत किया, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बिरेन्द्र प्रधान ने नियुक्ति पत्र देकर किया, जो झारखण्ड में पार्टी के लिए एक रणनीतिक कदम माना जा रहा है। इस दौरान धनबाद जिला अध्यक्ष दिलीप कुमार, प्रदेश उपाध्यक्ष कपिल पासवान, सचिव डॉ पुरुषोतम कुमार, राष्ट्रीय लेबर सेल प्रधान महासचिव श्रीकांत पासवान मौजूद थे। जिला अध्यक्ष संजय पासवान के नेतृत्व में सैकड़ो कार्यकर्ताओ ने फूलमाला और बुके देकर जोरदार स्वागत किया। प्रदेश अध्यक्ष बिरेन्द्र प्रधान ने कहा की रूदल पासवान, जो लंबे समय से पार्टी में सक्रिय रहे हैं, अब पार्टी की जिला स्तर पर मजबूती प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगे। बिरेन्द्र प्रधान ने नियुक्ति की घोषणा करते हुए कहा रूदल पासवान का अनुभव और मेहनत पार्टी को नयी ऊंचाइयों पर ले जायेगी।

बीएसएल में 73 एसीटीटी ने दिया योगदान

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट में योगदान देने वाले 73 एसीटीटी प्रशिक्षुओं के नये बैच के लिए 25 अक्टूबर को ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग में इंडक्शन प्रोग्राम का पारंपरिक रूप से दीप प्रज्वलन के साथ शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) अंजनी कुमार शरण, मुख्य महाप्रबंधक (ज्ञानार्जन एवं विकास) नीता बा तथा महाप्रबंधक (मानव संसाधन) सुश्री प्रांजलि उपस्थित थीं। मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) अंजनी कुमार शरण ने प्रशिक्षुओं को सुरक्षा शपथ दिलाई।मुख्य महाप्रबंधक (ज्ञानार्जन एवं विकास) नीता बा ने स्वागत अभिभाषण में प्रशिक्षुओं को उनकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए बोकारो स्टील प्लांट में उनका स्वागत किया तथा सभी प्रशिक्षुओं को अपने पूरे प्रशिक्षण अवधि में नवाचार के साथ अधिकतम लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित किया। मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) अंजनी कुमार शरण ने बदलते तकनीकी परिवेश और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप प्रशिक्षुओं को अपनी दक्षता बढ़ाने तथा कार्यस्थल पर शून्य दुर्घटना सुनिश्चित करने हेतु प्रेरित किया।

धन्यवाद ज्ञापन देते हुए एसएन मिश्रा, सहायक प्रबंधक (ज्ञानार्जन एवं विकास) ने प्रशिक्षुओं को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग के नव प्रशिक्षु प्रकोष्ठ के कर्मचारियों का अहम योगदान रहा।

जेएमएम नेता एवं बिरसा मुंडा सेना के सदस्यों ने की छठ तलाब की सफाई

आजाद सिपाही संवाददाता

झरिया। आस्था का महापर्व छठ पूजा के मद्देनजर जेएमएम नेता राधेश्याम वाल्मीकि एवं बिरसा मुंडा सेना ने संयुक्त रूप से अपनी निजी खर्च वहन कर जेसीबी मशीन मांगवाकर वार्ड नंबर 46 अंतर्गत गोलकडीह स्थित जलकुम्भीयो से भरे पड़े छठ तलाब को साफ सफाई कराने का काम किया।

इस दौरान बिरसा मुंडा सेना के सदस्यों ने दुबारा तलाब मे प्रवेश कर पूरी तरह से किचड निकालने का काम किया।

बिरसा मुंडा सेना के अध्यक्ष पंकज बाल्मीकि ने बताया कि हमलोग नगर आयुक्त धनबाद को आवेदन किये थे, पर नगर निगम के द्वारा तालाब सफाई के नाम पर खानापूर्ति की गयी। जिसके बाद बिरसा मुंडा सेना सामाजिक संगठन के द्वारा अपने निजी खर्चे पर जेसीबी मशीन मंगवा कर और सदस्यों के द्वारा श्रमदान कर तालाब की सफाई की गयी।

मौके पर आमिर बाउरी, अमन साहनी, मनोज तूरी, राहुल राय, पप्पू कुमार, राकेश, संतोष, मंगल बाउरी, मिथुन, प्रहलाद पासवान, राजा रवानी, अभिषेक वर्मा।

बीएसएल में मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग में राष्ट्रीय कर्मयोगी मिशन के तहत तीन दिवसीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग की मुख्य महाप्रबंधक सुश्री नीता बा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग के सहायक महाप्रबंधक एवं लीड ट्रेनर शशांक शेखर ने राष्ट्रीय कर्मयोगी मिशन के महत्व एवं इसकी उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी दी। विदित है कि पूर्व में राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार के क्षमता निर्माण आयोग द्वारा आयोजित 05 दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग के दो अधिकारीयों सहायक महाप्रबंधक श्री शशांक शेखर तथा श्री अमित आनंद लीड ट्रेनर के रूप में विकसित हो चुके हैं। इन्हीं लीड ट्रेनर्स द्वारा मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण के दूसरे चरण में संयुक्त रूप से कुल 25 अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया। तीन दिवसीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम में बोकारो स्टील प्लांट के अलावा सेल रेफ्रेक्टरी यूनिट, सेलम स्टील प्लांट तथा कोलियरी डिवीजन के अधिकारियों ने भी भाग लिया। सेल की विभिन्न इकाइयों से आये अधिकारियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की काफी सराहना की तथा ऐसे उपयोगी कार्यक्रम आयोजित करने के लिए बोकारो स्टील प्लांट के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान मुख्य प्रशिक्षक शशांक शेखर तथा अमित आनंद ने कर्मयोगी मिशन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि यह पहल प्रशासनिक एवं कार्यस्थलीय सुधार की दिशा में एक सशक्त कदम है। मानव संसाधन के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग की मुख्य महाप्रबंधक नीता बा ने कार्यक्रम के समापन सत्र में कहा कि कर्मयोग की भावना केवल कार्य में दक्षता बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक कर्मी को अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और सेवा-भाव के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

छठ व्रतियों के बीच गायत्री परिवार ने बांटी साड़ी-धोती

आजाद सिपाही संवाददाता

झरिया। गायत्री परिवार द्वारा गायत्री शक्ति पीठ बस्ताकोला में नहाए खाए अनुष्ठान के दिन 91 छठ व्रति भाइयों बहनों के बीच साड़ी, धोती एवं गंगाजल वितरित किया गया। वितरण कार्य के में ट्रस्ट मंडल के सदस्य गण, संरक्षक मंडल के सदस्य गण एवं देवालय प्रबंधन समिति की बहने उपस्थित थी। सर्वप्रथम गायत्री महामंत्र के उच्चारण एवं गुरु आवाहन के साथ सबके मंगलमय एवं स्वस्थ जीवन की प्रार्थना छठी मईयां से की गयी। कार्यक्रम को सफल बनाने में गायत्री परिवार के जिला संयोजक विभूति शरण सिंह, नरेश भट्ट, सीताराम, विमल चन्द्र दास, भूपेंद्र शर्मा, विनोद कुमार साव,बादल चंद्र मंडल समेत कइयों की उपस्थित थी।

अमित शाह ने गिनाये लालू के आधा दर्जन घोटाले

अगली बार बिहार में विधानसभा चुनाव एक चरण में संपन्न कराया जायेगा

आजाद सिपाही संवाददाता

खगड़िया। विधानसभा चुनाव के प्रचार अभियान में बिहार पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नीतीश कुमार की धरती नालंदा से बड़ा एलान किया। उन्होंने कहा कि सब कुछ ठीक रहा तो अगली बार बिहार में विधानसभा चुनाव एक चरण में संपन्न कराया जायेगा। कहा कि जब लालू, राबड़ी की सरकार थी तो खराब विधि व्यवस्था के कारण छह चरणों में चुनाव कराना पड़ता था। खगड़िया, मुंगेर के बाद अमित शाह ने नालंदा में चुनावी रैली को संबोधित किया। राजद की सरकार पर करारा प्रहार करते हुए गृहमंत्री ने कहा कि लॉ एंड ऑर्डर बिहार की बड़ी समस्या थी। लालू राज में छह चरणों में चुनाव होते थे। एनडीए की सरकार बनी तो तीन चरणों तक पहुंच गया। इस बार 6 नवंबर और 12 नवंबर को दो फेज में मतदान है। आप सब मिल कर एनडीए की सरकार बना दो, अगली बार पूरे बिहार में एक ही चरण में चुनाव संपन्न कराया जायेगा। नीतीश कुमार और नरेंद्र मोदी की जोड़ी ने मिल कर नक्सलवाद का खात्मा कर दिया है। इस बार गया, औरंगाबाद, शाहाबाद में भी तीन बजे तक नहीं बल्कि पांच बजे तक वोटिंग होगी। अपराध में जल चुके बिहार को नीतीश कुमार ने एक अच्छा प्रदेश बना दिया। अमित शाह ने कहा कि इसी नालंदा में 1998 और दंगे हुए। यह बात युवा मतदाताओं को पता ही नहीं है। निर्दोष लोग मारे गये, धार्मिक स्थानों को जलाया

गया, दुकानों में आग लगा दी गयीं। लालूजी के बेटे तेजस्वी कानून व्यवस्था की बात करते हैं। वे जरा समझ लें कि 2005 की तुलना में 2024 में आपराधिक घटनाओं में कितने प्रतिशत की कमी आयी है। अमित शाह ने कहा कि मोदीजी ने न सिर्फ बिहार से नक्सलियों का सफाया किया, बल्कि काश्मीर के आतंकियों को भी सबक सिखा दिया। धारा 370 हटाने पर राहुल गांधी खून की नदियां बहने की धमकी दे रहे थे, लेकिन किसी को एक पत्थर चलाने की भी हिम्मत नहीं हुई। पाकिस्तान समर्थित आतंकियों कोऑपरेशन सिंदूर से हमने करारा जवाब दिया। उनके घर में घुसकर सफाया कर दिया।

शाह ने भ्रष्टाचार को लेकर आरजेडी और कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होने कहा कि केंद्र में 11 साल से हमारी सरकार है, लेकिन आज तक मोदी और नीतीश सरकार पर भ्रष्टाचार का एक भी आरोप नहीं है। वहीं आरजेडी चीफ पर करप्शन का आरोप लगाते हुए आधा दर्जन घोटाले गिनाये। शाह ने कहा कि लालू ने चारा घोटाला, लैंड फॉर जॉब घोटाला, आइआरसीटी घोटाला, अलकतरा घोटाला, बाढ़ राहत घोटाला, बीपीएससी भर्ती घोटाला, एबी एक्सपोर्ट घोटाला, और आय से अधिक संपति का घोटाला किया है। बिहार में जब से आरजेडी की सरकार आयी, तो तो घोटाले ही घोटाले हुए। उन्होंने कांग्रेस को भी भ्रष्टाचार पर घेरा। शाह ने कहा कि छोटे मियां तो छोटे मियां, बड़े मियां तो सुभाननअल्लाह। लालू यादव ने इतने घोटाले किए और जब केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी, जो 10 साल चली, जिसमें लालू भी मंत्री थे। उस सरकर ने 12 लाख करोड़ का घपला और घोटाला किया। केंद्र और बिहार में जिनका भ्रष्टाचार का रिकॉर्ड हो, वो महागठबंधन या लठबंधन बिहार का विकास कर सकता है क्या? बिहार का विकास नरेंद्र मोदी और नीतीश बाबू ही कर सकते हैं, जिन पर एक भी भ्रष्टाचार का आरोप नहीं है, वहीं कर सकते हैं।

अयोध्या में रामलला के दर्शन और आरती के समय में बदलाव

दोपहर 12:30 से 1 बजे तक पट बंद रहेंगे कपाट

आजाद सिपाही संवाददाता

अयोध्या। शरद ऋतु के आगमन के साथ ही अयोध्या में रामलला के दर्शन अवधि में बदलाव कर दिया गया है। 23 अक्तूबर से श्रद्धालुओं को राम मंदिर में सुबह 7 बजे से रामलला के दर्शन हो रहे हैं। रात 9 बजे तक दर्शन का यह क्रम जारी रहता है। आरती के समय में भी बदलाव किया गया है। दोपहर में आरती व भोग के लिए एक घंटे तक मंदिर का पट बंद रहता है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से रामलला के दर्शन की नई समय सारिणी जारी की गई है। राम मंदिर के ट्रस्टी डॉ अनिल मिश्र ने बताया कि शरद ऋतु शुरू हो रही है। ऐसे में रामलला के दर्शन अवधि में कुछ बदलाव किया गया है। रामलला की मंगला आरती जो अब तक सुबह 4 बजे होती थी, अब वह 4:30 बजे होती है। साथ ही रामलला की श्रृंगार आरती सुबह 6 बजे के बजाय 6:30 बजे हो रही है। दर्शन अब सुबह 6:30 बजे के बजाय सुबह 7 बजे से शुरू होता है। दोपहर 12 बजे रामलला को भोग अर्पित किया जाता है। इस दौरान दोपहर 12 से 1 बजे तक दर्शन बंद रहता है।

रामलला की संध्या आरती शाम 7 बजे ही होती है। इसके बाद श्रद्धालुओं को रात 9 बजे तक दर्शन प्राप्त होंगे। रात 9:30 बजे शयन आरती के साथ ही मंदिर बंद कर दिया जाता है। शरद ऋतु के चलते रामलला के राग-भोग में भी बदलाव किया गया है। रामलला को ठंड न लगे इसलिए उन्हें सुबह गुनगुने पानी से स्नान कराया जा रहा है।

सरदार पटेल की 150वीं जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन

- परेड में सीआरपीएफ के 5 शौर्य चक्र विजेता और बीएसएफ के 16 वीरता पदक विजेता शामिल होंगे

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। भारत के लौह पुरुष, सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय एकता दिवस प्रति वर्ष 31 अक्टूबर को मनाया जाता है। राष्ट्रीय एकता दिवस भारत की एकता, अखंडता और राष्ट्रीय एकजुटता का प्रतीक है। सरदार पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाला इस वर्ष का राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष है। इस वर्ष का समारोह कई मायनों में अद्वितीय होगा, जो इसे यादगार बना देगा।

राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह देशवासियों को स्मरण कराता है कि सरदार पटेल ने स्वतंत्र भारत के निर्माण में 562 रियासतों को एकजुट करने और आधुनिक भारत की नींव रखने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

सरदार पटेल के नेतृत्व और राष्ट्रीय एकता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के कारण, सरदार पटेल को राष्ट्रीय एकता के वास्तुकार और भारत के लौह पुरुष के रूप में जाना जाता है।

सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित, एकता नगर विविधता में एकता की अवधारणा को दर्शाता है, जो प्राकृतिक सुंदरता को सांस्कृतिक समृद्धि के साथ जोड़ता है।

इस वर्ष राष्ट्रीय एकता दिवस के अनूठे समारोह में गुजरात के नर्मदा जिले के एकता नगर में एक भव्य परेड और सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन शामिल है। परेड के दौरान, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल और राज्यों के पुलिस बल अपने कौशल, अनुशासन और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। भारतीय वायु सेना की सूर्य किरण वायुयानों की टीम द्वारा एक शानदार एयर शो परेड की शान को और बढ़ायेगा।

इस वर्ष परेड में सीआरपीएफ के पांच शौर्य चक्र विजेता और बीएसएफ के 16 वीरता पदक विजेता शामिल होंगे। इन बहादुरों ने झारखंड में नक्सल विरोधी अभियानों और जम्मू और कश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियानों में असाधारण साहस का प्रदर्शन किया। परेड के साथ-साथ, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में 900 कलाकार भारतीय शास्त्रीय नृत्य का प्रदर्शन करेंगे, जो हमारी संस्कृति और राष्ट्रीय एकता की समृद्ध विविधता को रेखांकित करेगा।

राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता, सद्भाव और देशभक्ति की भावना को बल देना और नागरिकों को इन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करना है।

रिलायंस-फेसबुक ने मिल कर रिलायंस एंटरप्राइज इंटेलिजेंस लिमिटेड कंपनी बनायी

नयी दिल्ली। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने फेसबुक के साथ मिलकर एक नयी एआइ कंपनी बनायी है। दोनों कंपनियों ने इस जॉइंट वेंचर का नाम रिलायंस एंटरप्राइज इंटेलिजेंस लिमिटेड (आरइआइएल) रखा है। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने शनिवार (25 अक्टूबर) को रेगुलेटरी फाइलिंग में इसका एलान किया। इस जॉइंट वेंचर में मुकेश अंबानी और मार्क जुकरबर्ग की कंपनियों ने मिलकर शुरुआती तौर पर 855 करोड़ रुपये का निवेश किया है। रिलायंस इंटेलिजेंस लिमिटेड ने फेसबुक की इंडियन आर्म के साथ मिलकर यह नयी कंपनी बनायी है। यह नयी कंपनी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) सर्विसेज को डेवलप करने, मार्केटिंग करने और बेचने पर काम करेगी। रिलायंस इंटेलिजेंस लिमिटेड के पास आरइआइएल में 70% हिस्सेदारी होगी, जबकि बाकी 30% हिस्सा मेटा प्लेटफॉर्म्स इंक की कंपनी फेसबुक ओवरसीज इंक के पास रहेगा। रिलायंस की एआइ यूनिट ने शुरुआती तौर पर 2 करोड़ रुपए का निवेश किया है, जिसमें 20 मिलियन यानी 2 करोड़ इक्विटी शेयर खरीदे गये हैं, जिनकी कीमत 10 रुपये प्रति शेयर है।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें
www.azadsipahi.in

पूर्व मध्य रेल

विविध वैद्युतिक कार्य हेतु ई-निविदा सूचना

मंडल रेल प्रबंधक/विद्युत/पूर्व मध्य रेल, धनबाद द्वारा भारत के राष्ट्रपति की तरफ से निम्नलिखित कार्य के निष्पादन के लिए ई–निविदा आमंत्रित की जाती है:
ई–निविदा संख्या : TRD-OT-29-Cd-Cu-PH-X-25-26.
1. कार्य का नाम, स्थान एवं समापन अवधि : Dhanbad division-BRWD-Garwa Road (CIC section) - All Aluminium Alloy Catenary wire replacement with Cadmium Copper catenary wire (Phase-X). कार्य समापन की अवधि – (18) अठारह माह। 2. कार्य के लिए प्राक्कलित राशि : ₹1,24,20,253.07/– निविदा प्रपत्र का मुल्य–शून्य। 3. बिड सिक्युरिटी : ₹2,12,100/–, 4. ई–निविदा बंद होने एवं खुलने की तिथि एवं समय : ई–निविदा बंद होने की तिथि 17.11.2025 को 11:00 बजे। ई–निविदा खुलने की तिथि 17.11.2025 को 11:30 बजे। 5. वेबसाईट का विवरण : वेबसाईट : www.ireps.gov.in ई निविदा के तहत मैन्युअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किए जायेंगे।

मंडल रेल प्रबंधक/क.वि./
पूमरे/धनबाद
पीआर/1210/डीएचएन/टीआरडी/टी/25–26/36

पूर्व तट रेलवे की ओर से कड़ी चेतावनी

पटरियों के पास या चलती ट्रेनों में सेल्फी लेना और रील बनाना दंडनीय अपराध है

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। पूर्व तट रेलवे ने रेल पटरियों पर, पटरियों के पास या चलती ट्रेनों के फुटबोर्ड या छत पर वीडियो बनाने या रील बनाने की घातक और अवैध प्रथा के खिलाफ जनता-विशेष रूप से युवाओं और सोशल मीडिया के प्रति उत्साही लोगों को सचेत करने के लिए एक सख्त जागरूकता अभियान शुरू किया है। पूर्व तट रेलवे ने स्पष्ट किया है कि इस तरह की जल्दबाजी और लापरवाही न केवल जीवन के लिए खतरा है, बल्कि रेलवे अधिनियम, 1989 के तहत दंडनीय अपराध भी है। यह कदम एक चिंताजनक प्रवृत्ति के जवाब में उठाया गया है जहां कुछ लोग सोशल मीडिया ख्याति हासिल करने के लिए अपनी और रेलवे संचालन की सुरक्षा को जोखिम में डालते हैं, जिससे अक्सर दुखद और घातक दुर्घटनाएं होती हैं।

पूर्व तट रेलवे ने अनुरोध किया है कि रेलवे पटरियां, स्टेशन परिसर और चलती ट्रेनें मनोरंजन वीडियो के लिए पृष्ठभूमि नहीं हैं, बल्कि ये उच्च जोखिम वाले परिचालन क्षेत्र हैं। इन स्थानों पर अतिक्रमण करना या स्टंट करना जीवन के लिए एक गंभीर खतरा है और आपराधिक लापरवाही का कार्य है। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और सरकारी रेलवे पुलिस (जीआरपी) को उल्लंघन करने वालों के खिलाफ 'शून्य

सहिष्णुता' नीति का पालन करने का निर्देश दिया गया है। कानूनी कार्रवाई त्वरित और सख्त होगी। चलती ट्रेनों के पास तस्वीरें या वीडियो लेते हुए या रेलवे पटरियों पर अनधिकृत प्रवेश करते हुए पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। ऐसे उल्लंघनकर्ताओं पर रेलवे अधिनियम, 1989 की धारा 147 और 153 के तहत मामला दर्ज किया जाएगा, जिसमें जेल की सजा के साथ-साथ आर्थिक जुमार्ना भी शामिल है।

पूर्व तट रेलवे सभी नागरिकों, विशेष रूप से छात्रों और किशोरों से सुरक्षा दिशानिदेर्शों को समझने और उनका पालन करने का आग्रह करता है, इस बात पर जोर देते हुए कि जीवन एक पोस्ट से अधिक मूल्यवान है। जनता को सलाह दी जाती है कि वे फोटोग्राफी सहित किसी भी कारण से रेलवे पटरियों पर कभी न जाएं, क्योंकि ट्रेनें तेजी से चलती हैं और देखी गई दूरी से अधिक तेजी से गुजरती हैं।

लोगों को खतरनाक स्टंट करने से बचना चाहिए जैसे कि चलती ट्रेन से झुकना, फुटबोर्ड पर सवारी करना, या वीडियो बनाने के लिए छत या इंजन पर चढ़ना, क्योंकि इस तरह की कार्रवाइयों के परिणामस्वरूप हाई-वोल्टेज ओवरहेड इलेक्ट्रिक (ओएचई) लाइनों के साथ घातक संपर्क हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को प्लेटफॉर्म के किनारे से सुरक्षित दूरी बनाकर सुरक्षा क्षेत्रों का सम्मान करना चाहिए, खासकर जब कोई ट्रेन आ रही हो या गुजर रही हो। चलती ट्रेन से चढ़ना या उतरना भी एक दंडनीय अपराध है। माता-पिता और शिक्षकों से आग्रह किया जाता है कि वे युवाओं को खतरनाक ट्रेन स्टंट के माध्यम से सोशल मीडिया का ध्यान आकर्षित करने के वास्तविक जोखिमों और कठोर कानूनी परिणामों के बारे में सलाह दें। रेलवे ने माता-पिता और शिक्षकों से भी आग्रह किया है कि वे बच्चों को इस बारे में जागरूक करें-कि उन्हें ऑनलाइन ख्याति के लिए रेलवे स्टंट करके अपना जीवन बर्बाद नहीं करना चाहिए। आगे दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं को रोकने के लिए, पूर्व तट रेलवे सार्वजनिक घोषणाओं, डिजिटल मीडिया संदेशों और भौतिक गश्त के माध्यम से अपने जागरूकता अभियानों को तेज कर रहा है। रेलवे सभी से सोशल मीडिया स्टंट पर सुरक्षा को प्राथमिकता देने का आग्रह करता है।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची, झारखंड से मुद्रित। **संस्थापक प्रधान संपादक :** स्व. हरिनारायण सिंह, **संपादक :** राकेश सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**